इटली की लोक कथाऐं–6

अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title : Italy Ki Lok Kathayen-6 (Folktales of Italy-6)
Cover Page picture: Roman Forum, Rome, Italy
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाएं 5
इटली की लोक कथाएं–6 7
1 एक पत्नी जो हवा पर ज़िन्दा थी........ 9
2 वर्मवुड 19
3 स्पेन का राजा और अंग्रेज मीलौर्ड........ 37
4 रत्न जड़ा जूता........ 57
5 लॅगड़ा शैतान........ 70
6 तीन व्यापारियों के तीन बेटों की तीन कहानियॉ........ 78
7 फाख्ता लड़की 89
8 जीसस और सेन्ट पीटर सिसिली में........ 100
9 नाई की घड़ी........ 114
10 एक रानी और एक डाकू की शादी........ 118
11 सात मेमनों के सिर 129
12 दो समुद्री सौदागर........ 135
13 एक नाव जिसमें... 151
14 मुर्गीखाने में राजा का बेटा........ 167
15 एक शानदार राजकुमारी 180
16 जानवरों की बातें और उत्सुक पत्नी 195
17 सुनहरों सींगों वाला बछड़ा 205
18 कप्तान और जनरल........ 213

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोक कथाऐं–6

इटली देश यूरोप महाद्वीप के दक्षिण पश्चिम की तरफ भूमध्य सागर के उत्तरी तट पर स्थित है। पुराने समय में यह एक बहुत ही शक्तिशाली राज्य था। रोमन साम्राज्य अपने समय का एक बहुत ही मशहूर राज्य रहा है। उसकी सभ्यता भी बहुत पुरानी है – करीब 3000 साल पुरानी। इसका रोम शहर 753 बी सी में बसाया हुआ बताया जाता है पर यह इटली की राजधानी 1871 में बना था। इटली में कुछ शहर बहुत मशहूर हैं – रोम, पिसा, फ्लोरैन्स, वेनिस आदि। यहाँ की टाइबर नदी बहुत मशहूर है। यूरोप में लोग केवल लन्दन, पेरिस और रोम शहर ही घूमने जाते हैं।

रोम में रोम का कोलोज़ियम और वैटिकन सिटी में वहाँ का अजायबघर सबसे ज़्यादा देखे जाते हैं। पिसा में पिसा की झुकती हुई मीनार संसार के आदमी द्वारा बनाये गये आठ आश्चर्यों में से एक है। इटली का वेनिस शहर नहरों में बसा हुआ एक शहर[1] है। इस शहर में अधिकतर लोग इधर से उधर केवल नावों से ही आते जाते हैं। यहाँ कोई कार नहीं है कोई सड़क पर चलने वाला यातायात का साधन नहीं है, केवल नावें हैं और नहरें हैं। शायद तुम्हें मालूम नहीं होगा कि असल में वेनिस शहर कोई शहर नहीं है बल्कि 118 द्वीपों को पुलों से जोड़ कर बनाया गया जमीन का एक टुकड़ा है इसलिये ये नहरें भी नहरें नहीं हैं बल्कि समुद्र का पानी है और वह समुद्र का पानी नहर में बहता जैसा लगता है।

इटली का रोम कैसे बसा? कहते हैं कि रोम को बसाने वाला वहाँ का पहला राजा रोमुलस था। रोमुलस और रेमस दो जुड़वाँ भाई थे जो एक मादा भेड़िया का दूध पी कर बड़े हुए थे। दोनों ने मिल कर एक शहर बसाने का विचार किया पर बाद में एक बहस में रोमुलस ने रेमस को मार दिया और उसने खुद राजा बन कर 7 अप्रैल 753 बीसी को रोम की स्थापना की। इटली के रोम शहर में संसार का मशहूर सबसे बड़ा कोलोज़ियम[2] है जहाँ 5000 लोग बैठ सकते हैं। पुराने समय में यहाँ लोगों को सजाऐं दी जाती थीं।

इटली के अन्दर वैटीकन सिटी है जो ईसाई धर्म के कैथोलिक लोगों का घर है पर यह एक अपना अलग ही देश है। वहाँ इसके अपने सिक्के और नोट हैं। इसकी अपनी सेना है। पोप इस देश का राजा है। इसका अजायबघर बहुत मशहूर है। यह संसार का सबसे छोटा देश है क्षेत्र में भी और जनसंख्या में भी – 842 आदमी केवल 4 वर्ग मील के क्षेत्र में बसे हुए।

इटली की बहुत सारी लोक कथाऐं हैं। इटली की सबसे पहली लोक कथाऐं 1353 में लिखी गयी थीं दूसरी 1550 में और तीसरी 1634 में लिखी गयी थी।[3] इतालो कैलवीनो[4] का लोक कथाओं का यह संग्रह जिसमें से हमने ये लोक कथाऐं ली हैं इटैलियन भाषा में 1956 में संकलित कर के प्रकाशित किया गया था। इनका सबसे पहला अंग्रेजी अनुवाद 1962 में छापा गया। उसके बाद सिलविया मल्कही[5] ने इनका अंग्रेजी अनुवाद 1975 में प्रकाशित किया। फिर मार्टिन ने इनका अंग्रेजी अनुवाद 1980 में किया। ये लोक कथाएँ हम मार्टिन की पुस्तक से ले कर अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये यहाँ हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगी।

---

[1] City of Canals

[2] Colosseum

[3] There are three the earliest, main and very famous books from Italy – Decamerone (1353 – first translation by John Payne published in 1886), Nights of Straparola (1550), Pentamerone (1634),

[4] "Italian Folktales" by Italo Calvino, 1965. This book was translated by George Martin. San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. 300 p.

[5] Sylvia Mulcahy

इतालो ने इस पुस्तक में **200** लोक कथाऐं संकलित की हैं। हमने उन दो सौ लोक कथाओं में से एक सौ पच्चीस लोक कथाऐं चुनी हैं। फिर भी क्योंकि वे बहुत सारी लोक कथाऐं हैं इसलिये वे सब पढ़ने की आसानी के लिये एक ही पुस्तक में नहीं दी जा रही हैं। ये सब लोक कथाऐं पुस्तक में लिखी हुए क्रम से ही यहाँ दी गयीं हैं। इस पुस्तक के पहले संकलन यानी "इटली की लोक कथाऐं–**1**"[6] में इतालो की पुस्तक की **1–23** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी गयी थीं।

इसके दूसरे भाग "इटली की लोक कथाऐं–**2**" में **24–55** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी गयी थीं। [7] इटली की लोक कथाओं के तीसरे भाग – "इटली की लोक कथाऐं–**3**" में **56–81** नम्बर तक की ग्यारह लोक कथाऐं प्रकाशित की थीं।[8] इस संकलन की अगली कड़ी "इटली की लोक कथाऐं–**4**" में हमने **82–130** नम्बर तक की बाईस कथाऐं दी थीं।[9] इसके पाँचवें भाग – "इटली की लोक कथाऐं–**5**" में हमने **124–155** नम्बर तक की सोलह कहानियाँ प्रकाशित की थीं। [10] अब इसके छठे भाग में – "इटली की लोक कथााऐं–**6**" इस पुस्तक के **156–179** नम्बर तक की अठारह कहानियाँ प्रकाशित की जा रही हैं।[11]

हमें आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि यह छठा भाग भी तुम लोगों को पहले पाँच भागों की तरह ही बहुत पसन्द आयेगा और मजेदार लगेगा।

---

[6] "Italy Ki Lok Kathayen-1" – 20 folktales (No 1-21), by Sushma Gupta in Hindi languge
[7] "Italy Ki Lok Kathayen-2" – 20 folktales (No 24-55), by Sushma Gupta in Hindi language
[8] "Italy Ki Lok Kathayen-3" – 11 folktales (No 56-81), by Sushma Gupta in Hindi language
[9] "Italy Ki Lok Kathayen-4" – 22 folktales (No 82-130), by Sushma Gupta in Hindi language
[10] "Italy Ki Lok Kathayen-5" – 16 folktales (No 124-149) by Sushma Gupta in Hindi language
[11] "Italy Ki Lok Kathayen-6" – 18 folktales (No 150-164) by Sushma Gupta in Hindi language

1 एक पत्नी जो हवा पर ज़िन्दा थी[12]

मसीना[13] में एक राजकुमार रहता था जो जितना अमीर था उतना ही कंजूस भी था। वह दिन में केवल दो बार ही खाना खाता था।

उसके उस खाने में डबल रोटी का एक टुकड़ा होता था, एक सलामी[14] होती थी जो इतनी पतली होती थी जैसे पापड़ और एक गिलास पानी होता था।

उसके पास केवल एक नौकर था जिसको वह केवल दो पैंस[15], एक अंडा और एक टुकड़ा डबल रोटी का रोज दिया करता था। इस तरह इतनी मजदूरी पर उसके पास कोई भी नौकर एक हफ्ते से ज़्यादा नहीं टिकता था। वे कुछ दिन काम कर के ही उसके पास से भाग जाते थे।

एक बार उसने एक ऐसा नौकर रखा जो बहुत ही शैतान किस्म का आदमी था। वह आदमी इतना शैतान था कि उसका मालिक चाहे जितना भी चालाक क्यों न हो वह उसके पैर से उसके जूते मोजे भी चुरा सकता था। इसका नाम था मास्टर जोसेफ़[16]।

---

[12] The Wife Who Lived on Wind. Tale No 156 – a folktale from Italy from its Palermo area.

[13] Messina is a portal city on Sicily Island of Italy in Europe.

[14] Salami is a type of cured sausage consisting of fermented and air-dried meat, typically beef or pork. Historically, salami was popular among Southern and Central European peasants because it can be stored at room temperature for up to 40 days once cut. See its picture above.

[15] Pence – the currency of Italy in those days

[16] Master Joseph

सो राजकुमार ने जब इस आदमी को अपने यहाँ काम पर रखा और उस आदमी ने वहाँ आ कर देखा कि वहाँ क्या क्या हो रहा था तो वह एक कोयला बेचने वाली के पास गया।

इस कोयला बेचने वाली की दूकान महल के बराबर में ही थी। यह कोयला बेचने वाली एक अमीर औरत थी और इसके एक सुन्दर सी बेटी थी।

उसके पास जा कर उसने उससे पूछा — "मैम, क्या आप अपनी बेटी की शादी करना चाहेंगी?"

उस औरत ने जवाब दिया — "देखो भगवान ने चाहा तो वह कोई अच्छा सा लड़का उसके लिये भेजेगा, मास्टर जोसेफ़। तभी मैं उसकी शादी करूँगी।"

मास्टर जोसेफ़ बोला — "राजकुमार के बारे में आपका क्या ख्याल है?"

"क्या? राजकुमार? क्या तुम नहीं जानते कि वह कितना कंजूस है। वह तो इतना कंजूस है कि एक पैनी खर्च करने के लिये किसी की एक आँख भी ले लेगा।"

मास्टर जोसेफ़ बोला — "मैम, मेरी सलाह मानिये और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह शादी हो जायेगी। आपको बस यही कहना है कि आपकी बेटी केवल हवा खा कर ही ज़िन्दा रहती है।"

कह कर मास्टर जोसेफ़ वहॉ से चला गया और राजकुमार के पास पहॅुचा और उससे बोला — "सरकार आप शादी क्यों नहीं करते? आप बड़े हो रहे हैं और जो समय निकल जाता है वह वापस तो आता नहीं।"

राजकुमार बोला — "ओह, तुम क्या मेरी मौत चाहते हो? क्या तुम नहीं जानते कि एक पत्नी को रखने में कितना पैसा खर्च होता है? पत्नी रखने से पैसा हाथ से पानी की तरह से निकलता चला जाता है।

उसके लिये टोप खरीदो, सिल्क की पोशाकें खरीदो, शाल खरीदो, गाड़ियॉ रखो, उसको नाटक दिखाने ले जाओ आदि आदि। नहीं नहीं जोसेफ़। यह सब कुछ नहीं। मैं यह सब नहीं कर सकता।"

"पर, योर मैजेस्टी, क्या आपने कोयला बेचने वाली की लड़की के बारे में सुना है? वह सुन्दर लड़की तो केवल हवा खा कर ही ज़िन्दा रहती है। इसके अलावा उसके पास अपना भी बहुत पैसा है और वह किसी भी तरह के आराम, पार्टियॉ और नाटकों की भी कोई परवाह नहीं करती।"

"ओह क्या तुम सच कह रहे हो? पर कोई भला केवल हवा पर ज़िन्दा कैसे रह सकता है मास्टर जोसेफ़?"

मास्टर जोसेफ़ बोला — “सरकार, दिन में तीन बार वह अपना पंखा उठाती है और अपनी तरफ झलती है और उसी से उसकी भूख मिट जाती है। पर अगर आप उसके भरे हुए चेहरे की तरफ देखें तो आपको लगेगा कि वह वह तो बहुत सारा मॉस खाती है पर ऐसा नहीं है।”

“तो तुम मेरे लिये उसको देखने का इन्तजाम करो।”

मास्टर जोसेफ़ ने तुरन्त ही हर तरह का इन्तजाम कर दिया और एक हफ्ते के अन्दर अन्दर दोनों की शादी हो गयी। इस तरह से एक कोयला बेचने वाली एक राजकुमारी बन गयी।

वह हर रोज खाने की मेज पर जाती, अपना पंखा झलती और वहॉ से बिना खाना खाये उठ आती। उधर राजकुमार उसकी तरफ खुशी से देखता कि राजकुमारी तो वाकई हवा पर ज़िन्दा थी।

पर ऐसा नहीं था। बाद में राजकुमारी की मॉ छिप कर उसके लिये भुना मुर्गा और कटलेट ले कर आती और वह और उसके नौकर उनको चटखारे ले ले कर खाते।

इस तरह से एक महीना बीत गया। अब कोयला बेचने वाली ने शिकायत करना शुरू किया कि कब तक वह इतना भारी खर्चा उठाती रहेगी। “कब तक मैं इस तरह से अपनी बेटी को खिलाती रहूँगी। उस बेवकूफ राजकुमार को भी तो इसमें कुछ पैसा देना चाहिये।”

सो एक दिन मास्टर जोसेफ़ ने राजकुमारी से कहा — "सुनो मेरी प्यारी[17], अब तुम्हें करना यह है कि एक दिन तुम राजकुमार से यह कहो कि बस अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिये तुम उसकी सम्पत्ति देखना चाहती हो।

अगर वह यह कहे कि वह इस बात से डरता है कि उसके सोने के कुछ टुकड़े तुम्हारे जूतों में चिपक जायेंगे तो उसको कहना कि तुम उसके खजाने में नंगे पैर जाने के लिये तैयार हो।"

राजकुमारी ने राजकुमार से जब यह कहा तो उसने अपना चेहरा कुछ गुस्से वाला सा बना लिया। राजकुमारी ने उससे बहुत जिद की कि वह उसको अपना खजाना कम से कम दिखा तो दे पर वह उसको उसका खजाना दिखाने पर न मना सकी।

पर जब उसने उससे यह कहा कि वह उसका खजाना नंगे पैर देखने भी जा सकती थी तब कहीं जा कर वह उसको अपना खजाना दिखाने पर राजी हुआ।

अब मास्टर जोसेफ़ राजकुमारी से बोला — "जब तुम उसका खजाना देखने जाओ तो अपनी लम्बी स्कर्ट के सारे किनारे पर गोंद लगा लेना।" राजकुमारी ने ऐसा ही किया।

राजकुमार राजकुमारी को अपना खजाना दिखाने ले गया। उसने फर्श पर लगे हुए तख्तों में से एक तख्ता हटाया और एक चोर

[17] In public he used to call her "Princess" but in private he used to call her "My Girl".

दरवाजा खोला। वहाँ से नीचे की तरफ सीढ़ियाँ जाती थीं। उसने राजकुमारी को उन सीढ़ियों से नीचे उतरने के लिये कहा।

नीचे जा कर तो राजकुमारी आश्चर्यचकित रह गयी जब उसने वहाँ सोने के डबलून्स[18] के ढेर के ढेर देखे। उस समय दुनियाँ का कोई भी राजा उसके राजकुमार पति से आधा अमीर भी नहीं था। उसके मुँह से तो आह और ऊह निकल गयी और इस आह ऊह में उसने अपने स्कर्ट को चारों तरफ हिला दिया।

इससे उसके स्कर्ट के घेरे में दर्जनों डबलून्स चिपक गये। जब वह वहाँ से लौटी तो उसने अपने स्कर्ट में से वे डबलून्स निकाल लिये। वह एक छोटा सा डबलून्स का ढेर था जो मास्टर जोसेफ़ उसकी माँ को दे आया।

इस तरह वे लोग वहाँ से वे सिक्के निकालते रहे जबकि राजकुमार राजकुमारी को मेज पर पंखा झलते देखता रहा और उस हवा से उसका पेट भरते देखता रहा। वह बहुत खुश था कि उसकी पत्नी हवा पर ज़िन्दा थी।

एक दिन जब राजकुमार राजकुमारी के साथ बाहर घूमने गया हुआ था तो रास्ते में उसे अपना एक भतीजा मिला जिसको उसने शायद ही कभी देखा हो।

---

[18] Doubloon means "double". Special gold coins. Means 2-escudo or 32 real gold coins (of 6.77 gms each). Doubloons were minted in Spain, Mexico, Peru and New Granada. The term was first used to describe the golden excellents either because of its value of two ducats or because of the double portrait of Ferdinand and Isabella

उसने उस नौजवान से कहा — "पिप्पिनू, क्या तुम इस लड़की को जानते हो? यह राजकुमारी है।"

वह नौजवान बोला — "अरे चाचा जी, मुझे नहीं मालूम था कि आपने शादी कर ली है।"

"अरे तुमको पता नहीं था? चलो अब तो तुमको पता चल गया। अगले हफ्ते तुम हमारे साथ खाना खाने के लिये आना।"

जब राजकुमार ने उसको खाने के लिये बुला लिया तब उसने सोचा कि अरे उसने उस नौजवान को खाना खाने के लिये क्यों बुला लिया। अब इस बात को जानने का तो कोई तरीका नहीं था कि उसको खाना खिलाने में कितना खर्चा होगा। "मैंने उसको खाने पर क्यों बुलाया? मैं भी कितना बेवकूफ हूँ।"

पर अब तो कुछ हो नहीं सकता था। उसको उसके लिये खाने का इन्तजाम तो करना ही था।

राजकुमार को एक विचार आया। उसने राजकुमारी से कहा — "तुम्हें मालूम है राजकुमारी? मॉस तो बहुत मॅहगा है। और अगर हम उसे खरीदेंगे तो हम तो बहुत गरीब हो जायेंगे।

सो बजाय मॉस खरीदने के मैं शिकार के लिये जाता हूँ और वहॉ से कुछ मॉस ले कर आता हूँ। मैं अपनी बन्दूक ले जाता हूँ और पॉच छह दिन बाद मैं बिना एक सैन्ट खर्च किये बहुत सारा शिकार ले कर आता हूँ।"

राजकुमारी बोली — “ठीक है राजकुमार। पर जल्दी आना।”

जैसे ही राजकुमार शिकार पर गया राजकुमारी ने मास्टर जोसेफ़ से एक ताला खोलने वाले को बुलाने के लिये कहा।

जब वह आ गया तो उसने ताला खोलने वाले से कहा कि वह उसको तभी तभी एक ऐसी चाभी बना कर दे जो उस चोर दरवाजे को खोल सके क्योंकि उसकी अपनी चाभी खो गयी थी और अब वह इस दरवाजे को खोल नहीं सकती थी।

तुरन्त ही उस ताला खोलने वाले ने एक चाभी बना दी जिससे उस चोर दरवाजे का ताला खुल गया। राजकुमारी नीचे गयी और डबलून्स के कुछ थैले ले कर वापस लौटी।

उस पैसे से उसने सब कमरों में चारों तरफ टैपेस्ट्री के परदे लगवाये। उन सब कमरों के लिये फर्नीचर, झाड़फानूस, शीशे, कालीन और वे सब चीज़ें खरीदीं जिनकी उन कमरों में जरूरत थी।

उसने एक चौकीदार भी लगाया जिसको उसने सिर से पैर तक सजा दिया। उसने उसको एक डंडा भी दिया जिसकी मूठ सोने की बनी थी।

राजकुमार जब शिकार से वापस आया तो अपने ही महल को पहचान नहीं सका।

उसने पूछा — “यह सब क्या है? और मेरा घर कहॉ है?”

उसने अपनी ऑखें मलीं और चारों तरफ देखा और फिर बोला — "कहॉ गया?" और यह कह कर वह चारों तरफ घूम घूम कर देखता रहा।

चौकीदार बोला — "सरकार, आप यहॉ क्या ढूँढ रहे हैं? आप अन्दर जाइये न। यह आप ही का घर है।"

राजकुमार बोला — "क्या यह मेरा ही घर है?"

"अगर यह आपका घर नहीं है तो फिर किसका घर है? अन्दर चलिये न सरकार।"

राजकुमार अपने सिर पर हाथ मारता हुआ बोला — "ओह मेरे भगवान। लगता है कि मेरा तो सारा पैसा इन चीज़ों को खरीदने में ही चला गया। उफ़ यह राजकुमारी।"

वह घर में घुसा तो उसको सफेद संगमरमर की सीढ़ियॉ दिखायी दीं दीवारों पर टैपेस्ट्री दिखायी दी तो वह फिर बोला — "ओह मेरा तो सारा पैसा गया। ओह।"

फिर उसने शीशे देखे, तस्वीरें देखीं, सोफा और दीवान देखे तो वह एक बार फिर दुखी हो गया। मेरा तो सारा पैसा गया। वह अपने सोने वाले कमरे में गया और जा कर पलंग पर लेट गया।

तभी उसकी पत्नी आयी और उसने उससे पूछा — "राजकुमार क्या बात है?"

"ओह मेरे भगवान। मेरा तो हर सैन्ट गया।"

उसकी पत्नी ने तुरन्त ही एक नोटरी[19] और चार गवाहों को बुलवा भेजा। नोटरी आया तो उसने राजकुमार से पूछा — "राजकुमार, क्या बात है? क्या आपको अपनी वसीयत लिखवानी है?"

"मेरा सारा पैसा... मेरी पत्नी... ।"

"क्या? फिर से कहिये।"

"मेरा सारा पैसा... मेरी पत्नी... ।"

"क्या आप अपना सारा पैसा अपनी पत्नी के नाम करना चाहते हो? हॉ मैं समझ सकता हूॅ। क्या यह इस तरह से ठीक है?"

"मेरा सारा पैसा... मेरी पत्नी... ।"

जैसे जैसे नोटरी यह लिख रहा था कि राजकुमार ने एक दो बार गहरी सॉस ली और उसका दम निकल गया।

अब राजकुमारी राजकुमार की सम्पत्ति की अकेली वारिस थी। जब उसका दुख का समय बीत गया तो उसने मास्टर जोसेफ़ से शादी कर ली।

तो आखीर में उस कंजूस की सम्पत्ति किसको मिली? उस चाल खेलने वाले मास्टर जोसेफ़ को न।

[19] A notary public of the common law is a public officer constituted by law to serve the public in non-contentious matters usually concerned with estates, deeds, powers-of-attorney, and foreign and international business. A notary's main functions are to administer oaths and affirmations, take affidavits and statutory declarations, witnesses and authenticate the execution of certain classes of documents, take acknowledgements of deeds and other conveyances, protest notes and bills of exchange, provide notice of foreign drafts, prepare marine or ship's protests in cases of damage.

2 वर्मवुड[20]

यह कहानी बहुत बार कही गयी है पर आज हम इसे एक बार फिर लिख रहे हैं। यह कहानी कुछ ऐसे है कि एक बार एक राजा और रानी थे। पर इस राजा और रानी के महल में जब भी रानी किसी बच्चे को जन्म देती तो वह एक लड़की को ही जन्म देती।

राजा को एक बेटे की जरूरत थी जो उसके बाद उसका राज्य सँभाल सकता। जब राजा का धीरज छूट गया तो उसने रानी से कहा — "रानी जी बस अब बहुत हो गया। अगर तुमने अब एक और लड़की को जन्म दिया तो मैं उसको मार दूँगा।"

और जैसा कि रानी को डर था इस बार उसने फिर से एक लड़की को जन्म दिया पर उसकी यह लड़की बहुत सुन्दर थी। कहीं राजा उसको मार न दे इसलिये उसने उसकी गौडमदर[21] से कहा — "इस बच्ची को तुम ले लो और जैसे तुम चाहो इसको वैसे रखो नहीं तो राजा इसको मार देंगे।"

---

[20] Wormwood. Tale No 157. A folktale from Italy from its Palermo area.
Wormwood is a kind of bitter bush plant.

[21] A godmother is a female godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents.

गौडमदर ने उस बच्ची को ले तो लिया पर वह यही सोचती रही कि वह उसका क्या करे। फिर वह उसको खेतों में ले गयी और उसको एक वर्मवुड[22] की झाड़ी के नीचे रख दिया।

उन्हीं खेतों के पास एक साधु रहता था। उसकी गुफा में एक हिरनी रहती थी जिसके कुछ छोटे छोटे छौने[23] थे जिनको वह दूध पिलाती थी।

वह हिरनी खाना खाने के लिये रोज बाहर जाती थी। एक दिन जब वह बाहर से खाना खा कर लौटी तो उसके बच्चों ने उसका दूध पीने की कोशिश की पर उसके थन खाली थे। उनमें दूध नहीं था सो उसके बच्चे भूखे रह गये।

उसके अगले दिन भी यही हुआ और उसके अगले दिन भी और उसके अगले दिन भी। इस तरह से उसके अपने बच्चे भूख से कमजोर होने लगे।

साधु ने जब यह देखा तो उसको उस हिरनी के बच्चों पर बहुत दया आयी सो वह उस हिरनी के साथ यह देखने के लिये बाहर गया कि हिरनी के दूध का क्या होता है। जब वह गया तो उसको पता चला कि वह एक वर्मवुड की झाड़ी की तरफ जाती है और एक बच्ची को अपना दूध पिलाती है।

---

[22] Wormwood is a kind of woody plant, grown as bush, bitter in taste, native to Eurasia. It is used in medicine but at some places it is used as tea also. See its picture above.

[23] Translated for the word "Fawns" – means the children of a deer.

साधु ने उस बच्ची को उठा लिया और उसे अपनी गुफा में ले आया। उसने हिरनी से कहा — "लो अब तुम इस बच्ची को अपना दूध यहाँ पिलाओ और अपने दूध को अपने बच्चों और इस बच्ची दोनों में बाँटो।"

बच्ची धीरे धीरे बड़ी होती गयी। जैसे जैसे वह बड़ी होती गयी वह बहुत सुन्दर और प्यारी होती गयी। वह उस साधु के घर का काम करती और साधु भी उसको इतना प्यार करता जैसे वह उसकी अपनी बेटी हो। उसने उस बच्ची का नाम भी वर्मवुड की झाड़ी के नाम पर वर्मवुड ही रख दिया।

एक दिन एक और राजा शिकार खेलते खेलते उधर आ निकला। बीच में ही बहुत ज़ोर का तूफान आ गया। बहुत तेज़ हवा चलने लगी, बिजली चमकने लगी और गरज के साथ बहुत तेज़ बारिश होने लगी।

उस तूफान से बचने के लिये उस समय उसको केवल साधु की गुफा ही दिखायी दी सो वह उस साधु की गुफा में चला गया। एक राजा को भीगे हुए अपनी गुफा में आते देख कर साधु ने आवाज लगायी — "वर्मवुड, वर्मवुड। राजा के बैठने के लिये एक कुर्सी ले कर आ।"

"वर्मवुड? अरे साधु, यह किस तरह का नाम है?"

तब साधु ने उसको उस बच्ची के वर्मवुड की झाड़ी में पाने और उस झाड़ी के नाम पर उसका नाम रखने के बारे में बता दिया।

जैसे ही राजा ने उस लड़की को देखा तो राजा बोला — "ओ साधु, क्या तुम मुझे इस लड़की को मेरे महल ले जाने की इजाज़त दोगे? तुम तो अब बूढ़े हो रहे हो। तुम्हारे बाद यह लड़की अकेली रह जायेगी तब यह कैसे करेगी? मैं उसको पढ़ाने के लिये टीचर रखूँगा उसको पढ़ना लिखना सिखाऊँगा।"

साधु बोला — "मैजेस्टी। मैं इस बच्ची को बहुत प्यार करता हूँ सो इसकी खुशी के लिये मैं इसको आपको महल में ले जाने की इजाज़त देता हूँ। जो शिक्षा आप इसको देंगे वह मेरे जैसे साधु के लिये तो इसको देना बिल्कुल ही नामुमकिन है।"

राजा ने उस लड़की को अपने साथ अपने घोड़े पर बिठाया और अपने महल चल दिया। महल पहुँच कर उसने उसको दो स्त्रियों के हवाले कर दिया।

जब राजा को उस लड़की के गुणों का पता चला तो उसने सोचा कि वह खुद ही उससे शादी कर के उसको अपनी रानी बना लेगा। सो उसने वर्मवुड से शादी कर ली और इस तरह से वर्मवुड उस राज्य की रानी बन गयी। राजा उससे पागलपन की हद तक प्यार करता था।

एक दिन राजा को कहीं बाहर जाना था सो उसने रानी से कहा — "वर्मवुड, मुझे कहीं जाना है। पर मुझे चाहे कितनी भी कम देर के लिये जाना पड़े फिर भी मुझे तुमको यहाँ अकेले छोड़ने में बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता पर क्या करूँ।"

कह कर राजा वहाँ से चला गया। एक शाम राजा को अपने राज्य के बाहर कुछ राजकुमार और नाइट्स[24] मिल गये। वहाँ सबने संग साथ में अपनी अपनी पत्नियों की तारीफ करनी शुरू की।

राजा बोला — "करते रहो, तुम लोग जितनी चाहो अपनी अपनी पत्नियों की तारीफ करते रहो पर तुममें से किसी की भी पत्नी मेरी पत्नी जैसी नहीं हो सकती।"

यह सुन कर एक नाइट बोला — "मैजेस्टी, मैं शर्त लगाता हूँ कि मैं अगर आपकी गैरहाजिरी में पलेरमो गया तो मैं आपकी पत्नी साथ कुछ समय गुजार कर जरूर आऊँगा।"

राजा बोला — "नामुमकिन, यह नामुमकिन है।"

नाइट बोला — "क्या हम इस बात पर शर्त लगा लें?"

राजा बोला — "हाँ हाँ, लगा लेते हैं।"

उन्होंने जायदाद पर शर्त लगायी। उन्होंने एक समय भी निश्चित किया – एक महीना। और वह नाइट पलेरमो चला गया।

पलेरमो पहुँच कर वह सुबह शाम राजा के महल की खिड़की के नीचे चक्कर काटने लगा। दिन निकलते चले गये पर उसको रानी की एक झलक भी देखने को नहीं मिली। महल की खिड़की हमेशा बन्द ही रहती थी।

[24] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

एक दिन जब वह वहाँ बहुत ही नाउम्मीदी से घूम रहा था तो वहाँ एक बुढ़िया आयी और उससे भीख माँगने लगी। गुस्से में उसने कहा — "चली जा यहाँ से। मुझे तंग न कर।"

बुढ़िया बोली — "सरकार, आप इतना क्यों परेशान है? क्या चीज़ आपको इतना उदास कर रही है?"

इस पर नाइट ने उसको अपनी शर्त के बारे में बता दिया और कहा कि वह महल में अन्दर जाना चाहता था ताकि वह यह देख सके कि रानी कैसी दिखायी देती थी।

बुढ़िया बोली — "आप शान्त हो जायें सरकार, मैं देखती हूँ कि क्या करना है।"

कह कर उस बुढ़िया ने एक टोकरी में अंडे और फल भरे और उनको ले कर महल की तरफ चली। महल के दरवाजे पर जा कर उसने रानी से मुलाकात की इच्छा जाहिर की। उसको इजाज़त मिल गयी।

जब वह रानी के साथ अकेली थी तो उसने रानी को गले लगाया और उसके कान में फुसफुसायी — "मेरी बेटी, तुम मुझे नहीं जानती पर मैं तुम्हारी एक रिश्तेदार हूँ। और मुझे बहुत खुशी है कि मैं तुम्हारे लिये ये कुछ चीज़ें ला सकी।"

रानी को अपने किसी रिश्तेदार के बारे में बिल्कुल पता नहीं था। उसने सोचा शायद यह बुढ़िया उसकी कोई रिश्तेदार रही होगी।

उसने उसके ऊपर विश्वास कर लिया और उसको महल में रहने के लिये बुला लिया। उसने सबको उसकी इज़्ज़त करने के लिये भी कह दिया।

अब रानी के कमरे में वह कभी भी आ जा सकती थी और महल में कहीं भी कुछ भी कर सकती थी।

एक दिन जब रानी सो रही थी तो वह बुढ़िया रानी के कमरे में घुसी। उसके बिस्तर के पास पहुँची और उसकी चादर के नीचे झाँका तो उसने देखा कि उसकी नंगी कमर पर एक मस्सा[25] था।

उसने बड़ी सावधानी से कैंची से उसके मस्से के कुछ बाल काट लिये और वहाँ से चल दी। वह अपने काम से बहुत खुश और सन्तुष्ट थी।

वे बाल ला कर उसने नाइट को दे दिये। जब नाइट के हाथ में रानी के मस्से के बाल आ गये और उसने उस बुढ़िया के मुँह से रानी का वर्णन सुन लिया तो उसने उस बुढ़िया को इनाम में बहुत सारे पैसे दिये और वहाँ से तुरन्त ही चल दिया।

निश्चित दिन पर वह राजा और दूसरे नाइट्स के पास पहुँचा। वे सब लोग यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थे कि शर्त कौन जीतेगा।

वहाँ पहुँच कर वह नाइट बोला — "योर मैजेस्टी, जो मैं अब आपसे कहने जा रहा हूँ मुझे उसके लिये बहुत अफसोस है। पर

[25] Translated for the word "Mole"

अब आप यह बताऐं कि यह सच है या नहीं – आपकी पत्नी ऐसी है कि नहीं. . . ।" और उसने उसके चेहरे का बहुत ही थोड़ा सा वर्णन दे दिया।

राजा बोला — "यह बिल्कुल ठीक है। पर इससे तो कुछ साबित नहीं होता क्योंकि यह सब तो तुम बिना उसको देखे किसी से सुन कर भी बता सकते हो।"

"तो मैजेस्टी फिर आप ध्यान से सुनें। यह सच है या नहीं कि आपकी पत्नी बॉये कन्धे पर एक मस्सा है?"

यह सुन कर राजा तो पीला पड़ गया। वह बोला — "हॉ है तो।"

तब उस नाइट ने एक लाकेट निकाला और कहा — "मैजेस्टी, मुझे यह कहते में अच्छा तो नहीं लग रहा पर यह लाकेट यह साबित करता है कि मैं यह शर्त जीत गया।" कॉपते हाथों से उसने वह लाकेट खोला और उसमें से रानी के मस्से के बाल निकाले और राजा को दिखाये। उन बालों को देख कर तो राजा का सिर लटक गया।

तुरन्त ही राजा अपने महल लौटा। काफी दिनों की गैरहाजिरी के बाद में जब राजा घर आया तो वर्मवुड हॅसती हुई उससे मिलने आयी पर राजा ने न तो उसे गले लगाया और न ही उससे बात की।

उसने अपने नौकरों से अपनी घोड़ा गाड़ी तैयार करने के लिये कहा और फिर अपनी पत्नी से कहा "चलो बैठो इसमें।" रानी उसमें

बैठ गयी उसके बाद राजा भी उसके बराबर में बैठ गया और गाड़ी की रास[26] अपने हाथ में ले ली।

रानी ने आश्चर्य से राजा की तरफ देखा भी कि आज राजा उसके साथ इस तरह से क्यों बर्ताव कर रहा था पर राजा तो बिल्कुल चुपचाप बैठा था।

जब वे लोग पैलैग्रिनो पहाड़[27] की तलहटी में पहुँचे तो राजा ने घोड़ों की रास खींची, गाड़ी रोकी और रानी से कहा "उतरो।" रानी बेचारी उतर गयी।

राजा ने गाड़ी से बिना उतरे उसको एक कोड़ा मारा जिससे वह गिर पड़ी। उसको वहीं उसी हालत में छोड़ कर वह वहाँ से चला गया।

इत्तफाक से उस दिन एक डाक्टर और उसकी पत्नी उधर से सेन्ट रोज़ैली के मन्दिर[28] जा रहे थे। उन्होंने अपने बेटे के जन्म से पहले एक मन्नत मानी थी वे उसी को पूरा करने के लिये वहाँ जा रहे थे। उनके पीछे उनका एक नौकर अली उनके उस बेटे को ले कर आ रहा था।

जब वे पैलैग्रिनो पहाड़ की तलहटी के पास पहुँचे तो उन्होंने किसी के कराहने की आवाज सुनी। डाक्टर ने सोचा "यहाँ इस सूनी

[26] Translated from the word "Reins"
[27] Pellegrino Mountain
[28] The Sanctuary of St Rosali

जगह में यह कौन हो सकता है।" सो वह उसी तरफ चल दिया जिधर से वह कराहने की आवाज आ रही थी।

वहाँ जा कर उसने देखा कि वहाँ तो एक घायल और अधमरी स्त्री पड़ी हुई है। डाक्टर ने तुरन्त ही उसकी जितनी अच्छे तरीके से मरहम पट्टी कर सकता था उसकी मरहम पट्टी की और फिर अपनी पत्नी से कहा — "अब हम रोज़ैली के मन्दिर फिर कभी चलेंगे पहले हम इस स्त्री की सहायता कर लें। हम इसको घर ले चलते हैं और वहाँ इसको ठीक करने की कोशिश करेंगे।"

सो वे उसको अपने घर ले गये और वहाँ उसकी देखभाल की। डाक्टर की देखभाल में वर्मवुड जल्दी ही ठीक हो गयी।

डाक्टर ने उससे कितने ही सवाल पूछे पर रानी ने अपने बीते हुए दिनों के बारे में उनको कोई भी बात नहीं बतायी। न ही उनको यह बताया कि यह घटना उसके साथ कैसे हुई।

इस सबके बाद भी डाक्टर की पत्नी ने जब देखा कि वह स्त्री तो बहुत गुणों वाली है तो वह उसको पसन्द करने लगी और उसने उसको अपने घर में नौकरानी रख लिया। अब वह उनकी छोटी बच्ची को सँभालती थी।

एक दिन डाक्टर बोला — "प्रिये उस दिन तो हम इस स्त्री की वजह से अपनी मन्नत पूरी नहीं कर पाये थे तो अब हम अपनी छोटी बेटी को इस स्त्री के पास छोड़ते हैं और अली के साथ अपनी उस मन्नत को पूरी करने के लिये सेन्ट रोज़ैली के मन्दिर चलते हैं।

सो अगले दिन वे अपनी बच्ची और उस स्त्री को सोता छोड़ कर घर से जल्दी ही निकल पड़े। थोड़ी दूर जाने के बाद ही अली ने अपने माथे पर हाथ मारा और बोला — "मालिक, मैं खाने की टोकरी तो घर ही भूल आया।"

डाक्टर बोला — "अरे, तो जाओ और उसे जल्दी से ले कर आओ।"

खाने की टोकरी भूलने का तो उसका एक बहाना था। असल में तो इस नौकर को लग रहा था कि उसके मालिकों को यह नौकरानी बहुत पसन्द आ गयी थी सो उसको उस बेचारी के प्रति बहुत ही नफरत पैदा हो गयी थी।

वह तुरन्त घर की तरफ दौड़ा। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि वह स्त्री और बच्ची तो अभी भी सो ही रहे थे।

उसने कसाई वाला एक बड़ा सा चाकू लिया और उससे उस छोटी बच्ची का गला काट दिया। गला काट कर वह वापस डाक्टर के पास चला गया।

जब वह स्त्री जागी तो वह खून में भीगी हुई थी। उसने इधर उधर देखा तो देखा कि बच्ची का तो गला ही कटा हुआ है। देखते ही वह चिल्लायी — "ओ मेरे भगवान। बेचारे इसके माता पिता। मैं क्या करूँ। मैं उनको क्या जवाब दूँगी।"

परेशान हो कर उसने एक खिड़की खोली और वहाँ से कूद कर जितनी तेज़ भाग सकती थी बाहर भाग गयी।

भागती भागती वह एक खुले मैदान में आयी जहाँ टूटा फूटा एक महल खड़ा हुआ था। वह उस महल के अन्दर चली गयी। उस महल के अन्दर कोई नहीं था। वहाँ उसको एक सोफा दिखायी दे गया सो वह उस सोफे पर जा कर लेट गयी और डर और थकान की वजह से लेटते ही सो गयी।

X X X X X X X

अब हम रानी को यहीं सोता हुआ छोड़ते हैं और उस राजा के पास चलते हैं जो कोई लड़की नहीं चाहता था।

कुछ समय बाद उसकी रानी ने अपने पति को बताया कि उस समय उसने जिस लड़की को जन्म दिया था वह मरी नहीं थी बल्कि उसने उसको उसकी गौडमदर को दे दिया था। पर फिर उसने उसके बारे में कुछ नहीं सुना।

इसको सुन कर तो राजा बहुत बेचैन हो गया और एक दिन रानी से बोला — "प्रिये, मुझे बहुत अफसोस है कि मैंने ऐसा फैसला किया और उस फैसले की वजह से तुमको ऐसा करना पड़ा।

मैं घर छोड़ कर जा रहा हूँ और अब मैं तभी लौटूँगा जब मुझे अपनी बेटी की कोई खबर मिल जायेगी।" और यह कह कर वह घर छोड़ कर चला गया।

वह चलता रहा चलता रहा। काफी दूर जाने के बाद जब रात हुई तो वह एक अकेली खुली जगह में खड़ा था। वहाँ एक टूटा फूटा महल खड़ा था। वह उस महल के अन्दर चला गया।

X X X X X X X

अब हम इस राजा को भी यहीं इस महल में छोड़ते हैं और उस राजा के पास चलते हैं जो अपनी रानी को पैलैग्रीनो पहाड़ की तलहटी में छोड़ कर चला गया था। वह राजा जितना अपनी पत्नी के बारे में सोचता था उसको उतना ही बुरा लगता था।

उसने उस नाइट से वह सब कुछ सुना तो था पर उसका मन नहीं मान रहा था कि वह सच था क्योंकि वह उसको बहुत प्यार करता था।

वह सोचता रहा — "क्या हो अगर वह नाइट झूठ बोल रहा हो। क्या हो अगर मेरी पत्नी वाकई बेकुसूर हो। क्या वह अभी भी ज़िन्दा होगी या फिर वह मर गयी होगी?

यहाँ इस महल में उसके बिना मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। मैं उसको सारी दुनियाँ में ढूँढूँगा और अब मैं तभी वापस लौटूँगा जब मुझे उसकी कोई खबर मिल जायेगी।"

सो वह भी अपनी पत्नी को ढूँढने के लिये महल से निकल पड़ा और चलते चलते वह भी एक अकेली खुली जगह में आ गया जहाँ टूटा फूटा एक महल खड़ा था।

वह उस टूटे महल के अन्दर चला गया तो उसने देखा कि एक और राजा वहाँ एक आराम कुर्सी पर बैठा आराम कर रहा था। वह भी वहीं पास ही एक दूसरी कुर्सी पर जा कर बैठ गया।

X X X X X X X

अब हम इस राजा को भी यहीं इसी महल में छोड़ते हैं और उस डाक्टर के पास चलते हैं जिसने वर्मवुड को बचाया था।

जब वह अपनी यात्रा से वापस आया तो घर में इस आशा से घुसा कि वह अपनी छोटी बेटी को देखेगा पर उसको तो वह मरी हुई दिखायी दी। उसका गला कटा हुआ था।

तो सबसे पहले उसके दिमाग में यही आया कि वह उस नौकरानी को ढूँढे क्योंकि वह उसको उसी के पास छोड़ कर गया था।

सो वह बोला — "अली, हमको उस नीच स्त्री को अगर जरूरत हो तो दुनियाँ भर में ढूँढना चाहिये और उसको उसी तरह से मारना चाहिये जैसे उसने हमारी बेटी को मारा है।"

सो वह भी अली को साथ ले कर उस स्त्री की खोज में निकल पड़ा। उसको ढूँढते ढूँढते वह भी एक अकेले खुले मैदान में आ पहुँचा जहाँ एक टूटा फूटा महल खड़ा था और वह भी उस महल में घुस गया।

अन्दर जा कर उसने इधर उधर देखा तो वहाँ दो राजाओं को बराबर बराबर दो आराम कुर्सियों पर बैठे आराम करते पाया। वह डाक्टर और उसका नौकर अली दोनों ही उनके सामने वाली कुर्सियों पर जा कर बैठ गये।

अब चारों वहाँ बैठे थे – चुपचाप। हर एक अपने अपने विचारों में खोया हुआ था। कमरे के बीच में एक लालटेन जल रही थी जिसको तेल की जरूरत थी।

तभी वहाँ एक तेल डालने वाली कुप्पी[29] आयी और उसने लालटेन से कहा — "ज़रा सा नीचे हो जाओ तो मैं तुम्हारे अन्दर तेल डाल दूँ।"

यह सुन कर लालटेन थोड़ा नीचे को हो गयी और तेल डालने वाली कुप्पी ने उसमें तेल डाल दिया।

तेल डालने के बाद कुप्पी ने लालटेन से पूछा — "क्या तुम्हारे पास मुझे बताने के लिये कोई मजेदार बात है?"

लालटेन बोली — "तुम मुझसे क्या सुनना चाहोगी? मेरे पास तुम्हें बताने के लिये कुछ मजेदार बात तो है।"

"तो बताओ न।"

लालटेन बोली — "तो सुनो। एक राजा था जो लड़की नहीं चाहता था। उसने अपनी पत्नी से कहा कि अगर उसने एक और लड़की को जन्म दिया तो वह उस लड़की को मार डालेगा।

[29] Translated for the "Oil Cruest:". See its picture above.

इत्तफाक से रानी ने अगली बार भी एक लड़की को जन्म दिया। रानी अपनी बच्ची को मरने देना नहीं चाहती थी सो उसने उसको बचाने के लिये उसको तुरन्त ही वहाँ से कहीं और भेज दिया।

आगे सुनो। जब यह बच्ची बड़ी हुई तो एक राजा ने उससे शादी कर ली। कुछ नाइट्स ने इस राजा को धोखा दिया और यह राजा उसको पैलैग्रीनो पहाड़ की तलहटी में ले गया, उसको मारा और उसको वहीं जमीन पर बेहोश पड़ा छोड़ कर वहाँ से चला गया।

एक डाक्टर उधर से जा रहा था जिसने उसके कराहने की आवाज सुनी।"

जैसे जैसे लालटेन अपनी कहानी आगे बढ़ाती जा रही थी वहाँ बैठे अधसोये लोगों की आँखें खुलती जा रही थीं। उन्होंने एक दूसरे की तरफ देखा और अपनी अपनी कुर्सियों से उछल पड़े। अली तो यह सब सुन कर पत्ते की तरह काँपने लगा।

लालटेन ने अपनी कहानी आगे बढ़ायी — "अब तुम ज़रा यह सुनो। उस डाक्टर ने क्या किया जब उसने वहाँ एक लड़की को घायल पड़े देखा तो वह उसको अपने घर ले गया और बाद में उसको अपनी बेटी की आया बना दिया।

उनके घर में उनका एक नौकर भी था जो उस आया से बहुत जलता था सो उसने उस छोटी बच्ची को मार दिया और सारा जुर्म उस बेचारी आया पर आ पड़ा।"

तेल डालने वाली कुप्पी एक लम्बी आह भर कर बोली — "वह बेचारी आया। पर वह आया अब है कहाँ? क्या वह ज़िन्दा है या मर गयी?"

लालटेन बोली — "श श श श। वह ऊपर वाले कमरे में सोफे पर सो रही है। यहाँ उसका राजा पिता और राजा पति बैठे हैं जो अपने किये पर पछता रहे हैं और उसको ढूँढ रहे हैं।

और वह डाक्टर भी यहीं बैठा है जो उससे बदला लेने की इच्छा से उसको ढूँढ रहा है। वह समझता है कि उसकी बच्ची का खून उसी ने किया है।"

तभी राजा पिता, राजा पति और डाक्टर अपनी अपनी कुर्सियों से उठे। इससे पहले कि अली वहाँ से बच कर भागता डाक्टर ने तुरन्त ही अली को पकड़ लिया। तीनों ने मिल कर उसको मार दिया।

फिर वे सब ऊपर दौड़े और उस काउच के पास घुटनों पर बैठ गये जिस पर वौर्मवुड सो रही थी।

राजा पिता बोला — "यह मेरी है। यह मेरी बेटी है।"

राजा पति बोला — "यह मेरी है। यह मेरी पत्नी है।"

डाक्टर बोला — "यह मेरी है। मैंने इसकी जान बचायी है।"

आखीर में वह उस राजा के पास चली गयी जो उसका पति था। फिर उसने वर्मवुड के पिता राजा और डाक्टर को अपनी पत्नी के लौट आने की खुशी मनाने के लिये बुलाया। उसके बाद वे सब एक खुश परिवार की तरह से रहे।

3 स्पेन का राजा और अंग्रेज मीलौर्ड[30]

एक राजा ने अपने बेटे को उसकी अठारहवीं सालगिरह पर अपने पास बुलाया और कहा — "बेटा समय निकलता जा रहा है। मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ। अगर हम मर गये तो हमारा राज्य कौन सँभालेगा इसलिये तुम अब शादी कर लो।"

बेटे को पिता के ये शब्द कुछ बहुत ज़्यादा अच्छे नहीं लगे सो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, इस बात को सोचने के लिये अभी हमारे पास बहुत समय है।"

पर राजा उसको इस बात का इशारा करता ही रहा कि अब उसको शादी कर लेनी चाहिये जब तक कि उसके बेटे ने ही उसको यह कहते हुए चुप नहीं कर दिया — "पिता जी, समझने की कोशिश करिये। मैं तभी शादी करूँगा जब मुझे कोई ऐसी लड़की मिलेगी जो रिकोटा चीज़[31] की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो।"

यह सुन कर राजा ने अपने सलाहकारों को बुलाया और कहा — "मुझे तुम लोगों को यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि राजकुमार शादी के लिये राजी हो गया है।

[30] The King of Spain and the English Milord. Tale No 158. A folktale from Italy from its Palermo area.

[31] Ricotta cheese is kind of processed Paneer of India. It is used in western countries in various ways.

वह उस लड़की से शादी करेगा जो रिकोटा चीज़ की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो। आप लोगों की क्या राय है?"

अक्लमन्द सलाहकार बोले — "मैजेस्टी, आप अपने कुछ दरबारियों को चुनिये और उनको एक चित्रकार, कुछ घोड़ा गाड़ी हॉकने वाले, नौकर और और भी जो कुछ उन्हें चाहिये दे दीजिये और उनको दुनियाँ भर में ऐसी लड़की ढूँढने के लिये भेज दीजिये जो रिकोटा चीज़ की तरह से सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो।

एक साल बाद राजकुमार से कहिये कि वह उनमें से जो भी उसको सबसे अच्छी लड़की लगे वह उससे शादी कर ले।"

सो राजा ने अपने दरबार से कुछ अच्छे दरबारी चुने और उनको एक चित्रकार, कुछ घोड़ा गाड़ी हॉकने वाले और कई नौकर दे कर ऐसी लड़की ढूँढने के लिये बाहर भेज दिया जो रिकोटा चीज़ की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो।

एक आदमी एक राज्य गया दूसरा दूसरे राज्य गया। इस तरह वे सब पूरी दुनियाँ के कई राज्यों में गये।

उनमें से एक आदमी स्पेन गया जहाँ जा कर उसने सबसे पहला काम यह किया कि वह एक कैमिस्ट के पास रुका और उससे बात

करने लगा। बातों बातों में वे दोनों दोस्त बन गये। कैमिस्ट ने पूछा — "जनाब आप कहाँ से आते हैं?"

उस आदमी ने कहा — "हम एक ऐसी लड़की की तलाश में हैं जो रिकोटा चीज़ की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो। क्या इधर ऐसी कोई लड़की है?"

कैमिस्ट बोला —"ओह अगर तुम ऐसी ही किसी लड़की की तलाश में हो तो यहाँ एक बहुत ही सुन्दर लड़की है। वह बिल्कुल रिकोटा चीज़ की तरह सफेद है और गुलाब की तरह से गुलाबी है। पर उसको देखना कोई आसान काम नहीं है क्योंकि वह कभी बाहर नहीं निकलती।

मैंने उसको खुद ही कभी नहीं देखा और जो भी मैं कुछ तुम्हें बता रहा हूँ वह भी बस सुनी सुनायी ही बता रहा हूँ। वह ऐसे लोगों की बेटी है जो केवल अन्दर ही अन्दर रहते हैं इसलिये तुम उसको कभी बाहर नहीं देखोगे।"

"तो फिर हम उसे देखें कैसे?"

"मैं कोई तरीका निकालता हूँ जिससे तुम उसे देख सकोगे।"

कह कर कैमिस्ट उस लड़की की माँ के पास गया और उससे कहा — "मैम, मेरी दूकान पर एक चित्रकार खड़ा है जो दुनियाँ की बहुत सुन्दर लड़कियों की तस्वीरें बनाने के लिये निकला हुआ है। वह आपकी बेटी की तस्वीर बनाना चाहता है, अगर आप उसको

इजाज़त दें तो। वह आपको इसके लिये चालीस सोने के क्राउन[32] देगा।"

मॉ को पैसे की बहुत जरूरत थी सो वह अपनी बेटी के पास गयी और उसको यह सौदा मंजूर करने के लिये कहा। लड़की मान गयी। चित्रकार राजा के दरबारी के साथ आया। तीनों उसे देख कर बोल पड़े "ओह यह तो कितनी सुन्दर है।"

चित्रकार ने उसकी तस्वीर बनायी। उसने उस तस्वीर को कैमिस्ट की दूकान पर पूरा किया और राजा के दरबारी ने उसको सोने के फ्रेम में जड़वा दिया। उसने उस तस्वीर को अपने गले में लटकाया और राजा के सामने पहुँचा।

यही वह समय था जब सबको वैसी लड़कियों की तस्वीरें ले कर राजा के पास पहुँचना था सो राजा के और दरबारी भी वैसी ही तस्वीरें ले कर वहाँ आ गये। सब एक बड़े कमरे में अपनी अपनी गर्दनों में अपनी अपनी लायी तस्वीरें लटका कर खड़े हुए थे।

राजकुमार ने सब तस्वीरें देखीं तो वह स्पेन वाली लड़की की तस्वीर के सामने रुक गया और बोला — "अगर इस लड़की का चेहरा ऐसा ही है जैसा इस चित्रकार ने बनाया है तो यह लड़की वैसी ही है जैसी कि मैं चाहता हूँ।"

[32] Crown was the then currency in Europe.

राजा का दरबारी बोला — "अगर यह चेहरा आपको खुश नहीं करता तो फिर आपको कोई और चेहरा कभी खुश नहीं कर सकता।"

राजा का वह आदमी उस लड़की को लाने के लिये दरबार से स्पेन वापस भेज दिया गया। लड़की आयी तो उसको पहले चार महीने महल में रानियों जैसा व्यवहार सीखने के लिये रखा गया।

वह लड़की काफी होशियार थी तो उसने वह सब बहुत जल्दी ही सीख लिया। उसके बाद उसकी शादी एक नकली राजकुमार से कर दी गयी और फिर उसके बाद वह असली राजकुमार के घर आयी।

उसको इतने धार्मिक ढंग से पालने पोसने के लिये उसकी माँ की बहुत तारीफ की गयी और उस कैमिस्ट को भी इस लड़की के चुनाव में हिस्सा लेने के लिये काफी इनाम दिया गया।

राजकुमार अपने घोड़े पर चढ़ कर उस लड़की से मिलने के लिये पहुँचा। जब वे मिले तो राजकुमार अपने घोड़े से उतरा और उसकी गाड़ी में बैठ गया। ज़रा सोचो तो कि वे लोग कितने खुश थे।

रानी माँ ने भी उसको बहुत पसन्द किया। उसने अपने बेटे के कान में फुसफुसाया — "तुमने अपने लिये ठीक पत्नी चुनी है। मुझे उसकी आँखों की पवित्रता बहुत अच्छी लगी।"

और इसमें कोई शक भी नहीं था कि राजकुमारी बहुत ही पवित्र ज़िन्दगी गुजार रही थी। वह अपने कमरे में ही रहती थी और कभी बाहर नहीं निकलती थी।

उसकी रानी माँ से भी बहुत अच्छी तरह बनती थी और वे दोनों कबूतर के एक जोड़े की तरह से रहती थीं। यह एक अजीब सी बात थी क्योंकि सास बहू तो हमेशा से सभी जगह झगड़ती ही रही हैं।

पर बीलज़ेबूब[33] तो हमेशा ही कुछ न कुछ इधर उधर की सोचता रहता है। सो एक दिन सास ने बहू से कहा — "बेटी तुम सारे समय इस तरह से घर में ही बन्द क्यों रहती हो। कभी ताजा हवा खाने बाहर छज्जे पर भी जाया करो।"

सो सास के हुक्म से राजकुमारी छज्जे पर गयी। इत्तफाक से उसी समय वहाँ से एक अंग्रेज मीलौर्ड[34] गुजर रहा था। उसने जैसे ही ऊपर की तरफ देखा तो फिर उसकी आँखें तो नीची होना ही भूल गयीं।

राजकुमारी ने भी उसको देखा तो वह तुरन्त ही अन्दर चली गयी और उसने अपनी खिड़की बन्द कर ली। पर उस नौजवान को अब लड़की की शक्ल देखने से रोकने से महल के चारों तरफ

[33] Beelzebub or Beel-Zebub is a contemporary name for the devil. In Christian and Biblical sources, Beelzebub is another name for the devil. In Christian demonology, he is one of the seven princes of Hell according to Catholic views on Hell.

[34] A European title for a gentleman.

चक्कर काटने से कोई नहीं रोक सका। वह वहाँ अब रोज ही उस घर के चक्कर काटने लगा।

एक दिन एक बुढ़िया उससे भीख माँगने आयी तो उसने उसे डाँट कर भगा दिया — "चली जा यहाँ से ओ बुढ़िया।"

"सरकार क्या बात है?"

"जा न यहाँ से। तुझे क्या मतलब।"

"आप मुझे बताइये तो सरकार। क्या पता मैं आपकी कुछ मदद कर सकूँ।"

"बात यह है कि मैं इस राजकुमारी को देखना चाहता हूँ पर देख नहीं पा रहा हूँ।"

"अरे बस यही बात है? आप मुझे एक हीरा जड़ी अंगूठी दीजिये फिर मैं देखती हूँ।"

मीलौर्ड ने तुरन्त ही हीरा जड़ी एक अँगूठी खरीदी और उस बुढ़िया को दे दी। वह उस अँगूठी को ले कर महल में चली गयी। महल के दरवाजे पर महल के चौकीदार ने उसको रोका — "कहाँ जा रही है ओ बुढ़िया?"

बुढ़िया बोली — "मैं राजकुमारी के पास जा रही हूँ। मेरे पास बेचने के लिये एक अँगूठी है जिसे केवल राजकुमारी ही खरीद सकती है।"

राजकुमारी को यह सन्देश भेज दिया गया कि एक बुढ़िया आपको अँगूठी बेचना चाहती है। यह सुन कर राजकुमारी ने उस

बुढ़िया को अन्दर बुला लिया। ॲगूठी देख कर उसने बुढ़िया से पूछा — “तुम्हारी इस ॲगूठी की क्या कीमत है?”

“तीन सौ क्राउन मैजेस्टी।”

राजकुमारी बोली — “इस बुढ़िया को तीन सौ क्राउन दे दो और दस क्राउन इसको यहाँ इसे लाने के लिये दो दो।”

वह बुढ़िया राजकुमारी से पैसे ले कर अपने हाथ मलती हुई उस मीलौर्ड के पास आयी।

मीलौर्ड ने पूछा — “राजकुमारी ने तुमसे क्या कहा?”

बुढ़िया बोली — “राजकुमारी ने मुझे दस दिन में जवाब देने के लिये कहा है।” कह कर उसने किसी को बिना बताये वे तीन सौ क्राउन अपने कपड़ों में खोंस लिये और चली गयी।

दस दिन बाद वह मीलौर्ड के पास लौटी और बोली — “मुझे दस दिन हो गये हैं अब मुझे राजकुमारी के पास जाना है। क्या आप चाहते हैं कि मैं उनके पास खाली हाथ जाऊँ? क्या आपको मालूम है कि इस बार आपको क्या करना चाहिये। अबकी बार आपको उनके लिये एक मँहगा हार भेजना चाहिये।”

लौर्ड तो जैसा कि तुम जानते हो बेताज के बादशाह होते हैं सो उस बुढ़िया ने उससे एक बहुत मँहगा हार खरीदवाया और उसे ले कर राजकुमारी के पास चल दी।

राजकुमारी ने उस हार को देख कर कहा “अरे यह तो वाकई बहुत सुन्दर हार है। इसकी क्या कीमत है?”

“एक हजार क्राउन।”

राजकुमारी बोली — “इस बुढ़िया को एक हजार क्राउन दे दो और चालीस क्राउन इसको और दे दो इसे यहाँ तक लाने के लिये।”

बुढ़िया ने वे पैसे लिये और फिर मीलौर्ड के पास आयी।

उसने मीलौर्ड से कहा — “क्या आप विश्वास करेंगे कि अबकी बार उसकी सास भी वहाँ थी इसलिये वह मुझसे बात भी नहीं कर सकी। पर उसने आपकी दी हुई भेंट ले ली है और उसने अगले हफ्ते आपको जवाब देने के लिये कहा है।”

“और अगले हफ्ते तुम उसके लिये क्या भेंट ले जाओगी?”

“सुनिये। आपने उसको एक अँगूठी दे दी है, एक हार दे दिया है। अगली बार हम उसको एक बढ़िया सी पोशाक देंगे।”

सो अगले हफ्ते मीलौर्ड ने राजकुमारी के लिये एक बहुत बढ़िया पोशाक खरीदी और उसको उस बुढ़िया को ले जाने के लिये दी।

अबकी बार बुढ़िया राजकुमारी से बोली — “यह पोशाक मैं बेचने के लिये लायी हूँ। क्या आप इसे खरीदेंगी?”

“यह तो बहुत ही सुन्दर पोशाक है। तुम्हें इसकी क्या कीमत चाहिये?”

“पाँच सौ क्राउन।”

राजकुमारी ने कहा — “इस बुढ़िया को पाँच सा क्राउन दे दो और बीस क्राउन और दे दो इसको यहाँ तक लाने के लिये।”

बुढ़िया ने वह पैसे लिये और फिर मीलौर्ड के वापस आयी तो मीलौर्ड ने उससे पूछा — “अबकी बार क्या कहा उसने?”

बुढ़िया बोली — “इस बार उसने कहा है कि आप अपने महल में एक नाच का इन्तजाम करें और राजकुमार और राजकुमारी को भी उस नाच में बुलायें और फिर सब कुछ वहीं तय हो जायेगा।”

मीलौर्ड तो यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने एक बहुत शानदार नाच का इन्तजाम किया और राजकुमार को उसमें आने का बुलावा भेजा।

राजकुमारी ने कहा — “ओह यह तो कितना अच्छा है। एक शानदार नाच। मैं तो वही पोशाक पहनूँगी जो मैंने अभी उस बुढ़िया से खरीदी थी।” पर जब वह नाच में गयी तो उसने वही अँगूठी भी पहनी और वही हार भी पहना जो उसने उस बुढ़िया से खरीदा था।

पहले नाच के लिये मीलौर्ड ने राजकुमारी को नाच के लिये बुलाया और आँखों ही आँखों में उसको विश्वास दिलाया कि सब कुछ तैयार था। इसके बाद उसने उसकी तरफ आँख मारी। पर इस पर राजकुमारी घूमी और राजकुमार के बराबर अपनी सीट पर आ कर बैठ गयी।

यह सोचते हुए कि शायद राजकुमारी को कुछ और तारीफ की जरूरत थी मीलौर्ड फिर से उसके पास नाच के लिये बुलाने के लिये

गया और एक बार फिर से उसने उसको ऑख मारी। राजकुमारी फिर से अपनी सीट पर वापस गयी और जा कर राजकुमार के पास बैठ गयी।

मीलौर्ड ने उसको तीसरी बार नाच के लिये बुलाया और एक बार फिर ऑख मारी। इस बार राजकुमारी ने उससे पीठ फेर ली।

जब नाच खत्म हो गया तो राजकुमार और राजकुमारी दोनों ने मीलौर्ड से विदा ली और अपने घर चल दिये। मीलौर्ड वहॉ सोचता ही खड़ा रह गया कि यह सब क्या हो गया।

"हालॉकि उसने वही पोशाक, ॲगूठी और हार पहना हुआ था पर फिर भी उसने मेरे साथ नाचने से मना कर दिया। इसका क्या मतलब है?"

उन दिनों कुछ ऐसा रिवाज था कि राजा लोग वेश बदल कर यह जानने के लिये कैफ़े आदि में जाया करते थे कि लोग उनके बारे में क्या बात करते थे और उससे यह पता लगाते थे कि वे उनके बारे में क्या सोचते थे ताकि वे अपना काम ठीक से कर सकें।

ऐसे ही एक कैफ़े में राजकुमार का मीलौर्ड से आमना सामना हुआ। वहॉ मीलौर्ड राजकुमार को उस वेश में पहचान नहीं सका सो वे आपस में बात करने लगे।

एक के बाद एक बात निकलती गयी और मीलौर्ड बोला — "उस बेवकूफ राजकुमारी को देखो। मैंने उसको इतनी कीमती ॲगूठी भेजी और उसने उसको स्वीकार कर लिया।

मैंने उसको इतना कीमती हार भेजा वह भी उसने स्वीकार कर लिया। मैंने उसको इतनी कीमती पोशाक भेजी उसने उसको भी स्वीकार कर लिया।

काश तुम जान सकते कि उन चीज़ों पर मैंने कितना पैसा खर्च किया। फिर उसने मुझसे नाच का इन्तजाम करने के लिये कहा तो मैंने वह भी किया पर वह मुझसे पूरी शाम नहीं बोली।"

यह सुन कर राजकुमार का चेहरा लाल पड़ गया। वह अपने महल वापस लौटा। उसने अपनी तलवार निकाली और अपनी पत्नी को ढूँढने चला।

उसकी माँ वहीं बीच में खड़ी थी वह उन दोनों के बीच में बहू की ढाल बन कर खड़ी हो गयी। अब राजकुमार उसको मार तो नहीं सका पर वह राजकुमारी से गुस्सा बहुत था।

उसने अपने एक जहाज़ के कप्तान को बुलाया और उससे कहा — "इस बेवकूफ को अपने जहाज़ पर बिठाओ और इसको समुद्र में ले जा कर मार दो। इसकी जीभ काट कर उसका अचार डाल कर मुझे ला कर दो और उसके शरीर के बाकी सब हिस्से समुद्र में फेंक दो।"

तब तक उस राजकुमारी का कोई और नाम नहीं था। कप्तान बेचारा उस बदकिस्मत राजकुमारी को जहाज़ में ले चला। उसकी सास बहुत दुखी थी वह बेचारी कुछ बोल ही नहीं पा रही थी सो वे

दोनों एक दूसरे से कुछ कहे बिना ही एक दूसरे से अलग हो गयीं। लोग भी सिवाय रोने के और कुछ नहीं कर पाये।

जहाज़ का कप्तान राजकुमारी को जहाज़ में बिठा कर समुद्र में ले तो गया पर वह उसको मार नहीं सका। उसके पास एक कुत्ता था सो उसने उस कुत्ते को मारा और राजकुमार के लिये उसकी जीभ का अचार बना दिया।

जब कई दिनों बाद उसका जहाज़ जमीन के किनारे लगा तो कप्तान ने राजकुमारी को जमीन पर उतारा और उसके लिये बहुत सारी रसद और कपड़ों का इन्तजाम कर के वापस चला गया। राजकुमारी वहाँ अकेली खड़ी रह गयी।

वह वहाँ एक गुफा में रहने लगी। धीरे धीरे उसकी रसद खत्म होने लगी। और एक दिन उसका खाना बिल्कुल ही खत्म हो गया। तभी उसको वहाँ एक लड़ाई का जहाज़ दिखायी दिया। राजकुमारी ने उसको इशारा कर के बुलाया।

जब उस जहाज के कप्तान ने किसी को इशारा करते देखा तो उसको लगा कि वहाँ जमीन थी सो वे वहाँ उतर गये। उसने राजकुमारी से पूछा — "मैम, आप यहाँ क्या कर रही हैं?"

राजकुमारी बोली — "मैं एक जहाज़ पर थी कि वह जहाज़ तूफान में फँस कर नष्ट हो गया और मैं अकेली ही बच गयी।"

"मैं आपको कहाँ छोड़ दूँ?"

राजकुमारी को याद आया कि राजकुमार का बड़ा भाई ब्राज़ील का राजा था और उसकी सास उसके बारे में बहुत अच्छा बोलती थी सो उसने तुरन्त ही जवाब दिया — "ब्राज़ील। आप मुझे ब्राज़ील छोड़ दें वहाँ मेरे एक रिश्तेदार रहते हैं।"

उस जहाज़ के कप्तान ने उसको जहाज़ पर चढ़ाया और ब्राज़ील की तरफ चल दिया।

ब्राज़ील पहुँचने से पहले राजकुमारी ने कप्तान से कहा — "आप मेरी एक सहायता और कर दें। मैं चाहती हूँ कि मेरे रिश्तेदार मुझे न पहचान पायें इसलिये मैं वहाँ एक आदमी के रूप में जाना चाहती हूँ।"

कप्तान ने उसको आदमी के रूप में बदल दिया। उसके बाल काट दिये ओर उसको आदमियों के कपड़े दिलवा दिये। अपनी सुन्दरता की वजह से अब वह राजकुमारी एक सुन्दर नौकर लगने लगी।

ब्राज़ील में उतर कर राजकुमारी सड़कों पर इधर उधर घूमने लगी। तभी उसको एक वकील का दफ्तर दिखायी दिया। वह उस दफ्तर में गयी और वहाँ जा कर पूछा — "क्या मैं आपके यहाँ एक क्लर्क का काम कर सकती हूँ?"

"ओह हाँ हाँ क्यों नहीं। मैं तुमको कम से कम क्लर्क तो रख ही सकता हूँ।" और उसने उसको अपने दफ्तर में क्लर्क रख लिया। उसने उसको कुछ काम दिया जो उसने पलक झपकते कर

दिया। वकील तो विश्वास ही नहीं कर सका कि कोई क्लर्क वह काम इतनी जल्दी कर सकता था।

फिर उसने उसको और ज़्यादा कठिन काम दिया। उसको भी उसने जल्दी ही खत्म कर दिया। वह वकील उसकी तारीफ किये बिना न रह सका। उसने उसकी तनख्वाह बारह क्राउन रोज की निश्चित कर दी।

यह क्लर्क उस वकील को बहुत अच्छा लगा। उस वकील की एक बेटी थी सो उसने सोचा कि मैं अपनी बेटी की शादी इस नौजवान क्लर्क से कर देता हूँ। उसने यह बात उस क्लर्क से कही भी।

क्लर्क बोला — "जनाब इस मामले को हम लोग अभी कुछ समय के लिये यहीं रोक लें तो अच्छा रहे। पहले मैं अपने काम में थोड़ी सी जानकारी हासिल कर लूँ तब मैं खुद ही आपसे इस बारे में बात करूँगा।"

धीरे धीरे वकील का नौजवान क्लर्क मशहूर होने लगा। एक बार उसको महल में किसी शाही काम के लिये बुलाया गया। वहाँ उसको एक कागज नकल करने के लिये दिया गया तो वह उसने तुरन्त ही कर दिया और बहुत साफ और सही किया।

इस नौजवान के इस काम की बात बादशाह तक पहुँची तो उसने उस क्लर्क को बुलाया। अब यह बादशाह तो इस क्लर्क के पति का बड़ा भाई था।

बादशाह को तो यह क्लर्क पहली नजर में ही बहुत पसन्द आ गया सो उसने उसको अपने महल में ही रख लिया और अपना स्क्वाइर[35] बना लिया।

X X X X X X X

अब हम राजकुमारी को यहीं छोड़ते हैं और राजकुमार के पास चलते है। कुछ दिनों बाद जब राजकुमार का गुस्सा ठंडा हो गया तो वह राजकुमारी के साथ किये गये अपने बर्ताव के लिये बहुत पछताया।

"हो सकता है कि वह बेकुसूर हो। ओह प्रिये मैं भी कितना बेवकूफ था जो मैने तुमको ऐसी सजा दी। अब तुम्हारा यहाँ क्या बचा है। मैंने तो तुमको मरवा ही दिया।"

उसके दिमाग में बार बार इसी तरह के ख्याल आने लगे और वह पागल सा हो गया। यह देख कर रानी माँ ने अपने बड़े बेटे ब्राज़ील के बादशाह को लिखा "तुम्हारा भाई पागल सा हो गया है और देश की जनता में विद्रोह होने वाला है। सो तुम कुछ समय के लिये यहाँ आ जाओ।"

बादशाह यह पढ़ कर बहुत दुखी हुआ और रो पड़ा। उसने अपने स्क्वाइर से कहा — "क्या तुम मेरे भाई के पास जाओगे? मैं

[35] Squire – a Squire is a man of high social standing who owns and lives on an estate in a rural area, especially as the chief landowner in such an area.

तुमको उस राज्य का वायसराय[36] बनाता हूँ और वहाँ राज करने की सारी ताकतें देता हूँ।"

स्क्वाइर राजी हो गया। उसने बहुत सारे लोग लिये, दो जहाज़ लिये और स्पेन चल दिया। जगह दूर थी। जब वह वहाँ पहुँचा तो सभी लोगों के मुँह से निकला — "ओह वायसराय आ गया, वायसराय आ गया।"

उसके स्वागत में तोपें छोड़ी गयीं। रानी खुद उसको लेने आयी जैसे वह उसका बेटा हो। "आइये वायसराय। ओ योर मैजेस्टी के नौकर, और किसी भी काम को करने से पहले आप अपनी जनता से मिल लें।"

सो वायसराय ने सबसे पहले अपनी जनता के ढेर सारे अधूरे काम देखे। जब वे काम पूरे हो रहे थे तो जनता बहुत खुश थी कि उस जैसा वायसराय उनका राजा बन कर आया है।

जब जनता का काफी काम खत्म हो गया तो वायसराय ने रानी माँ से कहा — "मैजेस्टी, क्या आप मुझे आप अपनी बहू के बारे में कुछ बतायेंगी कि उसके साथ क्या हुआ था?"

रानी ने शुरू से ले कर आखीर तक उसको सारी कहानी बता दी – राजकुमार के बारे में, राजकुमार की कैफ़े में हुई बातों के बारे

[36] Viceroy – a viceroy is a regal official who runs a country, a colony, or a city province (or state) in the name of and as the representative of the monarch. The term means "in the place of" and in the French it means the king.

में, अपनी बहू के जाने के बारे में, सब कुछ। और यह सब कहते कहते उसकी ऑखें भर आयीं।

वायसराय बोला — "ठीक है। देखते हैं। आप राजकुमार को बुलाइये जिसने आपको यह सब तकलीफें दी हैं।" राजकुमार को बुलाया गया।

वायसराय ने कहा — "मीलौर्ड, यह किसी की ज़िन्दगी और मौत का मामला है इसलिये आप मुझे बतायें कि आपको राजकुमारी के मामले में क्या कहना है।"

राजकुमार ने जितना सच सच वह बता सकता था बिना कुछ जोड़े और बिना कुछ छिपाये उसको सब बता दिया। वायसराय ने पूछा — "पर राजकुमार क्या आपने कभी उससे खुद भी बात की?"

"नहीं।"

"क्या आपने उसको वे भेंटें खुद दीं?"

"नहीं। वे भेंटें उसको एक बुढ़िया ने दी थीं।"

यह सुन कर रानी मॉ तो आश्चर्यचकित रह गयी क्योंकि उसको तो इस बात का पता ही नहीं था। और साथ में राजकुमार भी जो अभी तक आधा पागल सा था।

"क्या वह बुढ़िया जिसने वे भेंटें राजकुमारी को दी थीं अभी ज़िन्दा है या मर गयी?"

"शायद वह अभी भी ज़िन्दा होगी।"

वायसराय ने हुक्म दिया कि राजकुमार को एक कमरे में बिठा दिया जाये और उस बुढ़िया को बुलाया जाये। सो राजकुमार को एक कमरे में बिठा दिया गया और बुढ़िया को बुलाया गया।

वायसराय ने बुढ़िया से पूछा — "ये जो चीज़ें तुमने राजकुमारी को बेची थी इसके बारे में कुछ बताओ।" बुढ़िया ने उसे सब कुछ बता दिया।

तो वायसराय ने पूछा — "अब यह बताओ कि क्या तुमने राजकुमारी को कोई सन्देश भी दिया था?"

"नहीं, कभी नहीं।"

यह सुन कर राजकुमार अपने होश में आया। वह बुदबुदाया — "ओह प्रिये, तो तुम तो बिल्कुल बेकुसूर थीं। मैंने तुम्हें बेकार ही मार दिया।" कह कर वह फिर रोने लगा।

वायसराय ने उसको तसल्ली दी। "आप शान्त हों राजकुमार। हम इसका कोई इलाज निकालते हैं।"

"इस मामले का इलाज कैसे निकल सकता है क्योंकि वह तो मर चुकी है। ओह प्रिये, मैंने तो तुमको हमेशा के लिये खो दिया है।"

इस पर वायसराय एक परदे के पीछे गया, राजकुमारी की तरह से तैयार हुआ जो कि वह असल में था, अपने कटे हुए बाल फिर से लगाये, और सास, राजकुमार और दरबार के सामने निकल कर आया।

रानी माँ उसको देखते ही बोली — "अरे तुम कौन हो?"

"आपकी बहू माँ जी, आपने मुझे पहचाना नहीं?" पर तब तक तो राजकुमार ने उसको गले ही लगा लिया था।

जब राजकुमारी वायसराय थी बुढ़िया को सजा तो उसने तभी सुना दी थी। उसको फाँसी के तख्ते पर जला कर मार डालना था और मीलौर्ड को उसका गला कटवा कर मरवा दिया गया।

रानी माँ ने अपने बड़े बेटे को यहाँ का सारा हाल लिखा तो उसने अपने बच्चों से कहा — "अरे बच्चों ज़रा देखो तो। मेरी छोटे भाई की बहू मेरी सेक्रेटरी थी और मुझे पता भी नहीं चला।"

वे दोनों कप्तान जिसने राजकुमारी की जगह अपना कुत्ता मारा था और जिसने उसको ब्राज़ील पहुँचाया दोनों को दरबारियों में शामिल कर के तरक्की दे दी गयी। सारे नाविकों को उनकी टोपियों मे लाल फुँदने लगवा दिये गये।

4 रत्न जड़ा जूता[37]

एक बार यूरोप के पुर्तगाल देश[38] में एक व्यापारी अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ रहता था – एक बेटा और एक बेटी। वे जब छोटे थे तभी व्यापारी और उसकी पत्नी की मृत्यु हो गयी थी सो वे दोनों भाई बहिन अकेले रह गये।

वह लड़का अपनी बहिन को बहुत प्यार करता था। वह पढ़ लिख कर पुर्तगाल के राजा के यहाँ नौकरी करने लगा था। उसकी लिखाई आँखों को इतनी सुन्दर लगती थी कि राजा ने उसको अपना सेक्रेटरी बना लिया था।

अब हुआ यह कि उसके हाथ की लिखी हुई कुछ चिट्ठियाँ स्पेन[39] के राजा के पास पहुँचीं तो उसके मुँह से निकला — "कितनी सुन्दर लिखाई है। अगर मुझे यह लिखने वाला मिल जाये तो मैं इसको अपना सेक्रेटरी बना लूँ।"

यह सोच कर उसने पुर्तगाल के राजा को लिखा – "मैंने आपकी चिट्ठी पढ़ी। मैं आपके सेक्रेटरी की सुन्दर लिखावट देख कर बहुत खुश हुआ।

हमारी दोस्ती की खातिर जिसने हमको बाँध रखा है मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस चिट्ठी लिखने वाले को मुझे दे दें। मैं

---

[37] Bejeweled Boot. Tale No 159. A folktale from Italy from its Palermo area.

[38] Portugal – a European country

[39] Spain – a European country

उसे अपना सेक्रेटरी बनाना चाहता हूँ। स्पेन में कोई ऐसा आदमी नहीं है जो इतना सुन्दर लिखता हो।"

ये दोनों राजा लोग एक दूसरे के बड़े अच्छे दोस्त थे इसलिये हालाँकि पुर्तगाल का राजा अपना सेक्रेटरी किसी को देना नहीं चाहता था फिर भी उसने अपने सेक्रेटरी को अपने दोस्त स्पेन के राजा के पास भेज दिया।

जाते समय उस नौजवान ने पूछा — "योर मैजेस्टी, मैं अपनी बहिन का क्या करूँ? मैं उसको इस तरह अकेले छोड़ कर तो नहीं जा सकता।"

राजा बोला — "डौन जियूसैप[40]। मैं यह तो नहीं बता सकता। मैं तो बस इतना जानता हूँ कि तुमको वहाँ जाना है। तुम्हारी बहिन एक अच्छी लड़की है और मेरे ख्याल में वह अपनी देखभाल अपने आप कर सकती है। तुम अपनी नौकरानी को बोल जाओ कि वह उस पर नजर रखे। फिर तुमको उसकी चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।"

अब उस नौजवान के पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपनी बहिन को यह सब बता दे।

उसने उसको लिखा — "प्यारी बहिन कुछ ऐसा मामला आ गया है कि मुझे पुर्तगाल से स्पेन जाना पड़ रहा है। स्पेन का राजा मुझे अपना सेक्रेटरी बनाना चाहता है।

[40] Don Giuseppe – the name of the son of the trader

तुम मेरे पीछे नौकरानी के साथ अकेली रह जाओगी। मैं जब वहाँ ठीक से रहने लगूँगा तब मैं तुमको वहाँ बुला लूँगा।"

यह पढ़ कर उसकी बहिन तो रोने लगी। उसने आगे पढ़ा — "हम लोग एक दूसरे को इतना दूर न महसूस करें इसलिये हम लोगों को अपनी अपनी तस्वीरें बनवा लेनी चाहिये। मैं तुम्हारी तस्वीर ले जाऊँगा और तुम मेरी तस्वीर रख लेना।"

और फिर उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने एक दूसरे की तस्वीरें बनवा लीं और वह लड़का अपनी बहिन की तस्वीर ले कर स्पेन चला गया।

स्पेन के राजा ने उसका ज़ोर शोर से स्वागत किया और तुरन्त ही उसको लिखने के काम पर लगा दिया। वह खुद खड़े हो कर उसकी सुन्दर लिखाई देखता रहता और मन ही मन उसकी तारीफ करता रहता।

वह अपने नये सेक्रेटरी को इतना चाहने लगा कि उसके राज्य में अब जब भी कोई समस्या होती तो वह उससे कहता — "डौन जियूसैप, तुम ही देख लो इसको। तुम्हारे ऊपर मुझे पूरा विश्वास है। अपनी समझ से जो भी तुम करोगे ठीक ही करोगे।"

इस सबका नतीजा यह हुआ कि राजा के दरबारियों में उसके लिये बहुत जलन पैदा हो गयी – कुलीन लोग, राजा का पुराना सेक्रेटरी, नाइट आदि सभी उससे जलने लगे।

एक दिन उन सबने मिल कर डौन जियूसैप की इज़्ज़त को मिट्टी में मिलाने का प्लान बनाया।

एक कुलीन आदमी राजा के पास गया और बोला — "मैजेस्टी, आपने लिखने के लिये तो बहुत अच्छा आदमी ढूँढ लिया है। आप समझ गये होंगे कि मैं डौन जियूसैप के बारे में बात कर रहा हूँ जिसकी तारीफ करते करते आप थकते नहीं। पर क्या आपको पता है कि आपके पीछे आपके विश्वास की आड़ में वह छिपे छिपे वह क्या कर रहा है।"

"यह तुम क्या कह रहे हो? क्या मामला है? मुझे साफ साफ बताओ कि तुम क्या कहना चाहते हो।"

"क्या मामला है और मैं क्या कहना चाहता हूँ? बात यह है कि रोज वह कमरे में एक तस्वीर ले कर जाता है। वह उसको देखता रहता है। उसको चूमता है और रोता है। और फिर वह उसको छिपा कर रख देता है।"

राजा ने यह सुन कर सोचा कि वह इस मामले की जाँच खुद ही करेगा। एक दिन राजा डौन जियूसैप के कमरे में गया और वहाँ अचानक ही पहुँच कर उसको आश्चर्यचकित कर दिया। उस समय वह उस तस्वीर को चूम रहा था।

राजा ने पूछा — "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह तुम किसे चूम रहे थे, डौन जियूसैप?"

डौन जियूसैप बोला — "यह मेरी बहिन की तस्वीर है मैजेस्टी।"

राजा ने उस तस्वीर की तरफ देखा तो वह उसको बहुत सुन्दर लगी। वह उस तस्वीर वाली लड़की से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। डौन जियूसैप ने फिर राजा को उसके बारे में और भी बहुत कुछ बताया। उसने उसके और भी कई सारे गुण बखान किये।

वहाँ वह कुलीन आदमी भी मौजूद था जो डौन जियूसैप को गलत साबित करने से अपने आपको रोक नहीं सका।

उसने राजा के पीछे से उस तस्वीर को देखा और बोला — "कौन? यह स्त्री? इसको तो मैं जानता हूँ मैजेस्टी। मैं तो इसके साथ बातचीत भी कर चुका हूँ।"

नौजवान आश्चर्य से बोला — "क्या? मेरी बहिन से? और तुम बातचीत कर चुके हो? पर वह तो घर के बाहर कभी गयी ही नहीं। तुमने उससे कैसे बात कर ली जबकि उसे तो अभी तक किसी ने देखा भी नहीं?"

"हाँ हाँ, मैं सच कह रहा हूँ कि मैंने उससे बात की है।"

"तुम झूठ बोल रहे हो।"

जब दोनों में काफी बहस होने लगी तो राजा बीच में बोला — "इस मामले का हम एक बार ही फैसला कर देते हैं। ओ कुलीन आदमी, अगर यह सच है कि तुमने डौन जियूसैप की बहिन से बात

की है तो हम तुमको एक महीना देते हैं कि तुम हमको यह बात साबित कर के दिखाओ कि तुमने उससे बात की है।

अगर तुमने यह साबित कर दिया कि तुमने डौन जियूसैप की बहिन से बात की है तो डौन जियूसैप का सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा। और अगर तुम इस बात को साबित नहीं कर सके तो फिर तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा।"

अब शाही हुक्म तो शाही हुक्म है और आखिरी फैसला है।

यह सुन कर वह कुलीन आदमी वहाँ से चला गया। जब वह पलेरमो पहुँचा तो उसने इस लड़की के बारे में हर एक से पूछना शुरू किया तो हर एक ने यही कहा कि वह है तो बहुत सुन्दर पर उसको देखा किसी ने नहीं है क्योंकि वह कभी घर से बाहर ही नहीं निकली।

दिन पर दिन बीतते गये और उस कुलीन आदमी को कुल्हाड़ी रोज अपनी गर्दन के और पास आती दिखायी देती रही।

यही सोचते हुए और अपने हाथ मलते हुए वह एक शाम को डौन जियूसैप के घर के आस पास घूम रहा था और साथ में बुड़बुड़ाता जा रहा था कि "मैं क्या करूँ? मैं क्या करूँ?" कि तभी एक बुढ़िया ने उसको चौंका दिया।

उस बुढ़िया ने उससे कहा — "मेहरबानी कर के मुझे कुछ खाने को दो मैं बहुत भूखी हूँ।"

"जाओ भागो यहाँ से।"

"मुझे कुछ दे दो मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।"

"मुझे एक ऐसे आदमी से मिलना है जो मेरी अभी अभी सहायता कर सके।"

"तुम मुझे अपनी परेशानी बताओ तो मैं तुम्हारी सहायता करने की पूरी पूरी कोशिश करूँगी।"

सो उस कुलीन आदमी ने उसको सब कुछ बता दिया।

"अरे बस इतना ही। तुम सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दो और सोच लो कि तुमको इस बात का सबूत मिल गया।"

उस रात बहुत ज़ोर की बारिश हुई और बिजली चमकी और बादल गरजे। वह बुढ़िया डौन जियूसैप के घर के सामने वाले दरवाजे के सहारे लग कर खड़ी हो गयी।

वह ठंड से कॉप रही थी और बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही थी। उसके रोने की आवाज सुन कर घर की मालकिन यानी डौन जियूसैप की बहिन ने अपनी नौकरानी से कहा — "बेचारी बुढ़िया, उसको घर के अन्दर ले आओ। लगता है उसको बहुत ठंड लग रही है।"

सो घर का दरवाजा खुला और वह बुढ़िया घर के अन्दर घुसी। "ओह मैं तो ठंड की वजह से जमी जा रही हूँ।"

मालकिन ने उसको आग के पास बिठाया और उसको खाना खिलाया। उस चालाक बुढ़िया ने यह सब देख लिया कि घर की मालकिन कहाँ सोती थी।

जब वह मालकिन शाम के तूफान से थकी सोने चली गयी और गहरी नींद सो गयी तो वह बुढ़िया उठ कर दबे पॉव उसके सोने के कमरे में गयी और उसकी ओढ़ने की चादर उठा कर उसको सिर से पॉव तक ध्यान से देखा।

उसने देखा कि उसके दॉये कन्धे पर तीन सुनहरे बाल उगे हुए थे। उसने एक छोटी कैंची से उन बालों को काट लिया और अपने रूमाल में बॉध लिया। फिर उसने उसको चादर से ढक दिया और अपने बिस्तर पर चली आयी।

कुछ देर बाद वह हिली डुली और फिर से रोना शुरू कर दिया। रोते रोते बोली — "ओह मेरा तो यहॉ कुछ दम सा घुट रहा है मैं ज़रा बाहर जाना चाहती हूॅ।"

मालकिन उठी और अपनी नौकरानी से कहा कि वह उसको बाहर छोड़ दे नहीं तो वे दोनों रात भर नहीं सो पायेंगे।

वह कुलीन आदमी डौन जियूसैप के महल के आगे बेचैनी से तेज़ तेज़ चक्कर काट रहा था। तभी वह बुढ़िया घर से बाहर निकली और उसको तीन बाल दे कर और अपना इनाम ले कर वहॉ से चली गयी।

अगले दिन वह कुलीन आदमी जहाज में बैठ कर स्पेन वापस चला गया। स्पेन पहुॅच कर वह तुरन्त राजा के पास पहुॅचा और बोला — "मैजेस्टी, यह है डौन जियूसैप की बहिन की पहचान – उसके दॉये कन्धे पर उगे तीन सुनहरे बाल।"

डौन जियूसैप अपना चेहरा अपने हाथों से ढकते हुए बोला — "उफ़ यह तो मेरे लिये एक बहुत बड़ी मुसीबत हो गयी।"

राजा डौन जियूसैप से बोला — "अब मैं तुमको अपनी सफाई देने के लिये एक महीने का समय देता हूँ नहीं तो मेरे चौकीदार मेरा हुक्म बजा लायेंगे।"

चौकीदार आये और उन्होंने डौन जियूसैप को पकड़ कर जेल में डाल दिया। वहाँ उसको खाने के लिये केवल एक डबल रोटी का टुकड़ा और पीने के लिये केवल एक गिलास पानी रोज मिलता था।

पर जेलर ने यह देख कर कि यह कैदी कितना अच्छा आदमी था वह दूसरे कैदियों के खाने में से कुछ खाना निकाल कर उसको दे दिया करता था।

इसमें बस अब सबसे ज़्यादा परेशानी डौन जियूसैप को यह थी कि वह अपनी बहिन को एक लाइन भी नहीं लिख सकता था।

क्योंकि जेलर उसके ऊपर मेहरबान था इसलिये एक दिन उसने जेलर से एक प्रार्थना की — "क्या तुम मुझे मेरी बहिन को एक छोटी सी चिट्ठी लिखने दोगे? फिर चाहो तो तुम खुद ही उसको डाकखाने में डाल देना।"

जेलर एक बड़े दिल वाला आदमी था सो उसने उसको अपनी बहिन को एक चिट्ठी लिखने की इजाज़त दे दी। डौन जियूसैप ने अपनी बहिन को एक चिट्ठी लिखी और उसमें उसने वह सब लिखा जो वहाँ हो रहा था और कैसे वह उसकी वजह से मरने वाला था।

उसने चिट्ठी लिख कर जेलर को दे दी और जेलर ने उससे वह चिट्ठी ले कर डाकखाने में डाल दी।

उधर बहिन ने जब अपने भाई के बारे में अब तक कुछ नहीं सुना था तो वह उसकी चिट्ठी पा कर बहुत खुश हुई और जल्दी से उसे खोल कर पढ़ा।

चिट्ठी पढ़ कर तो वह रो पड़ी — "ओह मेरा प्यारा छोटा भाई। हमारे ऊपर यह क्या मुसीबत आ पड़ी।" उसने तुरन्त ही सोचना शुरू कर दिया कि वह अपने भाई की कैसे सहायता कर सकती थी।

काफी सोच विचार के बाद उसने अपना घर और अपने घर की सारी चीज़ें बेच दीं और उनसे जितने भी जवाहरात वह खरीद सकती थी खरीद लिये।

उन जवाहरातों को ले कर वह एक सुनार के पास गयी और उससे कहा कि वह उन सारे जवाहरातों को जड़ कर उसके लिये एक जोड़ी जूता बना दे।

फिर उसने एक काली पोशाक खरीदी जिसको शोक के मौके[41] पर पहनते हैं और स्पेन चल दी।

जब वह स्पेन पहुँची तो वहाँ उसने बिगुलों की आवाजें सुनी। उसने देखा कि कुछ सिपाही लोग एक आदमी की आँखों पर पट्टी बाँध कर उसे फाँसी के तख्ते की तरफ लिये जा रहे हैं।

[41] In Christians people wear black clothes on the occasion of burial ceremony.

अपनी काली पोशाक पहने हुए, एक पैर में मोजा पहने हुए और दूसरे पैर में एक रत्न जड़ा जूता पहने हुए वह उस भीड़ में चिल्लाती हुई घुस गयी — "मैजेस्टी रहम करिये, मैजेस्टी रहम करिये।"

एक इतनी सुन्दर लड़की को काली शोक वाली पोशाक पहने, एक पैर में केवल मोजा पहने और दूसरे पैर में केवल एक रत्न जड़ा जूता पहने देख कर भीड़ के लोगों ने उसके लिये अन्दर जाने के लिये जगह छोड़ दी।

राजा ने उसकी बात सुनी। उसने अपने सिपाहियों को कहा कि वह उस लड़की को कुछ न कहें और उसको उसके पास तक आने दें। उसने उस लड़की से पूछा कि क्या बात है। उसको क्या चाहिये।

वह लड़की बोली — "रहम करें और न्याय करें मैजेस्टी, रहम करें और न्याय करें।"

"हम वायदा करते हैं कि हम न्याय करेंगे। बोलो।"

लड़की बोली — "मैजेस्टी, आपके राज्य का एक कुलीन आदमी मेरे साथ बात कर के मेरा एक ऐसा जूता जिसमें हीरे जवाहरात जड़े थे चोरी कर के ले गया है।" कहते हुए उसने राजा को अपने पैर में पहना हुआ दूसरा जूता दिखा दिया।

यह देख कर राजा की तो बोलती बन्द हो गयी। उस कुलीन आदमी को बुलवाया गया।

उसने उस कुलीन आदमी की तरफ देखा और उससे पूछा — “तुम इतनी नीच हरकत कैसे कर सके ओ कुलीन आदमी? तुमने तो उससे बातचीत करने के बाद उसका जूता ही चुरा लिया और अब तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम मेरे सामने खड़े हुए हो?”

वह कुलीन आदमी तो अब जाल में फँस चुका था। उसको झूठ बोलना ही पड़ा। उसने तुरन्त जवाब दिया — “पर मैजेस्टी, इस लड़की को तो मैंने कभी देखा ही नहीं।”

लड़की बोली — “इसका क्या मतलब है कि तुमने मुझे कभी देखा ही नहीं है। तुम जो कुछ कह रहे हो सोच समझ कर कहो।”

वह कुलीन आदमी बोला — “मैं कसम खाता हूँ मैंने इस लड़की को पहले कभी नहीं देखा।”

लड़की फिर बोली — “अगर ऐसा है तो तुमने पहले यह क्यों कहा था कि तुमने मुझसे बातचीत की है?”

“पर मैंने यह कहा ही कब?”

“यह सब तुमने तब कहा था जब तुमने यह कसम खायी थी कि तुम डौन जियूसैप की बहिन को जानते हो और तुमने उससे बातें की हैं। क्या तुमने वह सब उसको मारने के लिये नहीं कहा था?”

उसके बाद उसने राजा को बताया कि वह डौन जियूसैप की बहिन थी।

उस कुलीन आदमी को अपना जुर्म कुबूल करना ही पड़ा। बहिन को बेकुसूर देख कर राजा ने डौन जियूसैप को छोड़ दिया और उसे अपने पास बिठा लिया।

और उसके बदले उस कुलीन आदमी की ऑखों पर पट्टी बॉध कर उसको फॉसी के तख्ते की तरफ ले जाया गया। दोनों भाई बहिनों के आपस में गले मिल कर खुशी के ऑसू निकल आये।

राजा ने हुक्म दिया — "सिर काट दो इस कुलीन आदमी का।" और उस कुलीन आदमी का सिर वहीं उसी समय काट दिया गया।

राजा उन भाई बहिन को साथ लेकर महल लौटा और बहिन की सुन्दरता को देख कर उसने उससे शादी कर ली।

5 लॅगड़ा शैतान[42]

एक बार नरक में एक लॅगड़ा शैतान रहता था। लोग मरते थे और सीधे नरक जाते थे और लॅगड़े शैतान के सामने पहुँचते थे।

वह उनसे पूछता — "तुम यहाँ क्यों आये हो? तुम लोग यहाँ नीचे[43] की दुनियाँ में आते ही क्यों हो?"

तो मरे हुए लोग जवाब देते — "स्त्रियों की वजह से।"

रोज रोज लाखों बार यह जवाब सुनते सुनते लॅगड़े शैतान के दिल में एक उत्सुकता जागी और जागी एक स्त्री को रखने की इच्छा। कि यह सब क्या था जिसकी सारे लोग बात करते थे।

सो एक दिन उसने एक नाइट[44] का वेश बनाया और पलेरमो[45] की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर वह इधर उधर घूमने लगा तो वहाँ उसको छज्जे पर खड़ी एक लड़की दिखायी दे गयी। वह लड़की उसको बहुत पसन्द आ गयी सो वह वहीं उसके आस पास घूमने लगा।

वह जितना ज़्यादा उस सड़क पर घूमता वह उस लड़की की तरफ उतना ही ज़्यादा खिंचता जाता। आखिर वह उसके घर चला गया और उसके पिता से अपनी शादी के लिये उसका हाथ माँगा।

---

[42] Lame Devil. Tale No 162. A folktale from Italy from its Palermo area.
[43] Translated for the word "Underworld" or "Hell"
[44] Knight - a knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity
[45] Palermo is an area on the Sicily Island of Italy.

उसको दहेज की तो जरूरत नहीं थी। बस वह तो उसका हाथ पकड़ कर उतने ही कपड़ों में उसको ले जाना चाहता था जितने उस की पीठ पर आ सकें।

पर उसकी एक शर्त थी कि वह वह हर चीज़ माँग सकती थी जो वह चाहेगी और वह भी तबसे ही जबसे उसकी सगाई हो जायेगी और तभी तक जब तक उनकी शादी नहीं होती। क्योंकि जब उनकी शादी हो जायेगी उसके बाद वह उसकी कोई माँग नहीं सुनेगा।

लड़की राजी हो गयी और उस नाइट ने उसके ऊपर भेंटों और कपड़ों की बौछार कर दी। वे सब इतने सारे थे कि उसकी ज़िन्दगी भर के लिये काफी थे। फिर उनकी शादी हो गयी।

एक बार एक थियेटर में बहुत ही बढ़िया नाटक आया तो वहाँ वे दोनों उसको देखने के लिये पहली बार साथ साथ गये।

अब धरती के लोगों को तो पता है कि स्त्रियाँ किस तरीके से बर्ताव करती हैं पर उस बेचारे नरक के शैतान को क्या पता। वहाँ उस लड़की ने एक मारकिस[46] की पोशाक और उसके ओढ़ने पहनने का ढंग देखा।

एक काउन्टैस[47] का गहना देखा जो उसको बहुत सुन्दर लगा।

---

[46] Marquis - A marquis is a nobleman of hereditary rank in various European peerages and in those of some of their former colonies.

[47] Countess – Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

एक स्त्री का टोप देखा जैसा कि उसके पास नहीं था।

हालाँकि उसके पास तीन सौ टोप थे पर वैसा टोप नहीं था जैसा उस स्त्री के पास था। उस टोप को देख कर उसको लगा कि उसके पास भी वैसा ही एक टोप होना चाहिये।

पर वह क्या करती। वह तो अपने पति से इस बात पर राजी हो चुकी थी कि वह शादी के बाद उससे कुछ नहीं माँगेगी। सो यही सोच कर वह कुछ दुखी सी हो गयी।

पति ने जब उसको कुछ अनमना देखा तो उससे पूछा — "रोज़ीना[48], क्या बात है तुम कुछ अनमनी सी हो? कोई बात है तो तुम मुझसे कहो न।"

रोज़ीना बोली — "नहीं नहीं, कुछ नहीं। कोई बात नहीं है।"

लंगड़ा शैतान बोला — "नहीं, कुछ तो है जो तुम मुझसे छिपा रही हो। तुम कुछ ठीक नहीं दिखायी दे रहीं। क्या बात है बोलो न।"

रोज़ीना ने उसे यकीन दिलाते हुए कहा — "मेरा यकीन मानो ऐसी कोई बात नहीं है।

लँगड़ा शैतान फिर बोला — "नहीं नहीं देख लो, अगर कुछ बात है तो मुझे बताओ न।"

जब लँगड़े शैतान ने कुछ ज़रा ज़्यादा ही ज़ोर दिया तो रोज़ीना बोली — "अगर तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो। यह ठीक नहीं

---

[48] Rosina – name of the girl the Satan married

है कि एक बैरनैस[49] के पास एक खास तरीके का टोप हो और वैसा टोप मेरे पास न हो और मैं उसको तुमसे माँग भी न सकूँ क्योंकि मेरी शादी हो चुकी है। यह बात है।"

यह सुन कर वह लँगड़ा शैतान तो पटाखे की तरह फूटा — "इसी लिये वे आदमी लोग बेचारे ठीक कहते थे कि वे स्त्रियों की वजह से नरक आते हैं। अब मुझे पता चला।"

वह उसको वहीं थियेटर में छोड़ कर वहाँ से चला गया। वह नरक वापस आ गया और अपने एक साथी से वह सब बताने गया जो कुछ उसको अपनी पत्नी से बात करने के बाद उसको लगा।

वह सब सुन कर उसके साथी शैतान ने कहा कि उसको भी शादी देखनी है कि वह कैसी होती है। उसको अपनी पत्नी के लिये किसी राजा की बेटी चाहिये थी।

वह यह देखना चाहता था कि क्या वही कहानी सारे परिवारों में दोहरायी जाती है जो उसके साथी के परिवार में हुई थी।

लँगड़े शैतान ने कहा — "हाँ हाँ जाओ, कोशिश करो। वैसे क्या तुम्हें पता है कि हम लोग कैसे काम करते हैं? मैं ऐसा करूँगा कि मैं स्पेन के राजा की बेटी के शरीर में घुस जाऊँगा। जब उसके शरीर में एक शैतान होगा तो वह बीमार पड़ जायेगी।

[49] Baroness – Baron is a title of honor, often hereditary, and ranks as one of the lower titles in the various nobility systems of Europe. The female equivalent is Baroness.

फिर राजा घोषणा करवायेगा – "जो कोई भी मेरी बेटी को ठीक कर देगा मैं अपनी बेटी की शादी उसी से कर दूँगा। तब तुम एक डाक्टर का रूप रख कर आना और जब मैं तुम्हारी आवाज सुनूँगा तो मैं उसका शरीर छोड़ कर चला जाऊँगा और वह ठीक हो जायेगी।

राजा को लगेगा कि उसे तुमने ठीक किया है सो वह अपनी बेटी की शादी तुमसे कर देगा। फिर तुम राजा बन जाओगे। यह ठीक है न तुम्हारे लिये?"

"हॉ यह ठीक है।"

सो उन लोगों ने इसी योजना पर काम किया और फिर जैसा उन्होंने प्लान किया था वैसा ही हुआ – पर ऐसा केवल तभी तक चला जब तक लॅगड़े शैतान का दोस्त डाक्टर के वेश में राजकुमारी के पास तक लाया गया।

जैसे ही वह दोस्त शैतान उस राजकुमारी के पास अकेला रह गया तो उसने कहना शुरू किया — "भाई लॅगड़े शैतान, भाई मैं हूँ तुम्हारा दोस्त। अब तुम बाहर आ जाओ और राजकुमारी को ठीक होने दो। ओ लॅगड़े शैतान, तुम सुन रहे हो न?"

पर लोगों को शैतानों के वायदों से बड़ा सावधान रहना चाहिये। लॅगड़े शैतान ने अपने दोस्त शैतान की आवाज सुनी तो सही पर वह बोला — "क्या? क्या कह रहे हो तुम? हॉ हॉ मैं यहॉ आराम से हूँ तो फिर मैं यहॉ से क्यों जाऊँ?"

दोस्त शैतान बोला — "पर भाई तुमने तो मुझसे वायदा किया था कि तुम इसको छोड़ कर चले जाओगे। क्या तुम मुझसे मजाक कर रहे हो? तुम्हें मालूम है न कि राजा उनके साथ क्या करता है जो राजकुमारी को ठीक नहीं कर पाते।

राजा उनका सिर काट देता हैं जो राजकुमारी को ठीक नहीं कर पाते। भाई शैतान, मेहरबानी कर के बाहर आ जाओ वरना मैं बेमौत मारा जाऊँगा।"

लॅगड़ा शैतान बोला — "मैं इस समय जहॉ हूँ वहीं ठीक हूँ और तुम मुझे वहॉ से हटने को कह रहे हो?"

दोस्त शैतान ने फिर उससे कहा — "तुम क्या बात कर रहे हो शैतान भाई, मेरी तो ज़िन्दगी दॉव पर लगी है।"

लॅगड़ा शैतान बोला — "तुम मुझसे बात नहीं करो। तुम बस कोशिश करते रहो। मैं यहॉ से आग लगने पर भी नहीं जाने वाला। मैं यहॉ बहुत आराम से हूँ।"

उस बेचारे दोस्त शैतान ने लॅगड़े शैतान से बहुत मिन्नतें कीं कि वह राजकुमारी को छोड़ दे पर उस लॅगड़े शैतान ने उस राजकुमारी को छोड़ा ही नहीं।

जितना समय उस डाक्टर को दिया गया था वह अब खत्म होने को आ रहा था इसलिये वह डाक्टर शैतान राजा के पास गया और उससे बोला — "मैजेस्टी, आपकी बेटी को ठीक करने का मेरे पास

अब एक ही उपाय बचा है और वह यह कि आप अपने लड़ाई के जहाज़ से तोप चलवायें।[50]"

राजा अपनी खिड़की पर गया और अपने लड़ाई के जहाज़ को तोप चलाने का हुक्म दिया।

उधर लॅगड़ा शैतान राजकुमारी के अन्दर से कुछ देख नहीं पाया तो उसने अपने दोस्त से पूछा — "इन तोपों का क्या मतलब होता है शैतान भाई?"

उसका दोस्त शैतान बोला — "एक जहाज़ बन्दरगाह पर आ रहा है सो वे लोग उसके स्वागत में तोपें छोड़ रहे हैं।"

लॅगड़े शैतान ने फिर पूछा — "उस जहाज़ में कौन आ रहा है?"

दोस्त शैतान खिड़की पर गया और बाहर झॉक कर बोला — "शायद तुम्हारी पत्नी आ रही है।"

लॅगड़े शैतान ने कहा — "क्या? मेरी पत्नी आ रही है? बाप रे मेरी पत्नी? तो मैं यहॉ से निकल रहा हूॅ। बस अभी अभी निकल रहा हूॅ। मुझे तो उसकी खुशबू भी नहीं अच्छी लगती।"

तुरन्त ही राजकुमारी के मुॅह से आग की एक लकीर सी निकली और वह लॅगड़ा शैतान उसमें से निकल गया। उसके निकलते ही राजकुमारी ठीक हो गयी।

[50] That he should start fire cannons from his frigates.

राजकुमारी के ठीक होते ही दोस्त शैतान राजा से ज़ोर ज़ोर से चिल्ला कर बोला — “मैजेस्टी, राजकुमारी ठीक हो गयी। मैजेस्टी, राजकुमारी ठीक हो गयी।”

राजा तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। वह बोला — “मेरी बेटी और मेरा ताज अब दोनों तुम्हारे हैं।” और इस तरह उस दोस्त शैतान का दुख शुरू हो गया।

6 तीन व्यापारियों के तीन बेटों की तीन कहानियाँ[51]

एक बार तीन व्यापारी थे जिनके तीन बेटे थे। तीनों आपस में बड़े अच्छे दोस्त थे। एक दिन उन तीनों ने साथ साथ शिकार पर जाने का प्रोग्राम बनाया सो वे लोग उस दिन जल्दी सो गये।

आधी रात को एक लड़के की आँख खुली तो उसने चाँद देखा तो उसको लगा कि वह तो सूरज है। सो उसने अपने शिकारी वाले कपड़े पहने अपने कुत्तों को साथ लिया और अपने दोस्तों को जगाने चल दिया।

उसके दोनों दोस्त भी जाग गये और इस तरह तीनों रात में ही शिकार के लिये चल दिये। आसमान में बादल छाये थे सो बीच में बारिश भी होने लगी।

पर उन लोगों को कोई ऐसा घना पेड़ नहीं मिला जिसके नीचे वे लोग बारिश से बचने के लिये खड़े भी हो जाते। हाँ कुछ दूर पर उनको एक महल दिखायी दे गया।

वे वहाँ पहुँचे और जा कर उस महल का दरवाजा ज़ोर ज़ोर से खटखटाया।

[51] Three Tales by Three Sons of Three Merchants. Tale No 163. A folktale from Italy from its Palermo area.

एक नौकरानी ने दरवाजा खोला और बोली — "यह कोई समय है दरवाजा खटखटाने का? कुछ मालूम भी है कि इस समय क्या बजा है? यह आधी रात का समय है।"

शिकारियों ने पूछा — "क्या हमको यहाँ रुकने की जगह मिलेगी? बाहर बहुत तेज़ बारिश है?"

नौकरानी बोली — "ठहरो मैं अपनी मालकिन से पूछ आऊँ।"

वह अपनी मालकिन के पास गयी और अपनी मालकिन से कहा — "मैम, दरवाजे पर तीन आदमी खड़े हैं। तीनों पानी में खूब भीगे हैं। घर में रुकने के लिये जगह माँगते हैं। क्या मैं उनको अन्दर बुला लूँ?"

"हाँ, उनको अन्दर बुला लो।"

वे लोग अन्दर आ गये और महल की मालकिन के सामने आ कर बैठ गये। उस महल की मालकिन एक सुन्दर विधवा थी। वह बोली — "अपने भीगे कपड़े उतार कर ये सूखे कपड़े पहन लो। ये मेरे पति के कपड़े हैं। और कुछ खा पी भी लो।

फिर तुम लोग मुझे एक एक कहानी सुनाओगे – एक ऐसी कहानी जो तुम्हारे अपने साथ घटी हो। तुम लोगों में से जिसकी भी कहानी सबसे ज़्यादा रोमांच पैदा करने वाली होगी मैं उसी से शादी कर लूँगी।"

उन लोगों ने सबसे पहले तो अपने कपड़े बदले, फिर कुछ खाया और फिर सबसे बड़े लड़के ने सबसे पहले अपनी कहानी सुनानी शुरू की —

"तो सुनिये मैम। मैं एक व्यापारी का बेटा हूँ। एक बार मेरे पिता ने मुझे किसी काम से भेजा तो रास्ते में मुझे एक आदमी मिला जिसने अपने दोनों कान कस कर ढक रखे थे।

मैंने उस आदमी को वहाँ पहले कभी देखा तो नहीं था पर ऐसा लगता था कि वह वहाँ के रास्ते जानता था।

रात हुई तो उसने मुझसे कहा — "आओ मेरे साथ आओ। मुझे एक अच्छी जगह का पता है जहाँ हम लोग सो सकते हैं।"

मैं उसके साथ चल दिया। हम एक अकेले मकान में घुसे और मेरे घुसते ही उस मकान का दरवाजा बन्द हो गया। मैं एक बहुत बड़े कमरे में खड़ा था जिसमें लोहे का एक बड़ा पिंजरा रखा हुआ था। वह पिंजरा आदमियों से भरा हुआ था।

मैंने पिंजरे में बन्द उन आदमियों से पूछा — "कौन हो तुम लोग?"

उन्होंने मुझे इशारे से बताया कि वे तो पिंजरे में बन्द हैं ही मगर बाद में मैं भी उनके साथ साथ उस पिंजरे में बन्द कर दिया जाऊँगा। पर वे यह बात बोल नहीं सकते थे क्योंकि एक बड़े साइज़ का आदमी[52] वहीं खड़ा उनकी चौकीदारी कर रहा था।

---

[52] Translated for the word "Giant"

यह वही आदमी था जो आदमियों को पकड़ता था और यहाँ ला कर बन्द कर देता था। मुझे भी उस बड़े साइज़ के आदमी ने ला कर पिंजरे में बन्द कर दिया।

मैंने अपने साथी कैदियों से पूछा कि "अब आगे क्या होगा।"

उन्होंने कहा "चुप रहो। रोज सुबह यह बड़े साइज़ वाला आदमी हममें से एक को खा जाता है। इसलिये हम बस चुपचाप बड़े डरे डरे से रहते हैं कि पता नहीं कल किसकी बारी है।

जब वह बड़े साइज़ वाला आदमी हमारे पिंजरे के पास आता है तो हम लोग एक दूसरे के और पास आ जाते हैं।"

उन्होंने आगे बताया कि समय समय पर जब वह बड़े साइज के आदमी का मन नहीं लगता तो वह अपना गिटार उठाता है और उसको बजाने लगता है।

एक बार जब वह गिटार बजा रहा था तो उसका तार टूट गया तो वह बोला — "अगर पिंजरे में से कोई मेरे गिटार का तार ठीक कर देगा तो मैं उसको आजाद कर दूँगा।"

उसी समय मैंने कहा कि मैं गिटार बनाता हूँ, मेरे पिता भी गिटार बनाते हैं। यहाँ तक कि मेरे बाबा और मेरे कई रिश्तेदार भी गिटार बनाते हैं।"

उस बड़े साइज़ के आदमी ने कहा — "अच्छा अभी पता चल जाता है।" और उसने मुझे अपना गिटार थमा दिया।

मैंने उसका गिटार लिया उसके तार को कहीं से कसा कहीं से ढीला किया और ठीक कर दिया। उस बड़े साइज के आदमी ने मेरा सिर थपथपाया और मुझे एक ॲगूठी दे कर कहा — "इस ॲगूठी को पहन लो तुम आजाद हो जाओगे।"

जैसे ही मैंने वह ॲगूठी पहनी तो मैंने अपने आपको पिंजरे के बाहर पाया। अपने आपको पिंजरे से बाहर देख कर तो मैं बहुत खुश हो गया।

बस मैं तुरन्त ही वहॉ से भाग लिया और खेतों से होता हुआ भागता चला गया पर आश्चर्य कि मैं फिर से उस बड़े साइज़ के आदमी के मकान के दरवाजे पर ही खड़ा था।

"अरे यह क्या? मैं तो वहीं आ गया जहॉ से मैं चला था।" सो अबकी बार मैं दूसरी दिशा में भागा और भागता ही चला गया पर मैं तो फिर से वहीं उसी के दरवाजे पर आ गया था।

मैं रो पड़ा "मैं यहॉ से कैसे बचूॅ?"

उसी समय मुझे लगा कि किसी ने श श श कर के मेरा ध्यान खींचने की कोशिश की तो मैंने ऊपर देखा। वहॉ एक खिड़की पर एक छोटी सी लड़की बैठी हुई थी। उसने बहुत ही धीरे से कहा "अगर तुम यहॉ से भागना चाहते हो तो यह ॲगूठी हाथ में से निकाल कर फेंक दो।"

मैंने उसको अपनी ॲगली में से निकालना चाहा पर वह नहीं निकली। मेरे मुॅह से निकला "मैं इसको नहीं निकाल पा रहा।"

"तो अपनी उँगली काट डालो पर इसको निकाल डालो। जब तक तुम यह अँगूठी पहने रहोगे तब तक तुम बार बार यहीं आते रहोगे। जल्दी करो।"

"पर मेरे पास तो चाकू भी नहीं है।"

उस बच्ची ने तुरन्त ही एक चाकू नीचे फेंक दिया और बोली "यह लो चाकू।"

दरवाजे के बराबर में एक खम्भे की तली थी। वहीं मैंने अपना हाथ रखा और उस चाकू के एक ही वार से मैंने अपनी अँगूठी वाली उँगली काट दी। उसके बाद ही मैं अपने घर वापस लौट सका।"

जब तक वह लड़का अपनी कहानी सुनाता रहा वह विधवा बेचारी "ओह बेचारे तुम, ओह बेचारे तुम" ही करती रही। कहानी खत्म होने पर ही उसने चैन की साँस ली।

अब उसने दूसरे शिकारी की तरफ देखा तो उसने अपनी कहानी शुरू की —

"मैम मैं भी एक व्यापारी का बेटा हूँ। एक बार ऐसा हुआ कि मेरे पिता ने किसी दूसरे व्यापारी को देने के लिये मुझे कुछ पैसे दिये। मैं समुद्र में जहाज़ ले कर निकल गया कि थोड़ी ही देर में वहाँ बहुत ज़ोर का तूफान आ गया।

इस तूफान ने हमको मजबूर कर दिया कि हम अपना अपना सामान समुद्र में फेंक दें सो हमने अपना अपना सामान समुद्र में फेंक

दिया। इस तूफान के बाद समुद्र बिल्कुल शान्त हो गया और हम समुद्र के बीच में ही चलते रहे।

पर इस बीच हमारा खाने पीने का सामान जल्दी ही खत्म होने लगा और हमारे पास खाने के लिये कुछ भी नहीं बचा।

एक दिन जहाज़ का कप्तान बोला — "भाइयो अब खाने का अकाल पड़ गया है। खाना बिल्कुल भी नहीं है।

इसलिये हम लोग अब अपने अपने नाम एक परची पर लिखेंगे और रोज सुबह उन परचियों में से एक परची निकाली जायेगी। जिसके नाम की परची निकलेगी उसको मार दिया जायेगा और उसका मॉस बचे हुए लोगों को खिला दिया जायेगा।"

ज़रा उस डर के बारे में सोचिये मैम जो यह घोषणा सुन कर हम हर एक के ऊपर छाया होगा। पर अगर हम भूखे नहीं मरना चाहते तो इसके अलावा और हो ही क्या सकता था।

सो हर सुबह एक परची निकाली जाती और जिसके नाम की भी परची निकलती उसको मरना पड़ता। उसको काटा जाता और बचे हुए लोगों को खिला दिया जाता।

अन्त में केवल दो आदमी बच रहे – एक कप्तान और एक मैं। अगले दिन फिर परची निकाली गयी। मैंने सोच रखा था कि अगर कप्तान के नाम की परची निकली तो मैं उसको मार दूँगा।

पर अगर मैं वह बदनसीब निकला तो मैं अपनी ज़िन्दगी के लिये लड़ूँगा।

परची कप्तान के नाम की निकली। वह बेचारा मेरे सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया और बोला — “मैं हाजिर हूँ मेरे भाई।”

मुझे उसको मारने में बहुत दुख लग रहा था पर मैंने अपनी हिम्मत बटोरी और उसे मार दिया। मैंने उसके शरीर के चार हिस्से किये।

उसके शरीर के एक चौथाई हिस्से को मैंने रस्सी पर टॉग दिया। एक गरुड़[53] नीचे उतरा और उस चौथाई हिस्से को ले कर उड़ गया।

फिर मैंने उसके शरीर का दूसरा चौथाई हिस्सा भी वही टॉग दिया तो वही गरुड़ दोबारा आया और उसके उस दूसरे चौथाई हिस्से को भी ले गया। मैं बहुत परेशान हुआ।

फिर उसके शरीर का तीसरा चौथाई हिस्सा भी वही गरुड़ ले कर चला गया। अब केवल आखिरी चौथाई हिस्सा बचा था। अब जैसे ही गरुड़ उसको भी लेने के लिये नीचे उतरा तो मैंने उसके पैर पकड़ लिये।

पर वह चिड़िया तो आसमान की तरफ उड़ गयी और वहॉ जा कर बहुत ऊॅची उड़ने लगी। मैं उसके पैर पकड़े पकड़े उड़ रहा था और अपनी जान की भीख मॉग रहा था।

[53] Translated for the word “Eagle”. See the picture above.

जब वह एक पहाड़ के ऊपर से उड़ी तो मैंने उसके पैर छोड़ दिये। किसी तरह थोड़ा इधर उधर हो कर मैं चौरस जमीन पर गिर गया और आखिरकार घर आ गया।"

वह विधवा फिर बोली — "ओह तुम बेचारे। यह तो वाकई में बहुत ही डरावना अनुभव था। अब तुम्हारी बारी है।" कह कर उसने तीसरे लड़के की तरफ देखा।

तीसरे लड़के ने शुरू किया —

"मैम मेरी कहानी तो आपके रोंगटे ही खड़े कर देगी। मैं भी एक व्यापारी का बेटा हूँ। एक बार मुझे भी मेरे पिता ने व्यापार के एक काम से बाहर भेजा।

जब रात हुई तो मैं एक सराय में रुका। वहाँ मैंने खाना खाया और फिर अपने कमरे में सोने में चला गया। वहाँ जा कर प्रार्थना करने के लिये मैं अपने बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठा जैसा कि मैं हर रात करता था।

प्रार्थना करते समय बीच में एक ऐसा समय आता है जब मुझे फर्श चूमना होता है सो जैसे ही मैं फर्श चूमने के लिये नीचे झुका तो बिस्तर के नीचे मैंने क्या देखा कि वहाँ एक आदमी पड़ा था।

मैंने उसको पास से देखा तो वह तो मरा हुआ था। मैंने सोचा कि यह आदमी शायद पिछली रात मारा गया होगा और मुझे लगा कि जो कोई भी इस बिस्तर पर सोता होगा उसका शायद यही हाल होता होगा।

तो फिर मैंने क्या किया कि मैंने उस लाश को उठाया और उसको बिस्तर पर लिटा दिया और मैं खुद उस बिस्तर के नीचे लेट गया और अपनी सॉस रोक ली।

एक या दो घंटा बीता होगा कि मैंने दरवाजा खुलने की आवाज सुनी। मैंने देखा कि सराय का मालिक अपने हाथ में चाकू लिये अन्दर आया और उसका लड़का नौकर एक हथौड़ा। सराय के मालिक की पत्नी उनके पीछे पीछे एक लैम्प लिये आ रही थी।

उन्होंने कहा — "लगता है कि यह तो गहरी नींद सो रहा है। इसको सोने दो।"

फिर सराय के मालिक ने अपना चाकू वाला हाथ उठाया और उस लाश के सिर के ऊपर रखा और उसके नौकर लड़के ने उसके ऊपर हथौड़ा मारा।

पीछे से सराय के मालिक की पत्नी बोली — "अब इस लाश को उठा कर पलंग के नीचे रख दो और पिछली रात वाली लाश को हम खिड़की से बाहर फेंक देते हैं।"

खिड़की के नीचे गहरी खाई थी। फेंकने की बात सुन कर ही मुझे लगा कि मेरे शरीर की सारी हड्डियॉ चकनाचूर हो गयी हैं।

पर तभी सराय के मालिक की पत्नी बोली — "ऐसा करते हैं कि अभी हम रात भर के लिये सब कुछ ऐसे ही छोड़ देते हैं। कल सुबह देखेंगे कि हम क्या कर रहे हैं।"

सो वे सब कुछ वैसा ही छोड़ कर वहाँ से चले गये और मैंने चैन की साँस ली। मैं दिन निकलने का इन्तजार करता रहा।

जब सूरज निकल आया मैं खिड़की पर गया और शहर वालों को इशारा किया जो उस खाई के उस पार थे। उन्होंने वहाँ से सिपाही भेज दिये जिन्होंने मुझे वहाँ से आजाद कराया और सराय के मालिक को गिरफ्तार कर लिया।"

वह विधवा बेचारी सोच रही थी किस लड़के की कहानी सबसे ज़्यादा रोमांचक थी। तुम्हारा तो पता नहीं पर वह इस बारे में अभी तक सोच ही रही है।

सोचते सोचते वह विधवा बहुत बुढ़िया हो गयी है और वे लड़के भी बहुत धीरज वाले हैं कि वे तीनों अभी भी उसके नतीजे का इन्तजार कर रहे हैं।

7 फाख्ता लड़की[54]

एक बार एक लड़का बेचारा अपनी ज़िन्दगी से बहुत परेशान था क्योंकि वह बहुत गरीब था।

एक दिन जब वह बहुत ही ज़्यादा परेशान था यानी कि उसके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं था तो वह समुद्र के किनारे जा कर बैठ गया। उसको लगा कि वहाँ बैठ कर वह अपनी समस्या का हल कुछ ज़्यादा अच्छी तरह से सोच सकेगा।

सोचते सोचते उसने अपना सिर ऊपर उठाया तो उसने देखा कि यूनान का एक आदमी[55] उसी की तरफ चला आ रहा है।

उस आदमी ने उससे पूछा — "लड़के, तुम बहुत परेशान दिखायी दे रहे हो क्या बात है?"

"मैं बहुत भूखा हूँ। मेरे पास खाने के लिये कुछ है भी नहीं और कुछ मिलने की आशा भी नहीं है।"

"अरे यह तो कोई बात नहीं हुई। चलो खुश हो जाओ और मेरे साथ आओ। मैं तुमको खाना भी दूँगा, पैसा भी दूँगा और जो कुछ और भी तुम चाहो वह भी मैं तुमको दूँगा।"

उस लड़के ने पूछा — "और इसके बदले में मुझे क्या करना होगा?"

[54] The Dove Girl. Tale No 164. A folktale from Italy from its Palermo area.
[55] A Greek

"कुछ नहीं। बस तुमको मेरे साथ साल में केवल एक बार काम करना पड़ेगा।"

उस लड़के को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ मगर क्योंकि वह भूखा था उसने यह सौदा मंजूर कर लिया। उन दोनों ने फिर एक कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत किये और फिर कुछ दिनों तक उस लड़के को कुछ नहीं करना पड़ा।

एक दिन उस यूनानी ने उसको बुलाया और कहा — "दो घोड़ों पर साज सजाओ[56], हम लोग चल रहे हैं।" उसने सब कुछ तैयार कर दिया और वे दोनों चल दिये।

काफी दूर तक चलने के बाद वे दोनों एक बहुत ही ढालू पहाड़ की तली में आ गये। यहाँ आ कर उस यूनानी ने उस लड़के से कहा कि वह उस पहाड़ की ऊँचाई नापे।

लड़का बोला — "मैं कैसे नापूँ?"

यूनानी बोला — "यह मेरा भेद है।"

लड़का फिर बोला — "पर अगर मैं न करना चाहूँ तो?"

यूनानी बोला — "पर हम लोगों ने कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत किये हैं कि तुम साल में एक बार मेरे लिये काम करोगे। तुम चाहो या न चाहो पर अब वह समय आ गया है जब तुमको मेरे लिये काम

[56] Saddling – when a horse is adorned with all kinds of things – seat, reins etc before riding, it is called Saddling.

करना है। तुम पहाड़ की चोटी पर जाओ और वहॉ जो भी पत्थर तुमको दिखायी दें उनको वहॉ से नीचे फेंक दो।"

यह कह कर उस यूनानी ने एक घोड़ा उठाया, उसे मारा, उसकी खाल निकाली और उस लड़के को उस खाल में घुसने को कहा। वह लड़का उस खाल के अन्दर घुस गया।

तभी एक गरुड़[57] जो ऊपर उड़ रहा था ऊपर से ही यह सब सुन रहा था। उसने ऊपर से कूद लगायी और घोड़े की खाल को अपने पंजों में ले कर उड़ गया। वह गरुड़ उस पहाड़ की चोटी पर जा कर बैठ गया और वहॉ वह लड़का उस खाल में से बाहर निकल आया।

लड़के को पहाड़ की चोटी पर पहुँचा देख कर यूनानी नीचे से चिल्लाया — "अब तुम वहॉ बिखरे पत्थर नीचे फेंक दो।"

लड़के ने अपने चारों तरफ देखा तो वहॉ पत्थर तो उसे कोई नजर नहीं आया वहॉ तो सब जगह हीरे ही हीरे बिखरे पड़े थे और सोने के बहुत सारे टुकड़े पड़े थे।

वे सोने के टुकड़े भी कोई छोटे मोटे टुकड़े नहीं थे बल्कि पेड़ के तने के टुकड़े जितने बड़े बड़े टुकड़े थे।

उसने फिर नीचे देखा तो उसको वह यूनानी एक चींटी जैसा दिखायी दे रहा था और उससे बराबर कह रहा था — "फेंको न, वे पत्थर मेरे पास फेंको।"

---

[57] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

लड़के ने सोचा अगर मैं इसके ऊपर ये पत्थर फेंकता हूँ तो यह मुझे इस पहाड़ की चोटी पर ही छोड़ कर चला जायेगा और मेरे पास नीचे उतरने का कोई तरीका भी नहीं होगा।

इससे तो अच्छा यह है कि मैं इन पत्थरों को अपने पास ही रख लूँ और यहाँ से खुद ही निकलने की कोशिश करूँ। उसने उस पहाड़ की चोटी को इधर से उधर से देखा तो उसकी निगाह एक ढक्कन पर पड़ी जो उसको किसी कुँए का सा रास्ता दिखायी दिया।

उसने वह ढक्कन उठाया और उसके नीचे बने छेद में घुस गया। और लो वह तो एक बहुत ही शानदार महल में पहुँच गया। वह महल जादूगर सवीनो[58] का था।

जैसे ही उस जादूगर ने उस लड़के को देखा तो उसने उससे पूछा —"तुम यहाँ मेरे पहाड़ पर क्या कर रहे हो? मैं तुमको भून कर खा जाऊँगा। मुझे लगता है कि यहाँ तुम उस चोर यूनानी के लिये मेरे पत्थर चुराने के लिये आये हो।

हर साल वह मेरे साथ यही चाल चलता है और हर साल मैं उसके भेजे हुए आदमी की दावत खाता हूँ।"

यह सुनते ही उस लड़के का तो सारा शरीर ही कॉप गया कि आज वह किस मुसीबत में फँसा।

[58] Wizard Savino

कॉपते हुए पैरों से वह लड़का जादूगर के सामने घुटनों के बल बैठ गया और बोला — "मैं कसम खाता हूँ कि मेरे पास कोई पत्थर नहीं है।"

सवीनो बोला — "अगर तुम ठीक कह रहे हो तो मैं तुमको नहीं खाऊँगा।" फिर वह ऊपर गया, अपने पत्थर गिने और देखे कि वह पूरे थे कि नहीं।

उनको गिन कर वह बोला — "तुम ठीक कह रहे हो कि तुम्हारे पास मेरा कोई पत्थर नहीं है। मैं तुमको अपने पास नौकर रखना चाहता हूँ।

तुम्हारा काम यह होगा कि मेरे पास बारह घोड़े हैं। हर सुबह तुम उनको निन्यानवे डंडे मारोगे। पर यह पक्का कर लेना कि उन डंडों के मारने की आवाज मैं अभी जहॉ बैठा हूँ वहॉ से सुन सकूँ। समझ गये न?"

अगले दिन वह लड़का हाथ में एक मोटी सी डंडी ले कर उस जादूगर की घुड़साल में गया। उसको घोड़ों के लिये बहुत अफसोस हो रहा था और उसको यह बात बिल्कुल ही सहन नहीं हो पा रही थी कि वह उन बेकुसूर घोड़ों को क्यों मारे पर वह क्या करता मजबूर था।

तभी एक घोड़े ने पीछे मुड़ कर देखा और बोला — "मेहरबानी कर के हमें मत मारो। पहले हम भी तुम्हारी तरह से नौजवान लड़के थे। इस जादूगर सवीनो ने हमको घोड़ा बना दिया।

तुम ऐसा करो कि यह डंडा तुम जमीन पर मारो और हम तुम्हारे हर डंडा मारने पर चिल्लायेंगे। इससे जादूगर को लगेगा कि जैसे तुम हमको मार रहे हो।"

लड़के को यह सलाह अच्छी लगी सो उसने उस घोड़े की सलाह मान ली। अब वह जादूगर डंडे से मारने की आवाज भी सुन रहा था और घोड़े के चिल्लाने की आवाज भी। इधर वह लड़का घोड़ों को मार भी नहीं रहा था। वह इससे सन्तुष्ट था।

एक दिन एक घोड़े ने उस लड़के से पूछा — "क्या तुम अपनी किस्मत बनाना चाहोगे?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं?"

"तो जाओ बागीचे में चले जाओ। वहॉ तुमको एक सुन्दर सा तालाब दिखायी देगा। हर सुबह बारह फाख्ता वहॉ पानी पीने आती हैं। पहले वे पानी में चली जाती हैं और फिर उसमें से सूरज की तरह चमकती हुई लड़कियों के रूप में बाहर निकल आती हैं।

अपने फाख्ता वाले कपड़े वे एक पेड़ की शाख पर टॉग देती हैं। फिर वे पानी में खेलती हैं और उसके बाद वे अपने फाख्ता वाले कपड़े पहन कर वापस उड़ जाती हैं।

तुम वहॉ जा कर पेड़ों में छिप जाना और जब वे खेल खेल रहीं हों तो उनमें से सबसे सुन्दर लड़की की पोशाक उठा कर अपनी कमीज के अन्दर छिपा लेना।

वह तुमसे कहेगी "मेरी पोशाक दो। मेरी पोशाक दो।" पर तुम उसको उसकी पोशाक मत देना। क्योंकि अगर तुमने उसको उसकी पोशाक दे दी तो वह फिर से फाख्ता बन जायेगी और दूसरी लड़कियों के साथ उड़ जायेगी।"

उस लड़के ने वैसा ही किया जैसा कि उस घोड़े ने उससे करने के लिये कहा था। वह बहुत सुबह ही वहाँ चला गया और एक ऐसी जगह जा कर छिप कर सुबह का और उन लड़कियों का इन्तजार करने लगा जहाँ वे उसको न देख सकें।

कुछ ही देर में उसने देखा कि कुछ फाख्ता वहाँ आ रही थीं। वहाँ आ कर उन्होंने पहले पानी पिया फिर पानी में डुबकी लगायी और पानी में से बारह लड़कियों के रूप में निकल कर बाहर आ गयीं।

वे स्वर्ग की अप्सराऐं लग रहीं थीं। बाहर निकलते ही उन्होंने इधर उधर भागना और खेलना शुरू कर दिया।

कुछ देर बाद ही वह लड़का आगे बढ़ा और उसने एक पोशाक उठा कर अपनी कमीज के अन्दर रख ली। उसी समय सब लडकियों ने अपने फाख्ता वाले कपड़े पहने और फाख्ता बन कर उड़ गयीं।

पर एक लड़की को अपने कपड़े नहीं मिले। उसको अपने सामने वह लड़का दिखायी दिया तो उसने उससे कहा "मेरी पोशाक दो। मेरी पोशाक दो।"

यह सुन कर वह लड़का वहाँ से भाग लिया। वह लड़की भी अपनी पोशाक लेने के लिये उसके पीछे पीछे भागी। घोड़े ने जो सड़क उसको बतायी थी उसी पर कुछ दूर तक भागने के बाद वह अपने घर पहुँच गया।

घर जा कर उसने उस लड़की को अपनी माँ से मिलाया — "माँ यह मेरी बहू है। इसको किसी भी हालत में घर से बाहर नहीं जाने देना।"

पहाड़ से नीचे उतरने से पहले उसने वहाँ पड़े काफी सारे जवाहरात अपनी जेब में भर लिये थे। जैसे ही वह घर पहुँचा वह उनको बेचने के लिये बाहर चला गया और लड़की को अपनी माँ की देखभाल में छोड़ गया।

वह लड़की बेचारी सारा दिन "मेरी पोशाक दो। मेरी पोशाक दो।" चिल्लाती रही और उस लड़के की माँ भी बेचारी परेशान होती रही कि वह उसकी पोशाक कहाँ से दे।

वह भी कहती रही — "हे भगवान, यह लड़की तो मुझे पागल कर देगी। देखती हूँ मुझे अगर इसकी पोशाक कहीं मिल जाती है तो।"

माँ ने सोचा कि उसके बेटे ने उसकी पोशाक शायद किसी आलमारी में रख दी हो सो उसने आलमारी को देखना शुरू किया तो वहाँ उसको वह फाख्ता की पोशाक मिल गयी।

उस पोशाक को उसने इस लड़की दिखा कर पूछा — “क्या यही तुम्हारी पोशाक है?”

उसने अभी वह पोशाक आलमारी में से पूरी तरह से निकाली भी नहीं थी कि उस लड़की ने उसको उसके हाथ से छीन लिया और उसको पहन कर उड़ गयी।

यह सब देख कर तो लड़के की माँ बहुत डर गयी। वह सोचने लगी “अब मैं अपने बेटे को क्या जवाब दूँगी? मैं अपने बेटे को कैसे समझाऊँगी कि उसकी बहू कैसे उड़ गयी?”

तभी घर के दरवाजे की घंटी बजी और उसका बेटा घर आया तो उसने अपनी माँ से उस लड़की के बारे मे पूछा तो माँ ने उसको सब बता दिया।

वह चिल्लाया — “उफ माँ, यह तुमने क्या किया। तुम मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकीं?”

फिर जब वह कुछ शान्त हुआ तो बोला “माँ मुझे आशीर्वाद दो कि मैं उसको ढूँढ सकूँ। मैं उसको फिर से लाने जा रहा हूँ।”

उसने थोड़ी सी डबल रोटी अपने थैले में डाली और चल दिया। जंगल पार कर वह एक ऐसी जगह आ गया जहाँ तीन डाकू आपस में झगड़ रहे थे।

उसको उधर से जाता देख कर डाकुओं ने उसे बुलाया और कहा — “तुम हमारे जज बन जाओ क्योंकि तुम एक बाहर वाले

हो। हम लोगों ने तीन चीज़ें चुरायीं हैं और अब यह बहस कर रहे हैं कि कौन क्या ले। तुम ही हमारा फैसला कर दो।"

"वे चीज़ें क्या हैं।"

"एक बटुआ जिसको जभी भी खोलो वह हमेशा पैसों से भरा ही रहता है। एक जूते की जोड़ी जो हवा से भी तेज़ ले जा सकती है और एक शाल जिसको ओढ़ कर आदमी दूसरों को दिखायी नहीं देता।

लड़का बोला — "अच्छा पहले मुझे यह देखने दो कि तुम जो कह रहे हो वह सच है या नहीं।" कह कर पहले उसने जूते पहने फिर उनका बटुआ उठाया और उसके बाद शाल ओढ़ कर उनसे पूछा — "क्या तुम मुझको देख सकते हो?"

डाकुओं ने जवाब दिया — "नहीं, अब हम तुमको नहीं देख सकते।"

"और अब तुम मुझे कभी देखोगे भी नहीं।"

कह कर वह वहाँ से भाग लिया और जादूगर सवीनो के पहाड़ पर पहुँच गया।

वहाँ जा कर वह फिर से उसी तालाब के पास पेड़ों के पीछे छिप गया और जब वे फाख्ता वहाँ पानी पीने और खेलने आती थीं। जब वे वहाँ आयीं तो उसने उस लड़की के कपड़े वहाँ से फिर से उठा लिये जिस पेड़ की शाख से उसने उनको टाँगा था।

जब वह पानी में खेल चुकी तो वह अपनी पोशाक लेने आयी। पर पोशाक को अपनी जगह न पा कर वह फिर बोली — "मेरी पोशाक दो। मेरी पोशाक दो।"

पर इस बार उस लड़के को कोई डर नहीं था सो वह वहाँ से उसकी पोशाक ले कर भाग लिया और भागता चला आया और अपने घर ला कर उसको आग में डाल दिया।

वह लड़की बोली — "अब ठीक है अब मैं हमेशा तुम्हारे पास रहूँगी और तुम्हारी दुलहिन बनूँगी पर पहले तुम जा कर उस जादूगर सवीनो का गला काट दो और उसकी घुड़साल में बँधे बारह घोड़ों को आदमियों में बदल दो।

तुमको बस इतना करना है कि उन घोड़ों की गरदन पर से तीन बाल खींचने हैं। बाल खींचते ही वे आदमी बन जायेंगे।"

लड़के ने अपना वह शाल ओढ़ा जिससे वह दिखायी नही देता था और सबसे पहले उसने जादूगर सवीनो का गला काटा। फिर उसकी घुड़साल में गया और सब घोड़ों की गरदन पर से तीन तीन बाल खींच कर उन सबको आदमी बना दिया।

फिर उसने वहाँ से जादूगर के सारे जवाहरात इकट्ठे किये और उस लड़की को ले कर घर आ गया। घर आ कर उसने उस लड़की से शादी कर ली। वह लड़की तो स्पेन के राजा की लड़की थी।

8 जीसस और सेन्ट पीटर सिसिली में[59]

जीसस और सेन्ट पीटर की यहाँ छोटी छोटी पाँच लोक कथाऐं दी जा रही हैं जो इटली के सिसिली टापू पर बहुत मशहूर हैं।

1 पत्थरों से रोटी

जब जीसस अपने तेरह अपोसिल्स[60] के साथ दुनियाँ में इधर उधर घूम रहे थे तो एक बार उनके पास खाने के लिये रोटी नहीं थी। सबको बहुत भूख लगी थी।

जीसस ने सबसे कहा — "तुम सब लोग नीचे से एक एक पत्थर उठा लो।" सब अपोसिल्स ने नीचे से एक एक पत्थर उठा लिया। सब अपोसिल्स ने बड़े बड़े पत्थर उठाये जबकि पीटर ने एक सबसे छोटा पत्थर उठाया।

सब फिर अपने सफर पर आगे बढ़ गये।

बड़े बड़े पत्थर उठाने की वजह से सबके पास बोझा था सो सब झुक कर चल रहे थे। पर क्योंकि पीटर के पास बहुत ही छोटा सा पत्थर था इसलिये न तो उसके पास बोझा था और न ही वह झुक कर चल रहा था। वह बड़े आराम से चल रहा था।

[59] Jesus and St Peter in Sicily. Tale No 165. A folktale from Italy from its Palermo area.

[60] Apostles – Jesus Christ had twelve Apostles. See their names at the end of this book.

चलते चलते वे सब एक शहर में आये। वहाँ उन्होंने डबल रोटी खरीदने की कोशिश की पर वहाँ किसी के पास भी डबल रोटी नहीं थी।

तब जीसस बोले — "मैं तुम लोगों को आशीर्वाद दूँगा और तुम्हारे ये पत्थर के टुकड़े डबल रोटी बन जायेंगे।"

कह कर उन्होंने आशीर्वाद दिया और सब अपोसिल्स के पास खाने के लिये खूब सारी डबल रोटी हो गयी। पर क्योंकि पीटर ने पत्थर का एक बहुत ही छोटा टुकड़ा उठाया था तो उसके पास डबल रोटी का एक बहुत ही छोटा सा टुकड़ा था।

पीटर ने जीसस से पूछा — "और मेरा खाना मालिक?"

जीसस बोले — "मेरे भाई, तुमने इतना छोटा सा पत्थर क्यों उठाया? और लोगों ने कितने बड़े बड़े पत्थर उठाये तो देखो कि उनके पास कितना सारा खाना है।"

सेन्ट पीटर बेचारा चुप रह गया। वे फिर आगे चल दिये। आगे चल कर जीसस ने फिर उन सबको पत्थर उठाने को कहा।

इस बार चालाक पीटर ने एक चट्टान उठा ली जिसको वह बहुत मुश्किल से उठा सकता था। उसको ले कर चलने में उसको बहुत परेशानी हो रही थी। पर दूसरे लोगों ने हल्के पत्थर उठाये थे सो वे लोग अपने हल्के पत्थर ले कर आसानी से चल रहे थे।

जीसस ने अपने अपोसिल्स से धीरे से कहा — "देखना अब हम पीटर के ऊपर हँसेंगे।"

चलते चलते वे सब फिर एक शहर में आये। वहॉ तो बहुत सारी डबल रोटियों की दूकानें थीं और उनमें बहुत सारी गरम गरम डबल रोटी ओवन से निकल कर तभी तभी आ रही थीं।

यह देख कर सारे अपोसिल्स ने अपने अपने पत्थर नीचे फेंक दिये और डबल रोटी लेने चल दिये।

सेन्ट पीटर ने जो अपनी चट्टान के बोझ से दोहरा हुआ चला आ रहा था जब डबल रोटी की इतनी सारी दूकानें देखीं तो वह गुस्से में भर कर वहॉ से चला गया और उसने डबल रोटी की तरफ मुड़ कर भी नहीं देखा।

2 एक बुढ़िया को भट्टी में रखना

वहॉ से वे सब फिर आगे चले तो उनको एक आदमी मिला। पीटर उसके पास गया और उससे कहा — "देखो अपने जीसस मालिक आ रहे हैं तुम उनसे कुछ मॉग लो।"

वह आदमी जीसस के पास गया और बोला — "मालिक मेरे पिता बूढ़े हैं और बीमार हैं। उनको ठीक कर दीजिये।"

जीसस ने जवाब दिया — "बुढ़ापे के बोझ का तो कोई भी डाक्टर कुछ भी नहीं कर सकता पर फिर भी तुम ध्यान से सुनो। अगर तुम अपने पिता को किसी भट्टी में डाल दो तो वह एक बच्चा बन कर बाहर आ जायेंगे।"

जैसे ही जीसस ने उससे यह कहा उसने यह कर दिया। वह तुरन्त ही घर दौड़ा गया और अपने बूढ़े पिता को भट्टी में डाल दिया। आश्चर्य, उसमें से एक लड़का निकल आया।

पीटर को यह घटना देख कर बहुत आनन्द आया। उसने सोचा मैं भी ऐसा ही कर के देखता हूँ कि क्या मैं भी किसी बूढ़े को एक बच्चे में बदल सकता हूँ या नहीं।

तभी उसे रास्ते में एक और आदमी मिला जो जीसस से अपनी मरती हुई माँ का इलाज कराने के लिये आ रहा था। पीटर ने सोचा यह अच्छा मौका है सो उसने उसको रास्ते में ही रोक लिया और उससे पूछा — "तुम किसको ढूँढ रहे हो?"

वह आदमी बोला — "मैं मालिक को ढूँढ रहा हूँ। मेरी माँ की उम्र बढ़ती जा रही है और वह बहुत बीमार है। केवल मालिक ही उसको ठीक कर सकते हैं।"

पीटर बोला — "मालिक तो अभी आये नहीं हैं पर पीटर यहाँ है और वह तुम्हारी सहायता कर सकता है। सुनो तुम्हें क्या करना है। एक भट्टी में आग जलाओ और अपनी माँ को उसमें डाल दो तो वह ठीक हो जायेगी।"

वह गरीब आदमी यह जानता था कि पीटर मालिक का बहुत ही प्रिय और खास आदमी है इसलिये उसने उसका विश्वास कर लिया। वह तुरन्त ही अपने घर भागा भागा गया और अपनी माँ को जलती भट्टी में डाल दिया।

पर उसमें से उसकी माँ तो ठीक हो कर बाहर नहीं आयी।

अब ज़रा सोचो कि उस बेचारी बुढ़िया का क्या हुआ होगा? वह बेचारी तो ज़िन्दा ही जल कर मर गयी।

उधर बेटा चिल्लाया — "ओह मैं तो मुश्किल में पड़ गया। इस दुनियाँ का और दूसरी दुनियाँ का भी यह कैसा सेन्ट है? इसने तो मेरे ही हाथों मेरी ही माँ को जलवा दिया। अब मैं क्या करूँ?"

वह पीटर को ढूँढने निकला तो उसको जीसस मिल गये। उसने उनको सब कुछ बताया तो वह यह सब सुन कर बहुत हँसे।

"पीटर, पीटर, पीटर, यह तुमने क्या किया?" पीटर ने उनसे माफी माँगने की बहुत कोशिश की पर उस आदमी के रोने चिल्लाने की आवाज में उसकी आवाज जीसस को बिल्कुल भी सुनायी नहीं दी।

और वह आदमी तो बस चिल्लाये ही जा रहा था — "मेरी माँ वापस करो, मुझे अपनी माँ चाहिये।"

उसका रोना सुन कर जीसस उस आदमी के घर गये। उसकी माँ के लिये आशीर्वाद बोला और उस बुढ़िया को ज़िन्दा किया और ठीक किया।

पीटर को उन्होंने जो सजा उनको देनी चाहिये थी वह उन्होंने उसको नहीं दी।

3 डाकुओं की कहानी

ऐसे ही मालिक जीसस अपने अपोसिल्स के साथ एक बार फिर कभी दुनियाँ में घूम रहे थे कि एक कच्ची सड़क पर उनको रात हो गयी।

जीसस ने पूछा — "पीटर, यहाँ हम लोग अपनी रात कैसे गुजारेंगे?"

पीटर बोला — "उधर कुछ चरवाहे अपनी भेड़ें चरा रहे हैं वहाँ चल कर देखते हैं। आइये, मेरे साथ आइये।" सो वे सब उन चरवाहों की तरफ पहाड़ी के नीचे की तरफ चल दिये।

वहाँ जा कर पीटर ने पूछा — "क्या हमको यहाँ रात भर के लिये सोने की जगह मिल सकती है? हम लोग गरीब यात्री हैं और बहुत थक गये हैं और बहुत भूखे भी हैं।"

चरवाहों के सरदार ने उनको नमस्ते तो की पर उनको खाना खिलाने या उनको रात भर के सोने के लिये जगह देने के लिये उनमें से कोई हिला तक नहीं।

वे अपने गूँधे हुए आटे को एक तख्ते पर बेलने की कोशिश कर रहे थे पर उनको यह नहीं लग रहा था कि वे तेरह आदमियों को खाना खिला पायेंगे। जबकि वे सभी भूखे थे।

फिर बाद में उन्होंने कहा — "उधर वह भूसे का ढेर है आप लोग वहाँ सो सकते हैं।"

मालिक और उनके अपोसिल्स ने अपनी अपनी पेटी बाँधी और बिना एक शब्द बोले भूसे के ढेर पर सोने चले गये।

वे लोग अभी मुश्किल से लेटे ही थे कि शोर से उनकी आँख खुल गयी। वहाँ कुछ डाकू चिल्लाते हुए आ पहुँचे थे "हाथ ऊपर करो, हाथ ऊपर करो।"

चरवाहे उन डाकुओं को बुरा भला कह रहे थे। लोग एक दूसरे को मार रहे थे। चरवाहे इधर उधर भाग रहे थे। डाकुओं ने उनके खेतों पर कब्जा कर लिया तो उन्होंने वहाँ कुछ जानवरों को देखा।

फिर उस भूसे के ढेर को देखा तो वहाँ कुछ लोगों को सोते पाया तो उनसे कहा — "हर एक अपने अपने हाथ ऊपर करो। और बताओ कि आप लोग हैं कौन?"

पीटर बोला — "तेरह थके और भूखे गरीब यात्री।"

डाकू बोले — "अगर ऐसा है तो बाहर निकलो। खाना तो तख्ते पर बिल्कुल अनछुआ रखा है। चरवाहों के खर्चे पर पेट भर कर खाना खाओ क्योंकि हमको तो अपनी जान बचा कर भागना भी है।"

सभी बहुत भूखे थे। अब उनको किसी से खाना माँगने की भी जरूरत नहीं पड़ी। वे उस तख्ते की तरफ भागे चले गये। पीटर बोला — "डाकुओं की जय हो। वे अपने अमीर होने के मुकाबले में गरीब और भूखे लोगों के बारे में ज़्यादा सोचते हैं।"

अपोसिल्स भी चिल्लाये — "डाकुओं की जय हो।" और सबने मिल कर पेट भर खाना खाया।

4 बोतल में बन्द मौत

एक बार एक बहुत ही अमीर और दयालु सराय वाला था जिसने अपनी सराय के आगे एक साइन बोर्ड लगा रखा था। उस साइन बोर्ड के ऊपर लिखा था "मेरी सराय में आने वाले को खाना मुफ्त"।

सो सारा दिन लोग उसकी सराय में आते रहते थे और वह सब को मुफ्त खाना खिलाता रहता था।

एक बार जीसस और उनके बारह अपोसिल्स भी उस शहर में आये। उन्होंने भी वह साइन बोर्ड पढ़ा तो सेन्ट थोमस[61] बोला — "मालिक, जब तक मैं अपनी ऑखों से देख न लूँ और अपने हाथों से छू कर महसूस न कर लूँ तब तक मैं किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करता। सो चलिये अन्दर चलते हैं।"

सो जीसस और सब अपोसिल्स उस सराय के अन्दर गये। उन्होंने सबने वहाँ खूब खाया और खूब पिया। सराय के मालिक ने भी उनका शाही स्वागत किया।

वहाँ से चलने से पहले सेन्ट थोमस बोला — "ओ भले आदमी, तुम मालिक से कोई चीज़ क्यों नहीं माँग लेते?"

उस सराय वाले ने जीसस से कहा — "मालिक, मेरे घर में एक अंजीर का पेड़ है पर मैं उस पेड़ की एक भी अंजीर नहीं खा पाता।

---

[61] St Thomas was one of the four disciples of Jesus who has written one of the four Books of the New Testament Bible. See the list of Jesus' disciples at the end of this book.

जैसे ही वे पकती है बच्चे आ जाते हैं और वे सारी अंजीरें खा जाते हैं। अब मैं यह चाहता हूँ कि आप ऐसा कुछ कर दें कि जो भी उस पेड़ पर चढ़े वह मेरी इजाज़त के बिना नीचे न आ सके।"

जीसस ने कहा — "ऐसा ही होगा।" और उस पेड़ को उन्होंने वैसा ही आशीर्वाद दे दिया।

अगली सुबह पहले चोर का उस पेड़ से हाथ चिपक गया, दूसरे का पैर चिपक गया और तीसरे का तो सिर ही दो डालियों के बीच फँस गया और वह उसे उनमें से निकाल ही नहीं सका।

जब सराय वाले ने उनको इस तरह पेड़ से चिपके देखा तो उनको सबको नीचे उतारा और उनकी अच्छी पिटायी कर के उनको छोड़ दिया।

कुछ ही दिनों में सबको पेड़ के इस गुण के बारे में पता चल गया कि जो कोई पेड़ को छुएगा वह उससे चिपक जायेगा। तो छोटे बच्चे तो उस पेड़ के पास आते ही नहीं थे बड़े भी उस पेड़ से दूर रहने लगे।

अब सराय वाला आराम से रह सकता था और अपने पेड़ की अंजीरें खा सकता था।

इस तरह सालों गुजर गये। वह पेड़ बूढ़ा हो गया। अब उस पर फल नहीं आते थे। सराय वाले ने एक लकड़ी काटने वाले को उस पेड़ को गिराने के लिये बुलाया।

उसने पेड़ गिरा दिया तो सराय वाले ने उससे पूछा — “क्या तुम मेरे लिये इस पेड़ की लकड़ी की एक बोतल बना सकते हो जो इतनी बड़ी हो कि उसमें एक आदमी घुस जाये?”

“हॉ हॉ क्यों नहीं।” और लकड़ी काटने वाले ने उसके लिये उस पेड़ की लकड़ी की उतनी बड़ी एक बोतल बना दी।

उस बोतल में उस पेड़ की लकड़ी के जादुई गुण आ गये थे – वह यह कि जो कोई भी उस बोतल में घुसता तो वह बिना सराय वाले की इजाज़त के बाहर ही नहीं आ सकता था।

अब वह सराय वाला भी बूढ़ा हो चला था। एक दिन मौत उसको लेने के लिये आया तो वह आदमी बोला — “हॉ हॉ क्यों नहीं। चलो चलते हैं। पर तुम्हारे साथ जाने से पहले क्या तुम मेरा एक काम करोगे?

मेरे पास एक बोतल है जिसमें शराब भरी हुई है। पर उसमें एक मक्खी पड़ गयी है। अब उस शराब को मैं पी ही नहीं सकता। क्या तुम उसमें कूद कर उस मक्खी को निकाल दोगे ताकि मैं मरने से पहले उस बोतल में से कम से कम एक घूॅट शराब तो पी चलॅू।”

“अरे तुम मुझसे बस इतना सा काम करवाना चाह रहे हो? यह तो कुछ भी नहीं मैं अभी करता हॅू।”

कह कर मौत उस बोतल में कूद पड़ा। उसके बोतल में कूदते ही सराय वाले ने उस बोतल के मुॅह पर डाट[62] लगा दी।

[62] Translated for the word “Cork”

फिर वह मौत से बोला — "बस अब तुम मेरे पास रहोगे और तुम कभी भी इसमें से निकल नहीं पाओगे।"

मौत तो अब सराय वाले के पंजे में फँस चुका था सो दुनियाँ में अब किसी को मौत ही नहीं आ रही थी। सब ज़िन्दा थे। अब सब जगह पैरों तक लम्बी सफेद दाढ़ी वाले लोग दिखायी पड़ते थे।

यह बात अपोसिल्स ने भी देखी और जीसस को इसका इशारा किया। जीसस ने आखिर उस सराय वाले के पास जा कर बात करने का इरादा किया।

वह उस सराय वाले के पास गये और उससे कहा — "भाई, क्या तुम सोचते हो कि यह ठीक है कि तुमने मौत को इस तरह से सालों से बन्द कर रखा है?

ज़रा उन लोगों के बारे में सोचो जो बूढ़े होने की वजह से कमजोर हो गये हैं या जो अपनी ज़िन्दगी को घसीट रहे हैं और बिना मौत के ठीक नहीं हो सकते कि उन बेचारे लोगों का क्या होगा?"

सराय वाले ने जवाब दिया — "मालिक, क्या आप यह चाहते हैं कि मैं मौत को बाहर निकाल दूँ? तब आप मुझसे वायदा कीजिये कि मरने के बाद आप मुझे स्वर्ग भेज देंगे तभी मैं मौत को इस बोतल में से बाहर निकालूँगा।"

जीसस ने सोचा अब मैं क्या करूँ? अगर मैं उसको इस बात के लिये मना कर दूँ तब तो मैं बहुत बड़ी मुसीबत में फँस जाऊँगा क्योंकि मौत इस बोतल में ही बन्द रह कर किसी को भी नहीं आ पायेगी और यह ठीक नहीं है इसलिये जीसस ने कहा — "जैसा तुम चाहते हो ऐसा ही होगा।"

जीसस से यह वायदा ले कर सराय वाले ने वह बोतल खोल दी और मौत को आजाद कर दिया।

इसके बाद सराय वाले को कुछ और साल ज़िन्दा रहने दिया गया। बाद में मौत फिर वापस आया और उसको स्वर्ग ले गया। इस तरह सराय वाला मौत को बोतल में बन्द कर के स्वर्ग चला गया।

5 सेन्ट पीटर की माँ

ऐसा कहा जाता है कि सेन्ट पीटर की माँ बहुत ही कंजूस थी। उसने कभी तो दान नहीं दिया और न ही कभी कोई पैसा अपने साथियों पर खर्च किया।

एक दिन जब वह लीक[63] छील रही थी तो एक गरीब औरत उससे भीख माँगने आयी। उसने उससे कहा — "क्या मुझे कुछ खाने के लिये दोगी?"

[63] Leek is a vegetable like green/spring onions, except that it is much largr and thicker than that. See the picture above.

सेन्ट पीटर की माँ बोली — "जो यहाँ आता है वह माँगता ही चला आता है। ठीक है यह लो और अब इसके बाद कुछ और नहीं माँगना।" कह कर उसने लीक की एक पत्ती उसके गुच्छे में से तोड़ी और उसको दे दी।

अगली ज़िन्दगी में जब मालिक ने सेन्ट पीटर की माँ को बुलाया तो उन्होंने उसको नरक भेज दिया। स्वर्ग का मालिक सेन्ट पीटर था। जब वह स्वर्ग के दरवाजे पर बैठा हुआ था तो उसने एक आवाज सुनी।

"पीटर, ज़रा देखो तो मैं कितनी भुन रही हूँ। बेटा, ज़रा तुम मालिक के पास जाओ और मुझे यहाँ इस आफत से निकालो।"

सेन्ट पीटर मालिक के पास गया और उनसे कहा — "मालिक, मेरी माँ नरक में है और वह वहाँ से निकलना चाहती है।"

"क्या? तुम्हारी माँ ने ज़िन्दगी भर कभी तो कोई अच्छा काम किया नहीं। उसने सारी ज़िन्दगी में लीक की केवल एक पत्ती दान की है और वह चाहती है कि मैं उसको नरक से बाहर निकाल दूँ।

ठीक है ऐसा हो तो नहीं सकता पर फिर भी तुम यह कर के देखो। उसको लीक की यह पत्ती देना और कहना कि वह इसको पकड़ ले और फिर इस पत्ती के सहारे अपने आपको स्वर्ग तक खींच लाये।"

एक देवदूत[64] उस पत्ती को ले कर नीचे गया और सेन्ट पीटर की माँ से बोला "लो इसको पकड़ लो और ऊपर चढ़ आओ। मैं तुमको ऊपर खींचता हूँ।"

सेन्ट पीटर की माँ ने उस पत्ती को पकड़ लिया। जैसे ही वह देवदूत उसको स्वर्ग में खींचने वाला था कि दूसरी गरीब आत्माओं ने जो पीटर की माँ के साथ नरक में थीं उसको ऊपर जाते हुए देख कर उसकी स्कर्ट पकड़ ली।

इस तरह से वह देवदूत केवल सेन्ट पीटर की माँ को ही नहीं खींच रहा था बल्कि उसके साथ और बहुत लोगों को भी खींच रहा था।

तभी वह मतलबी स्त्री चिल्लायी — "नहीं नहीं, तुम सब नहीं। तुम लोग दूर हटो। केवल मैं ही जाऊँगी स्वर्ग में। तुमको स्वर्ग जाने के लिये एक सेन्ट पैदा करना पड़ेगा जैसे कि मैंने किया है।"

यह कह कर उसने उन सबको लात मार कर और अपने आपको हिला कर अपने से दूर झटक दिया।

यह करते समय वह खुद भी इतने ज़ोर से हिली कि वह नाजुक सी लीक की पत्ती दो हिस्सों में टूट गयी और सेन्ट पीटर की माँ फिर से नरक में गिर गयी।
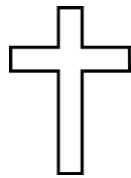
[64] Translated for the word "Angel"

9 नाई की घड़ी[65]

यह एक ऐसे नाई की कहानी है जिसके पास एक ऐसी घड़ी थी जो सदियों से बिना चाभी लगाये चलती चली आ रही थी।

इतने सालों में वह घड़ी न तो कभी रुकी और न ही कभी सुस्त ही हुई बल्कि हमेशा ही ठीक समय देती रही।

उस नाई ने उसको केवल एक बार चाभी लगायी थी और बस उस समय से वह टिक टौक, टिक टौक, टिक टौक चलती ही रही।

यह नाई एक बूढ़ा था और इतना बूढ़ा था कि वह तो उन सदियों की गिनती ही भूल गया था जबसे वह ज़िन्दा था और उसको यह भी याद नहीं था कि उसने कितनी पीढ़ियॉ आती जाती देखी थीं।

इस घड़ी की एक खासियत और भी थी कि यह घड़ी केवल समय ही नहीं बताती थी बल्कि समय के साथ साथ और भी बहुत कुछ बताती थी सो सारे लोग उसकी दूकान पर उस घड़ी से कुछ भी जानने के लिये आने के आदी हो चुके थे।

एक दिन उसकी दूकान पर एक बड़े शरीर वाला किसान आया। उसको उससे अपने खेत में बीज बोने के लिये बारिश का समय पूछना था।

---

[65] The Barber's Timepiece. Tale No 166. A folktale from Italy from its Palermo area.

अब तक आसमान बादलों से खाली था सो वह उस नाई की घड़ी से बोला — “ओ घड़ी ओ घड़ी, मुझे बताओ कि बारिश कब होगी?” घड़ी बोली —

टिक टौक, टिक टौक, टिक टौक
मैं चमकती हूँ मैं चमकती हूँ मैं चमकती हूँ
बारिश नहीं, बारिश नहीं, आसमान मेरा है
आओ कड़क, आओ कड़क, अगले साल पानी पानी पानी

फिर एक बूढ़ा छड़ी ले कर आया। वह अस्थमा का मरीज था इसलिये वह ठीक से साँस भी नहीं ले पा रहा था। उसने घड़ी से पूछा — “घड़ी ओ घड़ी, क्या मेरे लैम्प में तेल काफी है।” तुरन्त ही घड़ी बोली —

टिक टौक, टिक टौक, टिक टौक
तीन बीसी[66] तीन बीसी तीन बीसी तेल कम है थोड़ा और डालो
तीन बीसी से ऊपर, तीन बीसी से ऊपर, तीन बीसी से ऊपर
बेचारी बत्ती, बेचारी बत्ती, बेचारी बत्ती, टिक टौक, टिक टौक, टिक टौक

इसके बाद वहाँ एक नौजवान आया जो किसी लड़की से प्यार करता था और उस समय उसके प्यार में हवा में उड़ रहा था। वह बोला — “ओ घड़ी मुझे बताओ कि क्या कोई और दूसरा है जो अपने प्यार में इतना सफल हो जितना कि मैं?”

घड़ी बोली —

[66] Beesee means 20 or score.

टिक टौक, टिक टौक, टिक टौक तुम अगर बेवकूफी करोगे तो नीचे गिरोगे
आज तुम नाच में अपनी बदनामी कराओगे और कल तुम मखमल के नीचे लेटोगे[67]

उसके बाद एक और आदमी आया जो सबसे ज़्यादा कानून तोड़ता था। वह कैमोरा[68] का सरदार था। उसकी टोपी में बहुत सारे फुँदने[69] लटके हुए थे। उसके बाल लम्बे और काले थे। उसके हाथ में कई अँगूठियाँ थीं।

वह बोला — "ओ घड़ी, मुझे बताओ कि कितने राजा मेरी पकड़ से बाहर निकल जायेंगे? बोलो नहीं तो मैं तुम्हें तोड़ डालूँगा।" घड़ी बोली —

टिक टौक, टिक टौक, टिक टौक
बचो बचो बचो ज्वार भाटे की बारी है, जलोगे, तुम जल जाओगे

उसके बाद एक गरीब आदमी आया – दुखी, भूखा, बहुत थोड़े से कपड़े पहने हुए, बीमार। वह आ कर बोला — "ओ घड़ी, मुझे बता मेरी ये सब परेशानियाँ कब दूर होंगी? बता बता। मेरे ऊपर दया कर के बता। मुझे मौत कब आयेगी?" जैसे घड़ी बोलती थी वैसे ही वह बोली —

टिक टौक, टिक टौक, टिक टौक
जो गाना नहीं गाता उसके लिये ज़िन्दगी बहुत लम्बी होती है

---

[67] Velvet for spreading over a coffin
[68] Camorra
[69] Tassels. See their picture above.

इस तरह सब तरह के लोग इस जादुई घड़ी को देखने के लिये आते रहते थे। वे उससे बात करते, सवाल पूछते और अपने अपने सवालों के जवाब ले कर चले जाते।

वह घड़ी उनको यह बताती कि पेड़ों पर फल कब लगेंगे, जाड़ा या गर्मी कब शुरू होगी, सूरज कब निकलेगा या कब डूबेगा और लोग कब तक ज़िन्दा रहेंगे।

कम में लिखा जाये तो उस घड़ी के मुकाबले की कोई दूसरी घड़ी और थी ही नहीं। वह अपने किस्म की एक अकेली घड़ी थी और इस दुनियॉ में कोई ऐसी बात नहीं थी जो वह न जानती हो।

हर आदमी उसको लेना चाहता था और अपने घर में रखना चाहता था पर उसको रख नहीं सकता था क्योंकि वह एक जादू की घड़ी थी। और इसी लिये उसको अपने घर में रखने की इच्छा करना भी बेकार था।

पर हर एक, चाहे वह चाहे या न चाहे, खुले रूप से या छिपे रूप से, उस नाई की तारीफ करता था जिसने वह घड़ी बनायी थी। वह हमेशा चलती ही रहती थी। कोई उसको तोड़ नहीं सकता था और न ही कोई उसको ले सकता था – सिवाय उस आदमी के जिसने उसको बनाया था।

10 एक रानी और एक डाकू की शादी[70]

ऐसा कहा जाता है कि एक राजा और एक रानी थे। उनके एक बेटी थी जो शादी के लायक थी। वे उसकी शादी करना चाहते थे।

सो राजा ने सब राजाओं के लिये और कुलीन लोगों के लिये एक घोषणा करवा दी कि वे सब राज महल में आयें ताकि राजा उनमें से अपनी बेटी के लिये दुलहा चुन सके।

जो कोई भी राजकुमारी को सबसे पहले पसन्द आयेगा वही राजकुमारी का पति होगा। सो सभी राजमहल में इकट्ठा हुए। पहले सभी राजा सामने से गुजरे, उसके बाद राजकुमार, उसके बाद कुलीन लोग और उसके बाद प्रोफेसर।

राजकुमारी को न तो कोई राजा पसन्द आया और न ही कोई राजकुमार। फिर कुलीन लोग आये पर राजकुमारी को उनमें से भी कोई पसन्द नहीं आया।

फिर प्रोफेसर आये तो उसने एक आदमी की तरफ इशारा कर के बोली — "पिता जी मैं उस आदमी से शादी करना चाहती हूॅ।" मालूम करने पर पता चला कि वह प्रोफेसर तो किसी बाहरी देश का था।

पर क्योंकि राजा ने वायदा किया था कि वह राजकुमारी की पसन्द के लड़के से उसकी शादी करेगा तो उसके पास सिवाय इसके

[70] The Marriage of a Queen and a Bandit. Tale No 169. A folktale from Italy from its Madonie area.

अब कोई चारा नहीं था कि वह उस प्रोफेसर से अपनी बेटी की शादी कर दे।

सो राजा ने अपनी बेटी की शादी उस प्रोफेसर से कर दी। शादी के बाद दुलहा तुरन्त ही वहॉ से जाना चाहता था सो बेटी ने माता पिता को विदा कहा और पति पत्नी कुछ सेना के साथ वहॉ से चले गये।

आधा दिन चलने के बाद सिपाहियों ने दुलहे से कहा कि अब वे खाना खाना चाहते थे। पर दुलहे ने कहा — "यह कोई खाने का समय नहीं है।"

वे सब थोड़ी दूर और आगे चले तो सिपाहियों ने अपनी बात फिर से रखी कि वे खाना खाना चाहते थे पर दुलहे ने उनको फिर वही जवाब दिया — "यह कोई खाने का समय नहीं है।"

इस बात पर सिपाही लोग कुछ नाराज हो गये और बोले — "तो फिर आप और रानी अपने देश जायें जहॉ आपको जाना है और हम अपने घर जाते हैं।"

उस आदमी ने जवाब दिया — "तुम और तुम्हारे सिपाही लोग अपने रास्ते जा सकते हो।"

यह सुन कर सिपाही लोग वापस लौट गये और नया शादीशुदा जोड़ा अकेला ही अपने रास्ते पर आगे चलता रहा।

चलते चलते वे एक अकेली पथरीली जगह आये जो जंगली पेड़ों से ढकी हुई थी। दुलहा बोला — "हम लोग घर आ गये।"

राजकुमारी कुछ चिन्तित सी बोली — "पर यहाँ तो कोई घर ही दिखायी नहीं दे रहा हम रहेंगे कहाँ।"

दुलहे ने धरती पर एक डंडी तीन बार मारी और धरती में नीचे की तरफ एक दरवाजा खुल गया। वह बोला — "आओ अन्दर आओ। यही तुम्हारा घर है।"

"मुझे तो इसमें अन्दर जाते हुए डर लगता है।"

"तुम अन्दर चलो वरना मैं तुमको मार दूँगा।"

दुलहिन तो यह सुन कर बहुत डर गयी पर क्या करती डरते डरते वह बेचारी उसके अन्दर घुसी। अन्दर घुस कर उसने देखा कि वह गुफा तो मरे हुए लोगों से भरी हुई थी। कुछ उनमें जवान लोग थे कुछ बूढ़े और सबके मरे हुए शरीर एक दूसरे के ऊपर पड़े हुए थे।

दुलहे ने पूछा — "क्या तुम इनको देख रही हो? अब तुम्हारा काम यहाँ यह है कि तुम इनको हर एक को उठाओ और उनको दीवार के सहारे एक लाइन में खड़ा करो। हर रात मैं एक गाड़ी भर कर लाशें ले कर आऊँगा और उन सबको तुमको ऐसे ही रखना होगा।"

इस तरह उस राजकुमारी की शादी के बाद की ज़िन्दगी शुरू हुई। उसने मरे हुए आदमियों को उठाया और उनको दीवार के सहारे खड़ा कर दिया इससे वे कम जगह घेर रहे थे ताकि नये आने वाले शरीरों के लिये जगह खाली हो सके।

हर शाम उसका पति एक गाड़ी भर कर नयी लाशों को ले कर आता था और वह रोज उनको एक लाइन में खड़ा कर के रखती थी।

उस राजकुमारी के लिये यह बहुत भारी काम था क्योंकि मरे हुए शरीर तो वैसे भी ज़्यादा भारी होते हैं। उसको इस तरह के शरीरों को उठाने की आदत नहीं थी।

इसके अलावा उसको उस गुफा से बाहर जाने का भी मौका नहीं मिलता था क्योंकि उसके उस गुफा में अन्दर आते ही उसका तो दरवाजा ही गायब हो चुका था।

राजा की बेटी अपने घर से थोड़ा सा फर्नीचर ले कर आयी थी जिसमें एक पुरानी कई ड्रौअर वाली आलमारी थी जो उसको उसकी चाची ने भेंट में दी थी। उसकी वह चाची एक परी जैसी थी।

एक दिन उसने उस आलमारी की एक ड्रौअर खोली तो उसकी वह आलमारी बोली — “ओ महारानी, मैं आपकी क्या सेवा करूँ?”

तुरन्त ही उसके मुँह से निकला — “मैं यहाँ से बाहर निकलना चाहती हूँ और अपने घर जाना चाहती हूँ। मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो।”

इस पर एक सफेद फाख्ता[71] उस आलमारी में से बाहर निकली और बोली — "तुम अपने पिता को एक चिट्ठी लिखो और उसको मेरी चोंच में लगा दो। मैं उसे उनके पास ले जाऊँगी।"

राजकुमारी ने एक चिट्ठी अपने पिता के नाम लिखी जिसको वह सफेद फाख्ता उसके पिता के पास ले गयी और उसके पिता के जवाब का इन्तजार करने लगी।

राजा ने लिखा — "मेरी प्यारी बेटी, तुम तुरन्त ही यह पता लगाओ कि तुम उस गुफा से कैसे बाहर आ सकती हो। मुझ पर विश्वास रखो मैं तुम्हारी सहायता के लिये हमेशा तैयार हूँ।"

जब वह फाख्ता उस लड़की के पिता का जवाब ले कर उस लड़की के पास वापस आयी तो उसी शाम उसने यह इरादा किया कि वह अपने पति के साथ प्यार से ही रहेगी ताकि वह उसके भेद पता कर सके।

उसने अपने पति से कहा — "तुम्हें पता है कि आज मैंने क्या सपना देखा? मैंने देखा कि मैं यह गुफा छोड़ कर चली गयी हूँ।"

पति बोला — "हा हा हा। तुम तो इस गुफा में से सपने में भी बाहर नहीं निकल सकतीं।"

उसने बड़े सीधे से पूछा — "क्यों? ऐसा क्या है इस गुफा में?"

---

[71] Translated for the word "Dove". See its picture above.

"सबसे पहले तो तुमको एक ऐसा आदमी चाहिये जो अपने समय से पहले पैदा हुआ हो जैसे मैं। मैं सात महीने में पैदा हुआ था। फिर वह आदमी एक डंडी तीन बार चट्टान पर मारे तब यह गुफा खुलती है। तब कहीं जा कर तुम इस गुफा के बाहर निकल सकती हो।"

उस लड़की ने यह संदेश उस फाख्ता से अपने पिता को भिजवा दिया।

जैसे ही फाख्ता ने यह सन्देश उसके पिता को दिया कि कोई ऐसा आदमी चाहिये जो समय से पहले, जैसे सात महीने में, पैदा हुआ हो। राजा ने अपने सब सिपाहियों को अपने सारे राज्य में कोई ऐसा आदमी ढूँढने के लिये भेज दिया जो सात महीने के बाद और समय से पहले पैदा हुआ हो।

एक धोबिन बाहर कपड़े सुखा रही थी कि उसने बहुत सारे सिपाहियों के आने की आवाज सुनी। उसने सोचा ये लोग मेरे कपड़े चुरा कर ले जायेंगे सो उसने जल्दी से अपने कपड़े रस्सी से उतारने शुरू कर दिये।

सिपाही उसके पास आये और बोले — "डरो नहीं। हम तुम्हारे कपड़े चुराने नहीं आये हैं। हम किसी ऐसे आदमी की तलाश में हैं जो सात महीने के बाद और समय से पहले पैदा हुआ हो। हमें इस बात से कोई मतलब नहीं है कि वह कौन है। राजा को बस वह आदमी चाहिये।"

धोबिन बोली — “ओह असल में मेरे एक बेटा है जो अपने समय से पहले और सात महीने के बाद ही पैदा हुआ था।”

कह कर वह घर के अन्दर गयी और अपने उस बेटे को उन सिपाहियों के लिये ले आयी। वह एक बहुत ही पतला दुबला नौजवान लड़का था।

सिपाही उसको ले कर राजा के पास चले। राजा उस लड़के को और अपने सिपाहियों को साथ ले कर राजकुमारी को आजाद कराने के लिये वहाँ पहुँच गया। उसने उस लड़के को पहले ही सब समझा दिया था कि उसको वहाँ जा कर क्या करना है।

उसने वहाँ पहुँच कर उस चट्टान को तीन बार एक डंडी से मारा तो उस गुफा का दरवाजा खुल गया। राजकुमारी वहाँ उन लोगों का इन्तजार ही कर रही थी। उन सबको वहाँ देख कर वह अपने पिता, उस नौजवान और सिपाहियों के साथ चल दी।

रास्ते में उन्होंने एक बागीचे में एक बुढ़िया को देखा तो उन्होंने उससे कहा — “अगर हमारे पीछे कोई हमको पूछता हुआ आये तो कह देना कि हम इधर से गये ही नहीं। ठीक?”

बुढ़िया बोली — “हुँह। तुमको रात को खाने में सूप बनाने के लिये बीन्स चाहिये?”

“ठीक। हमको तुम जैसा ही कोई चाहिये था।”

जब वह डाकू घर वापस आया तो उसने गुफा का दरवाजा खुला देखा और अपनी पत्नी को वहाँ न देख कर वह समझ गया

कि उसकी पत्नी उसको धोखा दे कर वहाँ से भाग गयी है। वह भी तुरन्त ही वहाँ से भाग लिया और जल्दी ही उनके पीछे पीछे आ गया।

वह भी उस बुढ़िया के पास रुका और उससे पूछा — "क्या तुमने यहाँ से किसी स्त्री को सेना के साथ जाते देखा है?"

वह बोली — "हुँह। क्या तुम चाय के साथ मार्मलेड बना रहे हो?"

"क्या? मार्मलेड? और चाय के साथ? नहीं नहीं पर क्या तुमने एक सात महीने का पैदा हुआ आदमी, एक राजा और उसकी बेटी को यहाँ से जाते हुए देखा है?"

"अच्छा अच्छा। क्या तुमको एक पौंड पार्सले और बेसिल[72] चाहिये?"

"नहीं नहीं। क्या तुमने कोई राजा की बेटी सिपाहियों के साथ यहाँ से जाती देखी?"

"बेसिल भी नहीं और पार्सले भी नहीं। तो फिर नमकीन खीरे?"

डाकू ने तंग हो कर अपने कंधे उचकाये और आगे बढ़ गया।

[72] Parsley is a herb like green coriander leaves and is a very popular herb to add to many Italian dishes. Basil is another name of Tualsee leaves, although it is not exactly like Indian Tulasee. It is also a very popuar herb to add to Italian dishes. See their pictures – Parsley is above and Basil is below it.

बुढ़िया उसके पीछे से चिल्लायी — "पर जनाब आप नाराज क्यों हो गये। नमकीन खीरों का नाम किसने नहीं सुना?"

डाकू यह सब सुन कर तंग हो कर उस समय वहाँ से वापस चला गया।

बाद में अपने पिता के महल के पीछे की तरफ सुरक्षित जगह में राजकुमारी की शादी दोबारा हो गयी। इस बार उसकी शादी साइबेरिया[73] के राजा से हो गयी।

राजकुमारी का पहला पति जो डाकू था वह बाद में भी उसका पीछा करता रहा। पर फिर उसने उसको पकड़ने के लिये एक दूसरा ही जाल बिछाया। उसने एक साधु का वेश बनाया और अपनी एक तस्वीर बनवायी।

वह एक बड़ी तस्वीर थी। उसका चौखटा भी बहुत भारी था और तीन पेंचों[74] से जड़ा था और वह डाकू उसके अन्दर था जैसे कि वह एक साधु हो। और उस तस्वीर का शीशा भी बहुत मोटा था।

वह तस्वीर साइबेरिया के राजा के पास बेचने के लिये ले जायी गयी। जब उसने वह तस्वीर देखी तो वह उसको इतनी सुन्दर और ज़िन्दा लगी कि उसने उसे तुरन्त खरीद ली और उसको अपने बिस्तर के ऊपर टाँग ली।

---

[73] Siberia is the name of Northern-most part of Russia.

[74] Translated for the word "Screw"

जब उस कमरे में कोई नहीं था तो वह डाकू उस तस्वीर में से बाहर निकला और राजा के तकिये के नीचे एक जादुई कागज रख दिया।

जब रानी ने वह साधु की तस्वीर अपने पति के बिस्तर के ऊपर टॅगी देखी तो वह उसको देख कर चौंक गयी क्योंकि उस साधु की शक्ल उसके पहले पति से बहुत मिलती जुलती थी।

पर राजा ने उससे कहा कि उसको किसी साधु की तस्वीर से डरने की कोई जरूरत नहीं थी।

उस रात को जब वे सो गये तो उस डाकू ने बाहर निकलने के लिये उस तस्वीर के दरवाजे का एक पेंच खोला। उस पेंच खोलने की अवाज से रानी की ऑख खुल गयी।

रानी ने राजा के शरीर में उॅगली गड़ा कर उसको भी जगाया और उसको आवाज सुनने को कहा पर राजा की ऑख ही नहीं खुली। वह सोता ही रहा।

ऐसा इसलिये हुआ था क्योंकि उस डाकू ने उसके तकिये के नीचे वह जादुई कागज रख दिया था। उसी के ज़ोर से वह सोता रहा और उसकी ऑख नहीं खुली।

क्योंकि उस जादुई कागज की यह खासियत थी कि जिस किसी के तकिये के नीचे भी वह रखा रहता था वह बहुत गहरी नींद सो जाता था।

अब डाकू ने दूसरा पेंच खोला पर राजा फिर भी सोता ही रहा पर रानी के शरीर में से तो जैसे डर के मारे जान ही निकल गयी।

उसके बाद उस डाकू ने तीसरा पेच खोला और उस तस्वीर में से बाहर निकला और रानी से कहा — "अब मैं तुम्हारा गला काटूँगा इसलिये अब तुम अपना सिर तकिये पर मजबूती से रख लो।"

रानी ने अपना सिर तकिये पर ऊपर करने के लिये अपने पति का तकिया भी निकाल लिया। ऐसा करने में राजा के तकिये के नीचे रखा वह जादू का कागज नीचे गिर पड़ा और उसी समय राजा की ऑख खुल गयी।

उन दिनों में राजाओं के साथ यह सामान्य था कि वे हमेशा एक बिगुल अपने गले में पहन कर रखा करते थे सो यह राजा भी दिन रात अपने गले मे एक छोटा सा बिगुल लटका कर रखता था।

सो तुरन्त ही उसने अपना बिगुल बजाया जिससे तुरन्त ही उसके सिपाही वहॉ दौड़े चले आये। उन्होंने उस डाकू को तुरन्त ही मार डाला। सब काम तुरन्त ही हो गया।

राजा और रानी की जान बच गयी और डाकू मारा गया।

11 सात मेमनों के सिर[75]

एक बार एक बुढ़िया थी जो अपनी पोती[76] के साथ रहती थी। उसकी वह पोती हमेशा घर में ही रहती थी और घर का सारा काम करती थी जबकि वह बुढ़िया बाजार का काम करती थी।

एक दिन वह बुढ़िया बाजार से छोटे छोटे मेमनों के सात सिर ले कर आयी। उनको ला कर उसने अपनी पोती को दे दिये और बोली — "अतानाशिया[77], मैं बाहर जा रही हूँ। इन सातों सिरों को पका लेना। जब मैं वापस आ जाऊँगी तब हम दोनों मिल कर इन्हें खायेंगे।"

यह कह कर वह बुढ़िया तो चली गयी और उस लड़की ने उन सातों सिरों को आग पर पकने के लिये रख दिया। वहीं पास में एक बिल्ला बैठा था। मेमनों के सिरों के पकने की ख़ुशबू जो उसकी नाक तक पहुँची तो वह बोला — "म्याऊँ म्याऊँ, म्याऊँ म्याऊँ। आधा मेरे लिये और आधा तेरे लिये।"

सो उस लड़की ने सात मेमनों के सिरों में से एक सिर उठाया, उसके आधे आधे दो हिस्से किये और उनमें से एक आधा बिल्ले को दे दिया और दूसरा आधा खुद खा लिया।

[75] The Seven Lamb Heads. Tale No 170. A folktale from Italy from its Ficarazzi area.
[76] Son's daughter
[77] Atanasia – the name of the grand-daughter of the old woman

बिल्ले ने उसको खा कर फिर कहा — "म्याऊँ म्याऊँ, म्याऊँ म्याऊँ। आधा मेरे लिये और आधा तेरे लिये।"

लड़की ने फिर दूसरा सिर दो हिस्सों में काटा। उसका एक आधा हिस्सा उसने बिल्ले को दिया और दूसरा आधा हिस्सा खुद खा लिया।

पर बिल्ले का पेट अभी भी नहीं भरा था सो उसने एक बार और कहा — "म्याऊँ म्याऊँ, म्याऊँ म्याऊँ। आधा मेरे लिये और आधा तेरे लिये।"

इस तरह उस लड़की ने सातों सिर आधे आधे किये और उनमें से एक आधा बिल्ले को दे दिया और दूसरा आधा खुद खा लिया।

जब सारे सिर खत्म हो गये तब लड़की को चिन्ता हुई कि यह उसने क्या किया। वह अपना सिर खुजलाने लगी और बोली — "अब जब दादी वापस आयेगी तब मैं उससे क्या कहूँगी।"

काफी सोचने पर भी जब उसको इस सवाल का जवाब नहीं मिला तो वह घर से भाग गयी।

जब दादी घर वापस आयी तो उसने देखा कि घर का दरवाजा खुला पड़ा है। मेमनों के सिरों की आधी हड्डियाँ फर्श पर बिखरी पड़ी हैं और बाकी की आधी एक प्लेट में पड़ी हैं और उसकी पोती का कहीं पता नहीं है।

वह बुड़बुड़ा रही थी — "उसने आखिरी सिर भी खा लिया, उसने आखिरी सिर भी खा लिया।"

गुस्से के मारे उसने घर की सारी चीज़ें इधर उधर फेंकनी शुरू कर दीं और बुड़बुड़ाती रही — "उसने आखिरी सिर भी खा लिया, उसने आखिरी सिर भी खा लिया।" फिर वह भी बिना देखे बिना सोचे समझे कि वह कहाँ जा रही है घर के बाहर चली गयी।

वह कुछ ही दूर गयी होगी कि उसके दिमाग में कुछ आया तो वह सिर हिला कर फिर बोली — "उफ़, उसने तो आखिरी वाला सिर भी खा लिया।" वह किसी तरह भी शान्त नहीं हो पा रही थी।

इसी बीच अतानाशिया भी चलते चलते एक जंगल में आ गयी। वहाँ उसने हजारों गुलाब खिले देखे। उनको देखते ही उसके मुँह से निकला — "ओह, ये गुलाब कितने सुन्दर हैं।"

उसके पास एक छोटा सा धागा था। उसने वह धागा लिया और उसमें कुछ गुलाब गूँथ कर अपने लिये एक मुकुट, एक हार और कलाई में पहनने के लिये दो कंगन बना लिये। उनको पहन कर वह एक पेड़ के नीचे लेट गयी। ठंडी ठंडी हवा लगी तो वह सो गयी।

सवेरे वहाँ का राजा शिकार खेलने निकला तो एक लड़की को एक पेड़ के नीचे सोते पाया। वह बहुत देर तक उसकी तरफ देखता रहा। वह लड़की उसको इतनी अच्छी लगी कि वह उससे प्यार करने लगा।

उसने उसको जगाया और बोला — "मैं यहाँ का राजा हूँ। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

अतानाशिया बोली — "आप देख रहे हैं कि मैं एक बहुत ही गरीब लड़की हूँ। मैं तो आपसे शादी करने की सोच भी नहीं सकती।"

राजा बोला — "अगर केवल यही बात तुमको परेशान कर रही है तो इस बात को तो तुम सोचो भी नहीं, बस हाँ कर दो। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी पत्नी बन जाओ।" लड़की का चेहरा शर्म से लाल हो गया और उसने हाँ में सिर हिला दिया।

राजा बोला — "तो चलो उठो, और मेरे साथ मेरे महल चलो।"

लड़की बोली — "हाँ हाँ, पर मैं अपनी दादी को घर में छोड़ आयी हूँ मुझे पहले उसको लेना होगा।"

राजा ने एक गाड़ी उसकी दादी को लाने के लिये भेज दी और शादी की दावत के दिन उसको उसकी पोती के पास ही बिठा दिया। दावत बहुत ही बढ़िया थी।

बुढ़िया अपनी पोती की तरफ झुकी और उसके कान में फुसफुसायी — "तुमने तो आखिरी वाला भी खा लिया।"

पोती ने उसको झिड़का — "चुप रहो, अब बस भी करो।"

राजा ने पूछा — "तुम्हारी दादी क्या चाह रही है?"

लड़की बोली — "उसको मेरी पोशाक जैसी एक पोशाक चाहिये।" राजा ने हुक्म दिया कि ऐसी ही एक पोशाक इनके लिये भी बनवायी जाये।

दावत के बाद बातें शुरू हुई तो वह बुढ़िया बार बार अपनी पोती के कान में फुसफुसा रही थी — "तुमने तो आखिरी वाला भी खा लिया। तुमने तो आखिरी वाला भी खा लिया।"

इस तरह फुसफुसाते देख कर राजा ने अपनी पत्नी से फिर पूछा — "अब तुम्हारी दादी को क्या चाहिये?"

अतानाशिया बोली — "उनको मेरी अँगूठी जैसी एक अँगूठी चाहिये।" राजा ने हुक्म दिया कि ऐसी ही एक अँगूठी इनके लिये भी बनवायी जाये।

पर उस बुढ़िया ने फिर से अपनी पोती के कान में फुसफुसाना शुरू कर दिया तो बेचारे राजा ने अपनी पत्नी से फिर पूछा — "अब तुम्हारी दादी को क्या चाहिये?"

पर अतानाशिया के लिये यह सब अब काफी हो चुका था सो वह बोली — "वह भूखी हैं और इतना सारा स्वादिष्ट खाना खाने के बाद भी इनका दिमाग उन बेकार के मेमनों के सिरों से नहीं हटता जो इन्होंने मुझे पकाने के लिये दिये थे।"

राजा को ऐसे लालच पर गुस्सा आ गया और उसने अपने चौकीदारों को बुला कर शहर के चौराहे पर उसका सिर काटने का हुक्म दे दिया। चौकीदारों ने वही किया जो राजा ने कहा।

जहाँ उस बुढ़िया का सिर गिरा वहाँ एक वीपिंग विलो का पेड़ उग आया। हवा के हर झोंके के साथ उस पेड़ में से आवाज आती है "जिसने आखिरी भी खा लिया। जिसने आखिरी भी खा लिया।"

12 दो समुद्री सौदागर[78]

एक बार की बात है कि दो दोस्त थे। वे दोनों ही समुद्री सौदागर थे और बहुत बड़े सौदागर थे जिन्होंने सातों समुद्रों में अपने जहाज़ चला रखे थे।

उनमें से एक सौदागर के एक बेटा था पर दूसरे के कोई बच्चा नहीं था पर वे दोनों ही उस लड़के को बहुत प्यार करते थे।

एक दिन बिना बच्चे वाले सौदागर को अपना सामान बेचने के लिये जहाज़ पर जाना था। जब वह जाने के लिये तैयार हुआ तो उसके दोस्त के बेटे ने उससे बहुत जिद की कि वह उसको भी साथ ले ले। क्योंकि इस तरह उसको भी जहाज़ चलाने और सामान बेचने का कुछ अनुभव हो जायेगा।

फिर उसने अपने पिता से भी बहुत कहा कि वह उसको उसके गौडफादर के साथ जहाज़ पर भेज दे। पर न तो उसका पिता और न ही उसका गौडफादर यह चाहता था कि वह अभी समुद्री यात्रा पर जाये।

पर जब वह लड़का नहीं माना तो दोनों को उसकी बात मानने के लिये राजी होना पड़ा सो वह अपने गौडफादर के जहाज़ के साथ वाले जहाज़ पर चल पड़ा।

---

[78] The Two Sea Merchants. Tale No 171. A folktale from Italy from its Palermo area.

चलते चलते वे गहरे समुद्र में आ गये। समय की बात कि वहाँ एक तूफान आ गया। वह तूफान इतना भयानक था कि दोनों जहाज़ एक दूसरे से अलग हो गये।

गौडफादर का जहाज़ तो उस तूफान में से बच कर बाहर आ गया पर उस नौजवान का जहाज़ समुद्र की तली में बैठ गया। जहाज़ पर जितने भी लोग थे सब डूब गये।

किस्मत से इस नौजवान को एक तख्ता मिल गया तो वह उसके सहारे तैर कर एक टापू के किनारे लग गया।

वहाँ वह नाउम्मीद सा इधर उधर घूमता रहा। घूमते घूमते वह एक ऐसे जंगल में आ गया जहाँ जंगली जानवर घूम रहे थे। उन जानवरों से डर कर उसने रात एक ओक के पेड़ के ऊपर गुजारी।

सुबह को जब उसने देख लिया कि उसके आस पास कोई जंगली जानवर नहीं है तो वह पेड़ से नीचे उतरा और उसने फिर उसी जंगल में घूमना शुरू कर दिया।

घूमते घूमते वह एक ऐसी ऊँची दीवार के पास आ गया जिसका तो उसको कोई ओर छोर ही दिखायी नहीं दे रहा था। वह पास के एक पेड़ पर चढ़ गया और फिर वहाँ से उस दीवार पर कूद गया।

वहाँ से उसने अन्दर झाँक कर देखा तो देखा कि उस दीवार के दूसरी तरफ तो पूरा का पूरा एक शहर बसा हुआ था। ऐसा लगता

था कि जैसे वह दीवार उस शहर को जंगली जानवरों से बचाने के लिये बनायी गयी थी।

किसी तरह से वह नौजवान उस दीवार से शहर की तरफ नीचे की तरफ उतर गया और शहर में घुसा। उसने सोचा कि सबसे पहले वह कुछ खाने के लिये खरीदेगा फिर वह कुछ और करेगा सो वह एक सड़क पर चला जिसके दोनों तरफ दूकानें थीं।

वहॉ वह एक बेकरी[79] की दूकान में घुस गया और उससे डबल रोटी मॉगी पर दूकान वाले ने उसको कोई जवाब ही नहीं दिया।

फिर वह एक सूअर का मॉस बेचने वाले की दूकान पर गया और वहॉ पर उसने उससे सलामी मॉगी पर उस दूकान वाले ने भी उसको कोई जवाब नहीं दिया।

इस तरह वह कई दूकानों पर गया पर किसी ने उसको कोई जवाब नहीं दिया।

नौजवान ने सोचा कि उसको उस जगह के राजा के पास जाना चाहिये और उससे बात करनी चाहिये कि यह सब क्या मामला है सो वह सीधे राजा के महल की तरफ चल दिया।

[79] Bakery is a place where the things are made by the process of baking, such as bread, biscuits, cakes, buns etc.

महल के दरवाजे पर पहुँच कर उसने चौकीदार से कहा कि वह राजा से बात करना चाहता था वह उसको राजा के पास ले चले पर चौकीदार भी कुछ नहीं बोला वह भी चुप ही रहा।

यह सब देख कर वह नौजवान बहुत परेशान हुआ क्योंकि वह किसी से बात ही नहीं कर पा रहा था। फिर वह खुद ही महल में चला गया और वहाँ के कमरों में घूमने लगा।

घूमते घूमते वह एक बहुत ही सुन्दर कमरे में आ गया जिसमें एक शाही पलंग पड़ा हुआ था। उसके पास ही एक शाही मेज रखी थी जिसके ऊपर एक शाही हाथ धोने का बर्तन रखा हुआ था।

उसने सोचा कि यहाँ तो मुझसे कोई कुछ कह ही नहीं रहा है सो मैं इस पलंग पर थोड़ी देर के लिये सो जाता हूँ। तभी दो नौजवान लड़कियाँ वहाँ आयीं और बिना कुछ बोले उन्होंने एक मेज पर रात का खाना लगाया। उसने पेट भर कर खाना खाया और फिर उसी पलंग पर सो गया।

इस तरह से उसने इस शान्त शहर से अपनी नयी ज़िन्दगी शुरू की। एक रात जब वह अपने इस शाही बिस्तर में सो रहा था तो वहाँ एक स्त्री अपनी दो दासियों के साथ आयी।

वह सिर से पाँव तक ढकी हुई थी। उसने उस नौजवान से पूछा — "क्या तुम साहसी हो?"

"हाँ हूँ।"

"अगर ऐसा है तो मैं तुमको अपना भेद बताती हूँ। मैं सम्राट स्कौरज़ोन[80] की बेटी हूँ। उन्होंने मरने से पहले एक जादूगर[81] से इस सारे शहर पर जादू डलवा दिया था। उस जादू में इस शहर में सारे रहने वाले, नौकर, सेना और मैं खुद भी शामिल थे।

पर अगर तुम मेरे साथ मुझको बिना देखे एक साल तक यहाँ रहोगे और मेरा यह भेद भी किसी के ऊपर भी नहीं खोलोगे तभी यह जादू टूटेगा। फिर तुम यहाँ के सम्राट हो जाओगे और मैं रानी और फिर सभी तुम्हारी तारीफ करेंगे।

नौजवान बोला — "मैं साहसी भी हूँ और ताकतवर भी।"

पर कुछ दिन बाद ही उसने उस लड़की से कहा कि वहाँ उसके साथ सारे साल शान्ति से रहने के लिये उसको अपने पिता के पास जा कर उनसे, अपनी माँ से और अपने गौडफादर सबसे इजाज़त लेनी पड़ेगी। लेकिन उन सबसे इजाज़त ले कर वह जल्दी ही वहाँ वापस लौट आयेगा।

हालाँकि उस लड़की को उस पर पूरा यकीन नहीं था कि वह वहाँ से जा कर फिर वापस आ जायेगा पर फिर भी जब उस नौजवान ने उससे बार बार यही कहा तो उसने उसके लिये एक जहाज़ तैयार करा दिया और अपनी कुछ कीमती चीज़ें भी उसके जहाज़ पर रखवा दीं।

---

[80] Scorzone

[81] Translated for the word "Sorcerer".

फिर उसने उसको एक छड़ी दी और कहा — "तुम यह छड़ी रखो। तुम जहाँ भी जाना चाहो इसको बोल देना यह तुमको उसी पल वहाँ पहुँचा देगी। पर एक बात तुम हमेशा याद रखना कि तुम मेरा यह भेद किसी पर खोलना नहीं।"

"ठीक है" कह कर वह नौजवान जहाज़ पर चढ़ा और उस छड़ी पर हाथ मारा तो उसने अपने आपको अपने पिता के शहर के बन्दरगाह पर पाया। उसने वे कीमती चीज़ें वहाँ की सबसे अच्छी सराय में ले जाने का हुक्म दिया और वह भी उसी सराय में जा कर ठहर गया।

उसने वहाँ के लोगों से पूछा — "क्या तुम लोग यहाँ किसी समुद्री सौदागर को जानते हो?"

लोगों ने बताया कि उस शहर में दो यात्री समुद्री सौदागर थे। वे दोनों आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे और वहाँ के बहुत ही जाने माने सौदागर थे पर हाल ही में वे दोनों ही बहुत गरीब हो गये हैं।

उनमें से एक सौदागर के एक बेटा था जो एक बार दूसरे सौदागर के साथ उसके जहाज़ पर गया और वहाँ समुद्र में खो गया। लोगों ने उसको बताया कि वह एक ऐक्सीडैन्ट था पर उसके पिता ने यह मानने से इनकार कर दिया कि वह एक ऐक्सीडैन्ट था।

पर उसने इसके लिये अपने दोस्त को जिम्मेदार ठहराया और उस पर मुकदमा चला दिया। उसी मुकदमे में दोनों अपना अपना पैसा गँवा बैठे।

यह सुन कर उस नौजवान ने अपने पिता को बुलवाया तो उसके पिता ने उसको पहचाना ही नहीं।

लड़का बोला — "मैं आपके और आपके साथी के साथ एक व्यापारिक रिश्ता जोड़ना चाहता हूँ क्योंकि आपको समुद्री सौदागर होने का अच्छा अनुभव है।"

पिता बोला — "यह नामुमकिन है। मैं और मेरा साथी दोनों ही दिवालिया हो चुके हैं क्योंकि हम लोग अपने बेटे के ऊपर मुकदमा लड़ रहे थे और उसी में हमारा सारा पैसा खत्म हो गया है। ऐसा इस लिये हुआ क्योंकि मेरे साथी की वजह से मेरा बेटा मर गया।"

नौजवान बोला — "इस बात का इससे कोई मतलब नहीं है कि आपके पास पैसा है या नहीं है। व्यापार के लिये पैसा मैं लगाऊँगा।"

फिर उसने अपने पिता के लिये बहुत बढ़िया खाना लाने का आर्डर दिया और पिता के दोस्त को भी बुलवा लिया। उन दोनों की पत्नियों को भी बुलवा लिया गया। किसी ने भी उसको नहीं पहचाना।

जब उस सराय में सबने एक दूसरे को देखा तो दोनों आदमी और उनकी पत्नियाँ एक दूसरे पर चिल्ला पड़े और लड़ने लगे क्योंकि अब तो वे एक दूसरे के दुश्मन थे।

उन्होंने साथ खाने की कोशिश तो की पर क्योंकि अब वे एक दूसरे के दुश्मन हो चुके थे इसलिये उनके गले से खाना नीचे ही नहीं उतर पा रहा था।

तब उस नौजवान ने अपनी प्लेट से एक चम्मच भर कर खाना उठाया और अपने पिता की तरफ यह कहते हुए बढ़ाया — "पिता जी, अपने बेटे के हाथ से यह कौर स्वीकार कीजिये। आपका बेटा ज़िन्दा है सुरक्षित है और आपके सामने बैठा है।"

यह सुन कर वे सब खुशी से उछल पड़े। खुशी से पागल हो कर सब एक दूसरे से गले मिले और रो पड़े। लड़के ने अपनी लायी कीमती चीज़ें अपने पिता और गौडफादर में बॉट दीं ताकि वे फिर से अपना काम शुरू कर सकें।

फिर वह बोला — "पिता जी, अभी मुझे जाना है इसलिये अभी तो मैं चलूँगा। फिर मिलते हैं, अच्छा विदा।"

मॉ ने पूछा — "पर तू जा कहॉ रहा है बेटा?"

लड़का बोला — "यह मैं आपको अभी नहीं बता सकता।"

पर जब उसकी मॉ उससे बार बार पूछती ही रही तो आखिर उसे सम्राट स्कोरज़ोन की बेटी के बारे में बताना ही पड़ा जिसको उसने किसी भी हालत में किसी को भी बताने से मना कर रखा था। और अगर उसने बता दिया तो फिर वह उसको कभी नहीं देख पायेगा – और वह तो बहुत सुन्दर थी।

यह सुन कर माँ बोली — "सुन, मैं तुझे एक टैनब्रे[82] मोमबत्ती देती हूँ। जब वह लड़की सो जाये तो इस मोमबत्ती को जला देना। तब तू इस मोमबत्ती की रोशनी में उसे देखना कि वह कैसी लगती है।"

लड़के ने माँ से वह मोमबत्ती ले ली और अपने जहाज़ पर चढ़ गया। उसने अपनी छड़ी पर फिर हाथ मारा तो वह सम्राट स्कोरज़ोन के शहर के बन्दरगाह पर था। वहाँ से वह शाही महल गया जहाँ सम्राट की बेटी उसका इन्तजार कर रही थी। रात को वे लोग सोने चले गये।

वह लड़का तो रात होने का और उस राजकुमारी के सोने का ही इन्तजार कर रहा था कि कब वह सोये और कब वह मोमबत्ती जला कर उसकी सुन्दरता को देखे।

सो जब वह सो गयी तो उसने अपनी माँ की दी हुई मोमबत्ती उठायी, उसको जलाया और उसके चेहरे से उसका परदा उठाना शुरू किया।

पर तभी मोमबत्ती के पिघलते हुए मोम की एक बूँद उस लड़की के चेहरे के ऊपर गिर पड़ी जिससे वह जाग गयी और चिल्लायी — "दगाबाज, तुमने मेरा भेद खोल दिया अब तुम मुझे कभी आजाद नहीं करा पाओगे। उफ़ बहुत मुश्किल है।"

[82] Tanbrae

लड़का बोला — “मुझे बहुत अफसोस है पर फिर भी मैं तुमको आजाद कराने की पूरी कोशिश करूँगा। क्या कोई और रास्ता नहीं है?”

राजकुमारी बोली — “है, मगर बहुत कठिन है। तुम जंगल जाओ और उस जादूगर से जा कर लड़ो जिसने हम सबके ऊपर यह जादू कर रखा है और उसे मार दो। तभी हम सब आजाद हो सकते हैं।”

“और उसको मारने के बाद?”

“उसको मारने के बाद तुम उस जादूगर का पेट खोलोगे तो उसमें तुमको एक खरगोश मिलेगा। उस खरगोश को भी काट दोगे तो उसमें तुमको एक फाख्ता[83] मिलेगी।

फाख्ता को भी काट दोगे तो उसके अन्दर तुमको तीन अंडे मिलेंगे। उन अंडों की तुम अपनी जान की तरह से हिफाजत करना और उनको यहाँ ले आना। बस ध्यान रखना कि वे टूटें नहीं।

तभी सारा शहर और हम सब इस जादू से आजाद हो पायेंगे नहीं तो हम सब इस जादू के असर में हमेशा के लिये पड़े सड़ते रहेंगे और हमारे साथ साथ तुम भी। यह छड़ी लो और जा कर उससे लड़ो।”

[83] Translated for the word “Dove”. See its picture above.

लड़के ने उससे वह छड़ी ली और वहाँ से चल दिया। रास्ते में उसको गायों का एक झुंड मिला। वह उन गायों के मालिक से मिला और बोला — "जनाब क्या आप मुझे थोड़ी सी डबल रोटी देंगे? मैं यहाँ खो गया हूँ और बहुत भूखा हूँ।"

गायों के मालिक ने उसे खाना खिलाया और उसको अपने पास गाय चराने के लिये चरवाहा रख लिया। उसके पास कई और चरवाहे भी थे।

एक दिन गायों के मालिक ने उन सब चरवाहों से कहा — "इन गायों को घास के मैदान में चराने के लिये ले जाओ पर जो कुछ भी तुम करो सो करो पर तुम उनको जंगल में भटकने मत देना। क्योंकि वहाँ एक जादूगर रहता है जो आदमियों को ही नहीं मारता बल्कि गायों को भी मार देता है।"

वह लड़का गायों का एक झुंड ले कर चला गया और जब गायें जंगल के पास पहुँचीं तो उसने उनको चिल्ला कर उसी जंगल में भेज दिया जिसमें गायों के मालिक ने उनको भेजने के लिये मना किया था।

मालिक को जब यह पता चला तो उसने पूछा कि अब उनको उस जंगल में से निकाल कर लायेगा कौन। उधर कोई भी चरवाहा जाने के लिये तैयार नहीं था सो मालिक ने उसी नये चरवाहे को उस जंगल में उन गायों को लाने के लिये भेज दिया।

साथ में उसने उसके साथ एक लड़का और भी भेज दिया। वे जंगल में घुसे तो उस साथ में गये लड़के को बहुत डर लगा।

उधर जादूगर ने जब गायों को अपने जंगल में देखा तो वह गुस्से के मारे आग बबूला हो गया। उसने लोहे की एक छड़ निकाली और उसको ले कर बाहर आया। उस छड़ में छह काँटे लगे हुए थे।

वह लड़का तो उस जादूगर को देख कर इतना डर गया कि वह एक बड़ी सी झाड़ी में छिप गया। पर वह नया चरवाहा वहीं खड़ा रहा और उस जादूगर के अपने पास तक आने का इन्तजार करता रहा।

वह जादूगर उस लड़के के पास आ कर बोला — "ओ गद्दार, तेरी यह हिम्मत कैसे हुई कि यहाँ आ कर तू मेरा जंगल बर्बाद करे?"

नया चरवाहा बोला — "मैं यहाँ तुम्हारा केवल जंगल ही बर्बाद करने नहीं आया बल्कि उसको बर्बाद करने के साथ साथ तुमको भी मारने आया हूँ।"

और फिर दोनों में लड़ाई शुरू हो गयी। वे दोनों काफी देर तक लड़ते रहे। सारा दिन लड़ते लड़ते वे थक तो गये पर इस लड़ाई में किसी को खरोंच तक नहीं आयी।

तब वह जादूगर बोला — “अगर मैंने डबल रोटी के साथ सूप और शराब पी ली होती तो मैंने तुझे सूअर की तरह काट डाला होता।”

इस पर नये चरवाहे ने जवाब दिया — “अगर मैंने दूध और डबल रोटी खा ली होती तो मैंने तो तेरा सिर ही काट डाला होता।”

फिर दोनों ने एक दूसरे को विदा कहा और अगले दिन अपनी लड़ाई फिर से जारी रखने का वायदा कर के वहाँ से चले गये।

अगले दिन नये चरवाहे ने अपनी गायें इकट्ठी कीं, अपने साथ आये लड़के को लिया और बाड़े में आ गया। उन सबको ज़िन्दा देख कर किसी के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला।

लड़के ने उन सबको नये चरवाहे और जादूगर के बीच हुई लड़ाई का पूरा हाल सुनाया। उसने उन लोगों के सामने उनमें आपस में कहे गये शब्द भी बार बार दोहराये।

उसने जादूगर की इच्छा भी बतायी कि अगर उसने डबल रोटी का सूप और शराब पी ली होती तो वह नये चरवाहे को सूअर की तरह काट डालता। और नये चरवाहे की इच्छा भी बतायी कि अगर नये चरवाहे ने दूध और डबल रोटी खा ली होती तो वह उसका सिर काट डालता।

यह सुन कर गायों के मालिक ने अपने एक नौकर को नये चरवाहे के लिये डबल रोटी और दूध लाने का हुक्म दिया और उसको उनको अपने साथ जंगल ले जाने के लिये कहा।

सो अगले दिन उस नये चरवाहे ने डबल रोटी और दूध लिया और अपनी गायें चराने जंगल चल दिया। उधर वह जादूगर भी आ गया। दोनों की लड़ाई फिर से शुरू हो गयी।

जब उनकी लड़ाई अपने पूरे ज़ोर पर थी तो जादूगर बोला — "अगर मैंने डबल रोटी के साथ सूप और शराब पी ली होती तो मैं तुमको सूअर की तरह काट डालता।" पर वहाँ डबल रोटी सूप और शराब तो थी ही नहीं।

इस पर नया चरवाहा बोला — "अगर मैंने दूध और डबल रोटी खा ली होती तो मैं तेरा सिर काट डालता।"

और उसी समय उसके साथ आये लड़के ने उसको एक बालटी भर दूध और डबल रोटी दे दी। नये चरवाहे ने एक डबल रोटी खायी और उस बालटी में से एक बड़ा सा घूँट दूध पिया और फिर तुरन्त ही उस जादूगर के सिर पर एक ज़ोर का घूँसा मारा। घूँसा खा कर जादूगर नीचे गिर पड़ा और मर गया।

उसने तुरन्त ही जादूगर का पेट खोला तो उसमें उसे एक खरगोश मिला। खरगोश को काटा तो फाख्ता मिली और फाख्ता को खोला तो उसमें उसके तीन अंडे मिले।

उसने वे तीनों अंडे निकाले और उनको सँभाल कर दूर रख दिया। अपनी गायों को हॉक कर वह बाड़े में ले गया। वहॉ उसका खूब ज़ोर शोर से स्वागत हुआ।

गायों का मालिक उसको अपने खेत पर रखना चाहता था पर उस नौजवान ने मना कर दिया। उसने जादूगर का जंगल गायों के मालिक को भेंट कर दिया और खुद उसको विदा कह कर वहॉ से चला गया।

उसने जंगल में रखे फाख्ता के वे तीनों अंडे उठाये और अपने शहर चल दिया। जब वह अपने शान्त शहर में वापस आया तो वह तुरन्त ही शाही महल में गया।

वह राजकुमारी उससे मिलने के लिये बाहर तक दौड़ी आयी और उसका हाथ पकड़ कर उसको अन्दर ले गयी। वह उसको सम्राट के छिपे हुए कमरे में ले गयी।

वहॉ उसने अपने पिता का ताज उठाया और उस नौजवान के सिर पर रख दिया और बोली — "आज से तुम इस शहर के बादशाह हो और मैं तुम्हारी रानी।"

फिर वह उसको महल के छज्जे पर ले गयी वहॉ जा कर उसने वे तीनों अंडे अपने हाथ में लिये और बोली — "लो, इसमें से एक अंडा अपने दॉये हाथ की तरफ फेंक दो, दूसरा अंडा अपने बॉये हाथ की तरफ फेंक दो और तीसरा अंडा बिल्कुल अपने सामने की तरफ फेंक दो।"

जैसे ही उसने वे तीनों अंडे फेंके शहर के सारे लोगों ने बात करना शुरू कर दिया। सारा शहर शोर शराबे से गूँज उठा। लगता था जैसे सोया शहर जाग गया हो। बच्चे शोर मचाने लगे, गाड़ियाँ सड़क पर दौड़ने लगीं, सेना अपने आपको सँभालने लगी, चौकीदार बदलने लगे और सब एक साथ चिल्लाये "सम्राट की जय हो। सम्राट ज़िन्दाबाद"।

राजकुमारी ने उस नौजवान से शादी कर ली और वे ज़िन्दगी भर राजा और रानी रहे – पर हम लोग तो अभी भी गरीब हैं।

13 एक नाव जिसमें...[84]

एक लड़के के माता पिता सेन्ट माइकिल द आर्कऐन्जिल[85] के बहुत बड़े भक्त थे। उनका कोई साल ऐसा नहीं जाता था जब वे उसकी दावत[86] का दिन नहीं मनाते थे।

कुछ दिनों बाद उस लड़के के पिता मर गये। पर उसकी माँ के पास जितना भी कम पैसा था उसी से वह सेन्ट माइकिल का दिन हर साल मनाती रही।

और फिर एक साल ऐसा भी आया जब उसके पास एक पैनी भी नहीं थी और न ही उसके पास कुछ बेचने के लिये ही था जिसको बेच कर सेन्ट माइकिल की दावत का दिन मनाने के लिये वह कुछ पैसा इकट्ठा कर लेती सो वह अपने बच्चे को बेचने के लिये राजा के पास ले गयी।

"मैजेस्टी, क्या आप मेरा यह छोटा सा बच्चा खरीदेंगे? मैं इसके लिये आपसे केवल बारह क्राउन[87] माँग रही हूँ और या फिर जो कुछ आप देना चाहें। यह मैं सेन्ट माइकिल का दिन मनाने के लिये माँग रही हूँ।"

[84] A Boat Loaded With… Tale No 173. A folktale from Italy from its Terra d'Otranto area.
[85] Saint Michael, the Archangel
[86] Feast of Saint Michael
[87] Crown was the currency in use at that time in Europe.

राजा ने उसको सौ सोने के सिक्के दिये और उसके बेटे को अपने पास रख लिया।

उस स्त्री के जाने के बाद वह सोचने लगा — "इस बेचारी स्त्री को देखो इसने सेन्ट माइकिल का त्यौहार मनाने के लिये अपने बेटे को बेच दिया और एक मैं राजा हूँ और फिर भी मैं उसका त्यौहार नहीं मनाता।"

सो उसने एक चैपल[88] बनवाया, सेन्ट माइकिल की एक मूर्ति खरीदी और फिर उसका दिन धूमधाम से मनाया। पर जब त्यौहार खत्म हो गया तो उसने उसकी मूर्ति को एक कपड़े से ढक दिया और उसके बारे में फिर कभी सोचा भी नहीं।

उस छोटे लड़के का नाम पैपी[89] था। वह राजा के महल में ही रह कर पलता रहा और राजा की बेटी के साथ खेल खेल कर बड़ा होता रहा।

राजा की बेटी भी उतनी ही बड़ी थी जितना बड़ा पैपी था। वे दोनों हमेशा साथ साथ रहते और साथ साथ खेलते। जब वे बड़े हो गये तो उनकी दोस्ती प्यार में बदल गयी।

राजा की काउन्सिल ने इसे देखा तो राजा को बताया — "मैजेस्टी, यह सब क्या हो रहा है? आप अपनी बेटी की शादी उस गरीब लड़के से तो करने से रहे।"

---

[88] A chapel is a religious place of fellowship, prayer and worship that is attached to a larger, often nonreligious institution or that is considered an extension of a primary religious institution.
[89] Peppi – name of the boy whose mother sold him to the King.

राजा बोला — "तब मैं क्या करूँ? क्या मैं उसे कहीं भेज दूँ?"

काउन्सिल के लोगों ने कहा — "अगर आप हमारी सलाह मानें तो उसको अपनी सबसे पुरानी नाव में व्यापार करने के लिये भेज दें और उसके कैप्टेन को यह हुक्म दे दें कि वह उस नाव को खुले समुद्र में पहुँच कर डुबो दे। इससे वह भी वहीं कहीं डूब जायेगा और आपकी परेशानी भी हमेशा के लिये खत्म हो जायेगी।"

राजा को यह विचार अच्छा लगा सो उसने पैपी को बुलाया और उससे कहा — "सुनो बेटा, अब तुम बड़े हो गये हो। तुम मेरी एक नाव ले लो और उसको ले कर व्यापार करने चले जाओ। तीन दिन में तुम अपनी नाव में जो कुछ रखना चाहो वह रख लो।"

पैपी रात भर यही सोचता रहा कि वह नाव में क्या सामान ले कर जाये। वह सारी रात सोचने पर भी कुछ निश्चय नहीं कर पाया। दूसरी रात भी वह यही सोचता रहा पर दूसरी रात भी वह कुछ नहीं सोच पाया। तीसरी रात भी वह यही सोचता रहा पर जब उसको कुछ समझ में नहीं आया तो वह सेन्ट माइकिल के पास गया।

सेन्ट माइकिल उसके सामने प्रगट हुए और बोले — "तुम इतने हताश न हो पैपी। राजा से बोलो कि वह तुम्हारी नाव नमक से भर दे।"

सो सुबह होते ही वह खुशी खुशी राजा के पास गया तो राजा ने पूछा — “पैपी तुमने कुछ सोचा कि तुम अपनी नाव पर क्या ले जाना चाहते हो?”

पैपी बोला — “जी मैजेस्टी, आप मेरी नाव नमक से भरवा दें।”

राजा की काउन्सिल के लोग यह सुन कर मुस्कुरा दिये। उन्होंने सोचा यह तो बिल्कुल ठीक है। नमक के बोझ से तो वह नाव अपने आप ही डूब जायेगी। राजा ने पैपी की नाव में नमक भरवा दिया और पैपी उस नमक से भरी नाव को ले कर चल दिया।

उस बड़ी नाव में एक छोटी नाव भी थी। उसको देख कर पैपी ने नाव के कैप्टेन से पूछा — “यह क्या है?”

कैप्टेन बोला — “यह मेरी नाव है।”

जैसे ही वे लोग खुले समुद्र में पहुँचे कैप्टेन ने वह छोटी नाव समुद्र में उतारी और उसमें बैठ कर बोला — “गुड नाइट पैपी।” और पैपी को बड़ी नाव के ऊपर अकेला छोड़ कर वह वहाँ से चल दिया।

कुछ ही देर में पैपी की नाव में छेद हो गया और उसकी नाव में पानी भरने लगा और उसको लगा कि उसकी नाव तो उस भयानक समुद्र में अब किसी भी समय डूब सकती थी।

पैपी के मुँह से निकला — “ओ मॉ, ओ लौर्ड, ओ सेन्ट माइकिल, मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो।”

पल भर में ही एक ठोस सोने का जहाज वहॉ प्रगट हो गया और उसके किनारे पर सेन्ट माइकिल खड़े थे। उन्होंने पैपी की तरफ एक रस्सा फेंका जिसे पैपी ने तुरन्त पकड़ लिया और अपनी नाव को सेन्ट माइकिल की नाव से बॉध लिया।

सेन्ट माइकिल की नाव समुद्र पर जल्दी जल्दी चल दी जैसे आसमान पर बिजली दौड़ती है और एक अनजाने से बन्दरगाह पर जा कर रुक गयी।

किनारे पर से आवाजें आयी — “क्या तुम शान्ति के लिये आये हो या फिर लड़ने के लिये आये हो?”

पैपी बोला — “हम शान्ति के लिये आये हैं।”

ऐसा कहने पर वहॉ के लोगों ने उसको अपनी नाव अपने बन्दरगाह पर लगाने की इजाज़त दे दी और वह वहॉ उतर गया।

शाम को उस देश के राजा ने पैपी और उसके साथी को खाने के लिये बुलाया। उसको यह पता नहीं था कि पैपी का साथी सेन्ट माइकिल थे।

सेन्ट माइकिल ने पैपी से कहा — “ध्यान रखना कि इन लोगों को यह पता नहीं है कि नमक क्या होता है।” सो पैपी जब वहॉ के राजा के घर खाना खाने गया तो एक थैला नमक उसके लिये ले गया।

वे लोग शाही मेज पर खाना खाने बैठे और खाना खाना शुरू किया पर उस खाने में कोई स्वाद नहीं था। पैपी ने राजा से पूछा — "मैजेस्टी, आपका खाना ऐसा क्यों है?"

राजा बोला — "क्यों इस खाने में क्या बात है? हम लोग तो रोज ऐसा ही खाना खाते हैं।"

इस पर पैपी ने अपने साथ लाया थैला खोला और थोड़ा थोड़ा नमक हर एक के खाने के ऊपर छिड़क दिया और फिर उनको वह खाना खाने के लिये कहा। उन्होंने पहले वह खाना चखा फिर उन्होंने उसके कुछ और कौर खाये तो पैपी ने उनसे पूछा कि उनको वह खाना कैसा लगा।

राजा बोला — "यह खाना तो बहुत स्वादिष्ट है। क्या तुम्हारे पास यह चीज़ काफी है?"

पैपी बोला — "मेरी तो सारी नाव इसी से भरी है।"

राजा ने पूछा — "तुमको इसकी कितनी कीमत चाहिये?"

पैपी बोला — "इसी के बोझ के बराबर सोना।"

राजा बोला — "तो मैं तुम्हारी पूरी नाव ही खरीद लेता हूॅ।"

"ठीक है।"

खाना खाने के बाद पैपी ने अपनी नाव से नमक उतरवाया और उसको तुलवाया। तराजू के एक पलड़े में नमक रखा और दूसरे में सोना। इस तरह पैपी ने अपना सारा नमक उतने ही बोझ के सोने

के बदले में उस राजा को बेच दिया। फिर उसने अपनी नाव का छेद बन्द किया और वापस अपने देश चल पड़ा।

पैपी के जाने के बाद राजकुमारी अपने दिन छज्जे पर बैठ कर गुजारती थी। वह अपनी दूरबीन लिये बैठी रहती और दूर समुद्र की तरफ देखती रहती कि उसका पैपी कब वापस आयेगा।

जब उसने देखा कि पैपी की नाव वापस आ रही थी तो वह खुशी से अपने पिता के पास दौड़ी गयी — "पिता जी पिता जी, पैपी वापस आ गया। पिता जी, पैपी वापस आ गया।"

राजा दुखी मन से पैपी को लेने गया। जैसे ही पैपी ने जमीन पर पैर रखा राजा को उसने झुक कर सलाम किया और सारा सोना निकाल कर राजा को दे दिया।

राजा की काउन्सिल के लोग तो यह सब देख कर बहुत ही गुस्सा हो गये क्योंकि उनका तो सारा प्लान ही बेकार हो गया। पैपी तो केवल ज़िन्दा ही नहीं लौटा था बल्कि वह तो उतने नमक के बदले उतना ही सोना ले आया था।

उन्होंने राजा से कहा — "यह तो उससे भी ज़्यादा है जो हमने सोचा था।"

राजा बोला — "अब मैं इस बारे में क्या कर सकता हूँ?"

काउन्सिल ने कहा — "इसको एक बार और भेज दीजिये राजा साहब।"

कुछ दिन बाद राजा ने पैपी को एक दूसरी नाव सामान ले कर भेजने का प्लान बनाया सो उसने पैपी को फिर बुलाया और उससे कहा — "अबकी बार तुम किसी दूसरे सामान के साथ जाने का प्लान बनाओ क्योंकि तुमको फिर से व्यापार करने जाना है। तुमने पिछली बार बहुत अच्छा व्यापार किया था।"

कुछ सोचने के बाद पैपी ने फिर से सेन्ट माइकिल को याद किया तो इस बार उन्होंने उसको सलाह दी कि वह अपनी नाव बिल्लियों से भर ले।

जब पैपी ने राजा को बताया कि वह अपनी नाव में बिल्लियॉ ले कर जायेगा तो राजा ने अपने सारे राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि राज्य की सारी बिल्लियॉ राजा के पास लायी जायें राजा सारी बिल्लियों को खरीदना चाहता है।

राजा का हुक्म। राजा के पास बहुत सारी बिल्लियॉ जमा हो गयीं और पैपी उन सब बिल्लियों को अपनी नाव में लाद कर उनके व्यापार के लिये चल दिया।

जब नाव समुद्र में काफी आगे निकल गयी तो उसकी नाव के कैप्टेन ने फिर से उससे कहा "गुड नाइट" और अपनी छोटी वाली नाव में बैठ कर उसको बड़ी नाव में अकेला छोड़ कर वहॉ से चला गया।

पैपी एक बार फिर भौंचक्का सा देखता रह गया। कुछ देर में उसकी नाव में फिर से छेद हो गया और उसकी नाव डूबने लगी। पैपी ने फिर से सेन्ट माइकिल को याद किया।

पल भर में ही उनकी सोने की नाव फिर से समुद्र की सतह पर प्रगट हुई और उन्होंने एक रस्सी पैपी की तरफ फेंकी। पैपी ने तुरन्त ही उस रस्सी को पकड़ लिया और पहले की तरह से उससे अपनी नाव बॉध ली।

उसकी नाव फिर से बिजली की तेज़ी से बहती हुई एक अनजान बन्दरगाह पर जा कर रुक गयी।

वहॉ भी उन्होंने पैपी से पूछा कि वह शान्ति के लिये आया है या लड़ाई के लिये। पैपी ने कहा "शान्ति के लिये।" तो वहॉ के लोगों ने भी उसको वहॉ उतरने की इजाज़त दे दी और उसका स्वागत किया।

उस टापू पर भी वहॉ के राजा ने पैपी और उसके साथी को अपने यहॉ खाना खाने के लिये बुलाया। पैपी जब वहॉ खाने की मेज पर बैठा तो यह देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि हर आदमी की प्लेट के साथ साथ एक एक झाड़ू रखी हुई थी।

पैपी ने पूछा — "मैजेस्टी, यह झाड़ू किसलिये?"

राजा बोला — यह तुमको अभी एक मिनट में पता चल जायेगा।"

थोड़ी देर में खाना आया तो खाने के साथ आये बहुत सारे चूहे। वे मेज पर रखी प्लेटों पर कूद पड़े। हर आदमी अपने पास रखी झाड़ू से उनको पीट पीट कर भगाने की कोशिश कर रहा था। पर उनको भगाने का यह तरीका कोई ज़्यादा कारगर नहीं हो पा रहा था। सभी मजबूर थे।

सेन्ट माइकिल ने पैपी से कहा — "तुम अपने साथ जो थैला ले कर आये हो वह खोलो।"

पैपी ने अपने साथ लाया एक थैला खोला तो उसमें से चार बिल्लियाँ निकल पड़ीं। वे सब उन चूहों पर कूद पड़ीं और उन सब को बहुत जल्दी ही खा गयीं।

राजा तो यह देख कर बहुत खुश हो गया और खुशी से चिल्लाया — "अरे यह तो क्या ही आश्चर्यजनक छोटा सा जानवर है। क्या तुम्हारे पास ये जानवर बहुत सारे हैं?"

लड़के ने जवाब दिया — "हमारी पूरी नाव इन्हीं जानवरों से भरी है।"

राजा ने फिर पूछा — "क्या तुमको इनके लिये बहुत सारी दौलत चाहिये?"

लड़का बोला — "बस इनके तौल के बराबर सोना।"

राजा खुशी से बोला — "बहुत अच्छे।" और राजा ने पैपी की नाव की सारी बिल्ल्यिाँ खरीद लीं। उसने पैपी को सारी बिल्लियाँ तौल कर उनके बराबर सोना दे दिया।

बिल्लियाँ बेच कर और उनके बोझ के बराबर सोना कमा कर वे फिर बिजली की सी तेज़ी से अपने देश वापस आ गये।

राजकुमारी तो पैपी का इन्तजार ही कर रही थी। पैपी को देखते ही फिर उसने भाग कर अपने पिता को बताया कि पैपी अपनी यात्रा से वापस आ गया है।

पैपी को फिर से ज़िन्दा वापस आया देख कर और फिर से नाव भर कर सोना लाया देख कर राजा फिर से दुखी हो गया।

उसकी काउन्सिल के लोग भी कुछ और न सोच सके सिवाय इसके कि राजा को उसको तीसरी बार व्यापार पर भेजने की सलाह दी।

उन्होंने राजा को विश्वास दिलाया कि वे दो बार तो फेल हो गये थे पर अबकी बार ऐसा नहीं होगा। उसको एक हफ्ता आराम करने दो फिर उसको तीसरी बार व्यापार के लिये भेज देना।

सो एक हफ्ते के बाद राजा ने उसे फिर व्यापार पर जाने के लिये कहा और सोचने के लिये कहा कि वह अबकी बार क्या सामान ले कर जायेगा।

इस बार सेन्ट माइकिल ने पैपी को सलाह दी कि वह राजा से अपनी नाव बीन्स से भरवा ले। पैपी ने ऐसा ही किया। राजा ने भी उसके कहे अनुसार उसकी नाव बीन्स से भर दी पर जब नाव बीन्स से भर गयी तो वह डूबने लगी।

पहले की तरह से सेन्ट माइकिल की सोने की नाव एक बार फिर से प्रगट हुई और पैपी को एक और अनजाने बन्दरगाह पर ले गयी।

वहॉ भी जब पैपी से पूछा गया कि वह लड़ाई के लिये आया है या शान्ति के लिये तो उसने जवाब दिया "शान्ति के लिये" सो उसको उस बन्दरगाह पर भी अपनी नाव लगाने की इजाज़त मिल गयी और वहॉ भी उसका स्वागत हुआ।

इस जगह पर एक रानी राज करती थी। इसने भी दोनों को खाना खाने के लिये बुलाया। खाना खाने के बाद रानी ने एक ताश की गड्डी निकाली और बोली — "आओ, हम लोग ताश की एक बाजी[90] खेलते हैं।"

उन्होंने लैन्सकैनैट[91] का खेल खेलना शुरू किया। रानी इस खेल की चैम्पियन थी। उसने जितने भी लोगों के साथ यह खेल खेला था उन सबको उसने हरा दिया था और फिर उनको जेल में डाल दिया था। यही वह इनके साथ भी करना चाहती थी लेकिन सेन्ट माइकिल को तो वह हरा नहीं सकती थी।

जब खेल शुरू हुआ तो रानी को जल्दी ही पता चल गया कि वह अपने इन मेहमानों को नहीं हरा सकती बल्कि अगर वह उनके

---

[90] Translated for the word "Deal"

[91] Lansquenet is a gambling game of chance

साथ खेलती रही तो वह तो उनसे खुद ही हार जायेगी और अपना सब कुछ गँवा बैठेगी।

यह सोच कर वह बोली — "मैं तुमसे लड़ना चाहती हूँ।"

पैपी बोला — "हम तो शान्ति के लिये आये थे लड़ने के लिये नहीं। पर अगर तुम लड़ना ही चाहती हो तो लड़ाई ही सही।"

उन लोगों ने लड़ाई का समय निश्चित किया और रानी ने अपने सारे सिपाही इकट्ठे कर लिये। पैपी और सेन्ट माइकिल के पास तो कुछ था ही नहीं क्योंकि वे तो शान्ति के लिये गये थे और फिर व्यापार के लिये गये थे। सो लड़ाई के मैदान में केवल वे दोनों ही रानी के सारे सिपाहियों के साथ लड़ रहे थे।

यह देख कर सेन्ट माइकिल ने एक बहुत ही ताकतवर हवा का तूफान पैदा किया जिससे बहुत ही घना धूल का बादल छा गया। वह बादल इतना घना था कि किसी को कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। इसी हालत में सेन्ट माइकिल रानी की तरफ बढ़े और अपनी तलवार से उसका सिर काट लिया।

जब वह धूल का बादल छँटा तो लोगों ने देखा कि रानी का तो सिर कट चुका है तो सारे लोग खुशी से चिल्ला उठे क्योंकि वहाँ का कोई भी आदमी रानी को पसन्द नहीं करता था।

वहाँ के लोगों ने सेन्ट माइकिल से कहा — "हम आपको अपना राजा चुनते हैं। हमारा राजा अमर रहे।"

सेन्ट माइकिल बोले — "मैं तो इस धरती पर किसी दूसरे हिस्से का राजा हूँ इसलिये मैं तुम्हारा राजा नहीं बन सकता। तुम लोग आपस में ही किसी को अपना राजा चुन लो।"

उन्होंने रानी का सिर रखने के लिये लोहे का एक पिंजरा बनाया और उस सिर को उस पिंजरे में रख कर एक सड़क के कोने पर टॉग दिया।

पैपी और सेन्ट माइकिल ने रानी के जेल में बन्द सब कैदियों को आजाद किया। वे सब लोग भूखे थे। उनमें सबमें से बहुत बदबू आ रही थी। वहीं जमीन पर कई लोग मरे हुए भी पड़े हुए थे।

पैपी ने उनके ऊपर एक मुट्ठी भर बीन्स फेंकीं तो सारे लोग उन बीन्स पर टूट पड़े और उनको जानवरों की तरह से खा गये।

बाद में पैपी और सेन्ट माइकिल ने उनको बीन्स का सूप पीने को दिया और उनको उनके घर भेज दिया। उस जगह बीन्स को कोई जानता नहीं था सो पैपी ने अपनी बीन्स उन लोगों को सोने के बराबर तौल कर बेच दीं।

फिर वहाँ से कुछ सिपाही ले कर वह अपने देश वापस आ गया और तोप छोड़ कर राजा को अपने आने की सूचना दी। इस बार सेन्ट माइकिल की सोने की नाव भी राजा के बन्दरगाह तक आयी थी सो राजा ने सेन्ट माइकिल का भी स्वागत किया।

शाम को जब सब खाना खाने बैठे तो सेन्ट माइकिल ने राजा से कहा — "मैजेस्टी, आपके पास एक मूर्ति है जिसकी आपने केवल

एक ही दिन पूजा की और फिर आपने उसको मकड़ी के जाले लगने के लिये छोड़ दिया। आपने ऐसा क्यों किया? शायद आपके पास उसकी पूजा करने के लिये पैसे नहीं थे।"

राजा बोला — "ओह हॉ, शायद वह सेन्ट माइकिल द आर्कऐन्जिल की मूर्ति थी। मैं तो उसको बिल्कुल भूल ही गया था।"

सेन्ट माइकिल बोले — "चलिये चल कर अब उस मूर्ति को देखते हैं।" वे लोग चैपल गये तो वहॉ तो उस मूर्ति पर फंगस लगी पड़ी थी।

अजनबी बोला — "मैं ही सेन्ट माइकिल द आर्कऐन्जिल हूँ और मैं आपसे पूछता हूँ कि मैजेस्टी, आपने इतना गलत काम क्यों किया?"

यह सुन कर राजा तो उनके सामने घुटनों के बल बैठ गया और बोला — "आप मुझे माफ कर दें सेन्ट माइकिल और आप मुझे बतायें कि मैं आपकी सेवा कैसे कर सकता हूँ। आज के बाद मैं आपका दिन बहुत धूमधाम से मनाऊॅगा।"

सेन्ट बोले — "तुम अपनी बेटी की शादी इस पैपी से कर दो क्योंकि ये दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते हैं।"

और राजा ने सेन्ट माइकिल की बात मान कर अपनी बेटी की शादी पैपी से कर दी और राजा के मरने के बाद पैपी वहाँ का राजा हो गया।

14 मुर्गीखाने में राजा का बेटा[92]

कुछ ऐसा कहा गया है कि इटली के किसी शहर में एक चमार रहता था। उसके तीन बेटियाँ थीं – पैप्पा, नीना और नूनज़िया[93]। वे लोग बहुत गरीब थे। हालाँकि वह चमार जूते ठीक करने के लिये गाँव में भी जाता था पर फिर भी उसकी आमदनी बहुत कम होती थी।

उसको घर में पैसा न लाते देख कर उसकी पत्नी बहुत गुस्सा होती — "अरे अभागे, आज मैं क्या पकाऊँगी और तुम सबको क्या खिलाऊँगी?"

रोज रोज की इस लड़ाई से वह चमार तंग आ गया था सो एक दिन उसने अपनी सबसे छोटी बेटी नूनज़िया से कहा — "सुन बेटी, क्या तू कुछ लाने के लिये मेरे साथ चलेगी जिससे हम सूप बना सकें?"

"हाँ हाँ पिता जी चलिये।"

सो दोनों कुछ पत्ते इकट्ठे करने के लिये खेतों की तरफ चल दिये। वे पत्ते ढूँढते ढूँढते खेत के आखीर तक चले गये। तभी नूनज़िया ने एक सौंफ़[94] का पेड़

[92] The King's Son in the Henhouse. Tale No 174 – a folktale from Italy from its Salaparuta area.
[93] Peppa, Nina and Nunzia – the names of the daughters of the cobbler
[94] Translated for the word "Fennel Seed". See its plant's picture above.

देखा। वह इतना बड़ा था कि काफी कोशिशों के बाद भी वह उसे न उखाड़ सकी।

उसने अपने पिता को पुकारा — "पिता जी पिता जी, देखिये तो ज़रा मुझे क्या मिला। पर मैं इसको उखाड़ ही नहीं पा रही हूँ।"

उसका पिता थोड़ी दूर आगे था सो वह वापस लौट कर आया और उसने भी उस पेड़ को उखाड़ने की कोशिश की पर वह भी उस पेड़ को बहुत कोशिशों के बाद ही कहीं उखाड़ सका।

उस पेड़ की जड़ के नीचे एक चोर दरवाजा था। वह दरवाजा खुला हुआ था और उसी के पास एक नौजवान खड़ा हुआ था।

उस नौजवान ने पूछा — "अगर तुम लोग भूख से मर रहे हो तो मैं तुमको अमीर बना सकता हूँ। तुम अपनी बेटी को यहाँ छोड़ जाओ और मैं तुमको एक थैला भर कर पैसे दे देता हूँ।"

गरीब चमार ने आश्चर्य से कहा — "क्या? मैं अपनी बेटी को यहाँ तुमको दे जाऊँ?"

पर उस नौजवान ने जब उसको समझाया तो पिता ने पैसों का थैला उससे ले लिया और अपनी बेटी को वहाँ छोड़ कर चला गया। नूनज़िया उस नौजवान के पीछे पीछे उस तहखाने में चली गयी।

नीचे तहखाने में तो बहुत ही आरामदेह घर था। उसने तो ऐसे घर के बारे में कभी सोचा ही नहीं था। वह तो जैसे स्वर्ग में आ गयी थी। उसकी ज़िन्दगी तो जैसे सुखों से भर गयी थी। पर फिर भी बस वह अपने पिता और बहिनों को बहुत याद करती थी।

उधर वह चमार अब बहुत अमीर हो गया था और उसके घर में मुर्गा और गाय का मॉस रोज ही पकता था।

एक दिन पैप्पा और नीना ने अपने पिता से कहा — “पिता जी, हमारा अपनी बहिन नूनज़िया को देखने का मन करता है। क्या आप हमको उससे मिलाने ले चलेंगे?”

“हॉ हॉ क्यों नहीं।”

सो वे सब उस जगह गये जहॉ उन्होंने वह सौंफ का पेड़ देखा था। वह सौंफ का पेड़ अभी भी वहीं था। पिता ने वह सौंफ का पेड़ उखाड़ा और फिर उसके नीचे छिपा हुआ चोर दरवाजा खटखटाया।

नौजवान ने दरवाजा खोला और उन सबको प्रेम से अन्दर बुलाया। नूनज़िया अपनी बहिनों को देख कर बहुत खुश हुई और उनको अपना सारा घर दिखाया। पर उसमें एक कमरा ऐसा था जिसको उसने खोल कर दिखाने से मना कर दिया।

उसकी बहिनों ने पूछा — “पर तुम इस कमरे को क्यों नहीं खोल रहीं? ऐसा क्या है इसमें?”

उनको यह जानने की बड़ी उत्सुकता थी कि उस बन्द कमरे में क्या था और उनकी बहिन उस कमरे को क्यों नहीं खोल रही थी।

नूनज़िया बोली — “मुझे भी नहीं मालूम है कि इस कमरे में क्या है। मैं भी इस कमरे में पहले कभी नहीं आयी। मेरे पति ने मुझे इस कमरे में जाने से मना किया है।”

उसके बाद नूनज़िया अपने बाल बनाने जाने लगी तो उसकी बहिनों ने कहा कि आज हम तुम्हारे बाल बनाते हैं। जब बहिनों ने उसके बाल खोले तो उनमें उनको एक चाभी मिल गयी।

पैप्पा नीना के कान में फुसफुसायी — "यह देखा? लगता है यह चाभी जरूर ही उसी कमरे की है जिसे यह हमको दिखाना नहीं चाहती।"

उन्होंने चुपके से उसके बालों में से वह चाभी निकाल ली। उसके बाल बना कर वे चोरी से उस बन्द कमरे को खोलने और उस कमरे में क्या है यह देखने के लिये वहाँ से चली गयीं।

वह चाभी वाकई उसी कमरे की थी। उन्होंने वह कमरा खोला तो देखा कि उस कमरे में तो बहुत सारी स्त्रियाँ बैठी थीं। कुछ कढ़ाई कर रही थीं, कुछ सिलाई कर रही थीं और कुछ कपड़ा काट रही थीं। अपना अपना काम करते समय वे गा रही थीं –

हम कपड़ों के गठ्ठर बनाते हैं
और राजा के बेटे के आने का इन्तजार करते हैं

पैप्पा और नीना बोलीं — "ओह लगता है कि हमारी बहिन को बच्चे की आशा है और उसने हमें बताया भी नहीं।"

पर उसी समय कमरे में बैठी स्त्रियों को लगा कि कोई उनको देख रहा है तो वे सब खूबसूरत से बदसूरत हो गयीं और फिर

गिरगिटों और हरे रंग के रेंगने वाले जानवरों में बदल गयीं। यह देख कर पैप्पा और नीना दोनों डर गयीं और वहाँ से भाग लीं।

उनको इस तरह परेशान हो कर भागते देख कर नूनज़िया ने उनसे पूछा — “जीजी, क्या बात है क्या हुआ?”

वे बोलीं — कुछ नहीं। हम अब घर वापस जाना चाहते थे सो हम तुमको विदा कहने आ रहे थे।”

“अभी से? इतनी जल्दी?”

“हाँ हमें अब घर जाना चाहिये।”

“पर तुम लोगों को हुआ क्या है? तुम लोग इतनी डरी हुई क्यों हो?”

इस पर वे दोनों बोली — “नूनज़िया, हमको तुम्हारे बालों मे एक चाभी मिली। हमने वह निकाल ली और उस कमरे का दरवाजा खोल लिया जो तुम हमको दिखाना नहीं चाहती थीं।”

नूनज़िया बोली — “ओह जीजी यह तो तुमने मेरा सारा किया धरा बेकार कर दिया। उस कमरे में बैठी वे स्त्रियाँ तो परियाँ थीं। वे मेरे पति के पास गयीं और उन्होंने उनसे कहा — “तुमको अपनी पत्नी को यहाँ से निकालना पड़ेगा, अभी अभी।”

मेरे पति ने आँखों में आँसू भर कर पूछा — “मगर क्यों?”

वे बोलीं — "तुमको उसको तुरन्त ही वापस भेजना पड़ेगा। हुक्म तो हुक्म है। यह परियों का हुक्म है। नहीं तो हमारा काम खत्म।"

इस पर मेरे पति ने उन परियों को यहाँ कैदी बना कर रख लिया था। और आज आप लोगों ने उनको आजाद कर दिया। ओह आज मेरी बहिनों ने ही मुझे नीचे गिरा दिया।"

और इतना कह कर वह रो पड़ी — "अब मैं कहाँ जाऊँ।"

उसकी बहिनों को यह सुन कर बहुत दुख हुआ पर वे तो अब कुछ कर नहीं सकती थीं सो वे अपनी छोटी बहिन को वहीं रोता छोड़ कर अपने घर चली गयीं।

नौजवान ने लड़की को धीरज बँधाते हुए कहा — "रोओ नहीं। लो यह धागे का गोला लो। इसका एक सिरा हमारे घर के दरवाजे के हैन्डिल से बाँध दो और इस गोले को खोलती चली जाओ। जहाँ यह धागा खत्म हो जाये वहाँ रुक जाना।"

दुखी नूनज़िया ने उसका कहा माना। उसने उस धागे का एक सिरा अपने घर के दरवाजे के हैन्डिल में बाँधा और वह गोला खोलती चली गयी। पर उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह धागा जाने कितना लम्बा था। वह तो खत्म होने पर ही नहीं आ रहा था।

चलते चलते वह एक बहुत ही आलीशान महल के नीचे से गुजरी तो वह धागा वहाँ पहुँच कर खत्म हो गया। वह महल राजा क्रिस्टल[95] का महल था।

नूनज़िया ने वहाँ जा कर आवाज लगायी तो कुछ दासियाँ बाहर निकल कर आयीं। नूनज़िया ने उनसे कहा — "मेहरबानी कर के मुझे आज की रात ठहरने की जगह दे दो। मुझे बच्चा होने वाला है और मुझे नहीं मालूम कि मैं कहाँ जाऊँ।"

वे नौकरानियाँ राजा क्रिस्टल और उसकी रानी से यह कहने गयीं पर उन्होंने कहा कि वे जब तक आसमान में सूरज चमकता है तब तक किसी के लिये भी महल के दरवाजे नहीं खोलते।

इस बात से कई साल पहले कुछ परियाँ उनके बेटे को उठा कर ले गयी थीं। तबसे उन्होंने उसकी खाल या बाल कुछ भी नहीं देखा था। इसलिये वे लोग अजनबी स्त्रियों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते थे।

बेचारी नूनज़िया बोली — "क्या मैं आपके मुर्गीखाने में रह सकती हूँ? बस एक ही रात की तो बात है।"

उन दासियों को उसके ऊपर दया आ गयी तो उन्होंने राजा से उसको ठहराने के लिये बार बार कहा और यह भी कहा कि अगर वह उसके लिये महल का दरवाजा नहीं खोल सकते तो कम से कम

[95] King Crystal

उसको अपने मुर्गीखाने में ही ठहरने की इजाज़त दे दें। सो उसको राजा के मुर्गीखाने में रहने की इजाज़त दे दी गयी।

दासियों ने देखा कि वह लड़की बहुत भूखी थी सो वे उसके लिये थोड़ी सी डबल रोटी और दूध ले गयीं।

वे उसकी कहानी भी सुनना चाहती थीं। पर जब उन्होंने उससे अपना हाल सुनाने के लिये कहा तो उसने ना में सिर हिलाया और बोली — "काश, तुम जान पातीं। ओह, काश तुम जान पातीं।"

उसी रात नूनज़िया ने एक सुन्दर बेटे को जन्म दिया। एक दासी यह खबर देने के लिये रानी के पास गयी — "मैजेस्टी, आपको उस बच्चे को जा कर देखना चाहिये जिसको उस विदेशी लड़की ने जन्म दिया है। वह बिल्कुल आपके बेटे की शक्ल का है।"

इस बीच परियॉ उस नौजवान के पास गयीं जो अभी भी उसी तहखाने में रह रहा था और बोलीं — "क्या तुम जानते हो कि तुम्हारी पत्नी ने एक सुन्दर बेटे को जन्म दिया है? क्या तुम आज रात उसको वहॉ जा कर देखना चाहोगे?"

नौजवान बोला — "अगर मैं उसे देखना चाहूँ तो क्या तुम मुझे वहॉ ले चलोगी?"

उस रात मुर्गीखाने के दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी तो अन्दर से किसी ने पूछा — "कौन है?"

“दरवाजा खोलो। यह मैं हूँ, तुम्हारे बच्चे का पिता।”

नूनज़िया ने दरवाजा खोला और नूनज़िया का पति उसमें अन्दर घुसा। उसके पीछे पीछे परियाँ थीं।

यह नौजवान राजा का वही लड़का था जिसको कुछ साल पहले परियाँ उठा कर ले गयी थीं। आज वे ही परियाँ उसको उसके अपने बेटे को दिखाने के लिये उसके अपने ही घर वापस ले कर आयी थीं।

उसके अन्दर आते ही मुर्गीखाने में तुरन्त ही चारों तरफ भारी भारी परदे लग गये और नीचे फर्श पर सुनहरा कालीन बिछ गया। उसमें सोने के सोफे लग गये जिन पर सोने के तारों से कढ़े हुए कपड़े चढ़े थे। बच्चे का पालना भी सोने का हो गया।

वहाँ सब कुछ चमकने लगा। ऐसा लगा जैसे वहाँ दिन का उजाला छा गया हो। संगीत बजने लगा और परियाँ नाचने गाने लगीं। राजकुमार ने अपने बेटे को गोद में लिया और उसको अपनी बाँहों में झुलाने लगा।

झुलाते समय वह गा रहा था —

काश अगर मेरे पिता को पता होता, कि तुम उनके बेटे के बेटे हो
तो वह तुमको सोने के कपड़ों में लपेटते, सोने के पालने में झुलाते
मैं तुम्हारे साथ दिन और रात रहता, सो जा ओ राजकुमार सो जा

और जब वहाँ सब नाच रहे थे तो परियाँ वहाँ से खिड़की के रास्ते बाहर निकल गयीं और गाने लगीं —

मुर्गों को अभी बाँग मत देने दो, और घड़ी को भी आगे मत बढ़ने दो
अभी समय नहीं आया है, अभी नहीं, अभी नहीं

XXXXXXX

इन लोगों को आनन्द मनाते हम यहीं छोड़ते हैं और महल में रानी के पास चलते हैं। एक दासी रानी के पास आयी और बोली — "रानी जी रानी जी, मैं आपको एक बात बताऊँ? यह सबसे अजीब बात है जो शायद आपने पहले कभी नहीं देखी होगी जो वहाँ हो रही है जहाँ वह विदेशी लड़की ठहरी हुई है।

वह मुर्गीखाना अब वह मुर्गीखाना नहीं रहा बल्कि वह तो स्वर्ग की तरह चमक रहा है। आप किसी को गाते सुन रही हैं न? और वह आपके बेटे जैसा गा रहा है, ज़रा सुनिये तो।"

यह सुन कर रानी उस मुर्गीखाने के दरवाजे तक गयी और वहाँ जा कर सुनने लगी पर उसी पल एक मुर्गे ने बाँग दी और उसके बाद न तो वह कुछ सुन सकी और न ही वहाँ पर उसको दरवाजे के नीचे से बिजली की सी कोई चमक ही दिखायी दी। सो वह वहाँ से ऐसे ही बिना कुछ देखे और सुने चली आयी।

सुबह को उसने खुद ही उस विदेशी लड़की के लिये उसकी सुबह की कौफी ले जाने का निश्चय किया।

जब वह उसकी कौफी ले कर उसके पास गयी तो उसने उससे पूछा — "क्या तुम मुझे बताओगी कि पिछली रात यहाँ कौन आया था?"

लड़की बोली — "वैसे तो मुझे यह बताने की इजाज़त नहीं है पर अगर मुझे यह बताने की इजाज़त होती भी तो भी मैं आपको क्या बताती। काश मैं खुद भी जान पाती कि वह सब क्या था।"

रानी ने पूछा — "पर वह कौन हो सकता है जो यहाँ आया था? कहीं ऐसा तो नहीं कि वह मेरा बेटा हो।"

और फिर वह कुछ कुछ बोलती रही। और वह इतना बोलती रही कि उसको रानी को अपनी सारी कहानी सुनानी पड़ी – शुरू से ले कर आखीर तक – पत्ते ढूँढने से ले कर बाद की सब घटनाओं के होने तक।

रानी बोली — "तो इसका मतलब यह है कि तुम मेरे बेटे की बहू हो।" कह कर उसने उस लड़की को गले से लगा लिया और चूम लिया।

फिर बोली — "आज की रात तुम उससे पूछना कि उसको इस जादू से आजाद कराने का क्या तरीका है।"

उस रात उसी समय परियाँ वहाँ फिर जमा हुईं और राजा के बेटे को भी साथ ले कर आयीं। वे नाच गा रही थीं और राजकुमार अपने बेटे को गोद में ले कर उसको झुलाते हुए गा रहा था —

काश अगर मेरे पिता को पता होता, कि तुम उनके बेटे के बेटे हो
तो वह तुमको सोने के कपड़ों में लपेटते, सोने के पालने में झुलाते
मैं तुम्हारे साथ दिन और रात रहता, सो जा ओ राजकुमार सो जा

जब परियाँ नाच रही थीं तो लड़की ने अपने पति से कहा — "मुझे यह बताओ कि तुम इन परियों के चंगुल से किस तरह से आजाद हो सकते हो?"

वह नौजवान बोला — "तुमको यह देखना है कि मुर्गा बाँग न दे, घड़ी का घंटा न बजे, घंटी न बजे। खिड़कियों को किसी गहरे रंग के परदों से ढक दो। उन पर चाँद सितारे कढ़े होने चाहिये ताकि तुमको यह पता न चले कि दिन कब निकला।

जब सूरज आसमान में चढ़ जाये तब वे परदे खींच लो तो ये परियाँ गिरगिटों और हरे रंग के रेंगने वाले जानवरों में बदल जायेंगीं और भाग जायेंगीं।"

लड़की ने यह बात रानी को बता दी। सुबह राजा ने अपने मुनादी करने वाले को बुलाया और उनसे कहा कि उसका यह हुक्म सबको सुना दिया जाये कि सारी घंटियाँ और घड़ियों को बन्द कर दिया जाये और सारे मुर्गे मार दिये जायें।

इस काम के लिये सब तैयारी हो गयी। उस रात हर रात की तरह परियाँ फिर से राजकुमार को ले कर वहाँ आयीं। उन्होंने फिर से नाचना शुरू किया और राजकुमार ने फिर से गाना शुरू किया —

काश अगर मेरे पिता को पता होता, कि तुम उनके बेटे के बेटे हो
तो वह तुमको सोने के कपड़ों में लपेटते, सोने के पालने में झुलाते
मैं तुम्हारे साथ दिन और रात रहता, सो जा ओ राजकुमार सो जा

परियाँ खिड़की की तरफ गयीं और उन्होंने गाना शुरू किया —

मुर्गों को अभी बाँग मत देने दो, और घड़ी को भी आगे मत बढ़ने दो
अभी समय नहीं आया है, अभी नहीं, अभी नहीं

वे सारी रात नाचते रहे और गाते रहे और यह देखने के लिये बराबर खिड़की की तरफ जाते रहे कि अभी भी रात है कि नहीं। उन्होंने फिर गाया —

मुर्गों को अभी बाँग मत देने दो, और घड़ी को भी आगे मत बढ़ने दो
अभी समय नहीं आया है, अभी नहीं, अभी नहीं

जब सूरज आसमान में चढ़ गया तो खिड़की पर लटके भारी भारी परदे खींच दिये गये सो कुछ परियाँ साँप बन गयीं, कुछ हरे गिरगिट बन गयीं, कुछ और रेंगने वाले जानवरों में बदल गयीं और वहाँ से भाग गयीं।

राजकुमार पर पड़ा जादू टूट गया और उसने अपनी पत्नी और बेटे के साथ महल में आ कर अपने माता पिता को गले लगाया। राजा रानी अपने खोये हुए बेटे को पा कर और पोते को देख कर बहुत खुश हुए।

15 एक शानदार राजकुमारी[96]

बहुत समय के बाद आज यह कहानी फिर से कही जा रही है कि एक राजा था जिसकी एक बेटी थी जो शादी के लायक थी। वह लड़की बहुत सुन्दर थी।

एक दिन राजा ने उसको बुलाया और उससे कहा — "बेटी अब तुम्हारी उम्र शादी के लायक हो गयी है इसलिये अब तुमको शादी कर लेनी चाहिये।

मैं अपने सभी साथी राजाओं और दोस्तों को यह खबर भिजवा देता हूँ कि फलॉ दिन एक बड़ा जश्न मनाया जायेगा और वे सब उसमें जरूर आयें। जब वे सब यहाँ आ जायेंगे तो तुमको उनमें से अपनी पसन्द का दुलहा चुनने का मौका मिल जायेगा।"

बेटी ने हॉ कर दी और राजा ने यह सन्देश सबको भिजवा दिया। तय किया हुआ दिन भी आ पहुँचा। सारे राजा उस दिन वहाँ आ पहुँचे थे। उन सबके परिवार भी वहाँ आये थे।

जो भी राजा और राजकुमार वहाँ आये थे राजकुमारी ने उनमें से राजा गारनर[97] के बेटे को पसन्द किया। सब लोगों ने बहुत खुशियाँ मनायीं।

---

[96] The Mincing Princess. Tale No 175. A folktale from Italy from its Province of Trapani.

[97] King Garner

दोपहर हुई तो सब लोग खाना खाने बैठे। खाने में सत्तावन चीज़ें बनी थीं। मीठे में अनार भी परोसे गये। अब अनार हर देश में तो मिलते नहीं और राजा गारनर के देश में तो उनका नाम भी कोई नहीं जानता था सो राजकुमार ने जब अनार उठाया तो उसका एक दाना नीचे गिर पड़ा।

यह सोच कर कि वह दाना बहुत कीमती होगा वह उसको उठाने के लिये नीचे झुका। उधर राजकुमारी राजकुमार पर से अपनी नजर ही नहीं हटा पा रही थी सो उसने यह देख लिया कि राजकुमार नीचे से अनार का एक दाना उठाने की कोशिश कर रहा था।

उसको गुस्सा आ गया और वह गुस्से में भर कर मेज से उठी और अन्दर चली गयी। अपने कमरे में जा कर उसे अन्दर से बन्द कर के बैठ गयी।

उसका पिता उसके पीछे पीछे यह देखने के लिये गया कि उसकी बेटी को क्या हो गया है। वह वहॉ गया तो उसने देखा कि उसकी बेटी तो अपने कमरे में बैठी रो रही है।

राजा ने अपनी बेटी के रोने की वजह जाननी चाही तो वह बोली — "पिता जी, मैं उस लड़के को बहुत पसन्द करती हूॅ पर मुझे अब लगा कि वह तो बहुत ही छोटे दिमाग का आदमी है और अब मैं उसके साथ कोई रिश्ता नहीं रखना चाहती।"

राजा खाने की जगह वापस आया। सब राजाओं को धन्यवाद दिया और उनको गुड बाई कह कर विदा कर दिया। पर यह बात राजा गारनर के बेटे के लिये कुछ ज़रा ज़्यादा ही हो गयी सो उसने राजकुमारी को सबक सिखाने की कुछ और तरकीब सोची।

बाकी सारे राजा तो वहाँ से अपने अपने घर चले गये पर राजा गारनर का बेटा महल से जाने के बाद अपने घर नहीं गया। असल में वह भी राजकुमारी को बहुत पसन्द करने लगा था। वह उसको किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहता था सो उसने एक तरकीब सोची।

बाहर निकल कर उसने एक किसान का वेश रखा और काम की तलाश में महल के आस पास चक्कर काटने लगा। राजा को एक माली की जरूरत थी और क्योंकि वह राजकुमार बागीचों के बारे में कुछ जानता था सो उसने राजा से प्रार्थना की वह उसको अपने बागीचे में माली का काम दे दे।

राजा को वह लड़का पसन्द आ गया सो उसके बारे में कुछ जानकारी हासिल करने के बाद उसकी तनख्वाह निश्चित कर दी गयी और उसे नौकरी पर रख लिया गया।

बागीचे में ही उसको एक छोटा सा मकान दे दिया गया और वह अपने एक बक्से के साथ उस मकान में चला गया।

राजकुमार के बक्से में उसकी वह भेटें थीं जो वह अपनी होने वाली पत्नी के लिये ले कर आया था पर अब जब राजकुमारी ने

उसको स्वीकार ही नहीं किया तो वे सब भेंटें अभी उसी के पास थीं।

जब वह अपना बक्सा ले कर उस मकान में आया तो उसने यही दिखाया कि उस बक्से में उसके पहनने के कपड़े थे। उस मकान में पहुँच कर उसने अपने मकान की खिड़की के सामने एक शाल टाँग लिया जो सुनहरे तारों की कढ़ाई से कढ़ा हुआ था।

राजकुमारी के महल की खिड़की बागीचे की तरफ खुलती थी और उसी बागीचे में वह माली रहता था। सो एक दिन जब उसने अपनी खिड़की से बागीचे में झाँका तो उसको माली के घर की खिड़की पर टँगा वह सोने के तारों से कढ़ाई किया गया शाल दिखायी दे गया।

उसने माली को बुलाया और उससे पूछा — "यह जो शाल तुम्हारी खिड़की पर फैला हुआ है किसका है?"

माली बोला — "राजकुमारी जी, यह शाल मेरा है।"

राजकुमारी ने उससे फिर पूछा — "क्या तुम इस शाल को मुझे बेचोगे? मैं तुम्हारा यह शाल खरीदना चाहती हूँ।"

माली बोला — "ओह नहीं, कभी नहीं। यह शाल बेचने के लिये नहीं है।" कह कर वह वहाँ से चला गया।

यह सुन कर राजकुमारी ने अपनी दासियों से कहा कि वे उस माली को वह शाल उसे बेचने पर मनायें।

दासियों ने माली को उस शाल के बदले में कितने भी पैसे देने के लिये कहा। यहाँ तक कि उसको अगर पैसा नहीं चाहिये तो उस के बराबर की कीमत की कोई और चीज़ लेने के लिये भी कहा पर किसी का कोई नतीजा नहीं निकला क्योंकि वह तो उस शाल को किसी भी कीमत पर बेचने को तैयार ही नहीं था।

जब उसको बहुत कहा गया तो वह बोला — "मैं यह शाल बेचता तो नहीं, हाँ उनको यह शाल मैं भेंट कर सकता हूँ अगर वह मुझको अपने महल के पहले कमरे में सोने दें तो।"

यह सुन कर वे दासियाँ बहुत ज़ोर से हँस पड़ीं और यह बात राजकुमारी से कहने के लिये दौड़ गयीं। राजकुमारी से बात करते समय वे कह रही थीं कि वह अगर इतना ही बेवकूफ है जो आपके महल के पहले कमरे में सोना चाहता है तो उसे सोने दीजिये। कोई अक्लमन्द आदमी ऐसा क्यों करेगा। वह जरूर ही कोई बेवकूफ है।

और फिर इसके लिये तो हमको कुछ देना भी नहीं पड़ेगा। इसमें हमारा कुछ नुकसान भी नहीं होगा और आपको शाल भी मिल जायेगा। सो राजकुमारी राजी हो गयी।

जब सारा घर सो रहा था तो राजकुमारी की दासियाँ उस माली को राजकुमारी के महल के अन्दर ले गयीं और उसके महल के पहले कमरे में उसको सोने के लिये छोड़ गयीं।

अगले दिन उन्होंने माली को सुबह सवेरे जल्दी उठाया और उसको महल के बाहर छोड़ आयीं। इसके बदले में माली ने अपना शाल राजकुमारी को दे दिया।

एक हफ्ते बाद उस माली ने एक और शाल उस खिड़की पर टॉग दिया। यह शाल उस पहले वाले शाल से भी ज़्यादा खूबसूरत था। जब राजकुमारी ने यह शाल देखा तो वह अपनी दासियों से बोली — "मुझे तो यह शाल चाहिये।"

जब माली से इस शाल को राजकुमारी को बेचने के बारे में बात की गयी तो माली बोला कि में इस शाल को बेचता तो नहीं पर अगर राजकुमारी जी मुझे अपने महल के दूसरे कमरे में एक रात सोने की इजाज़त दें तो मैं उनको यह शाल भेंट कर सकता हूँ।"

राजकुमारी की दासियों ने राजकुमारी से कहा — "जब आपने उसको अपने महल के पहले कमरे में सोने दिया तो अब आप उसको अपने महल के दूसरे कमरे में भी सोने दे सकती हैं।"

सो अगले दिन माली राजकुमारी के महल के दूसरे कमरे में सो गया और इसके बदले में उसने उसको अपना वह दूसरा शाल दे दिया।

फिर एक हफ्ता गुजर गया। तीसरे हफ्ते माली ने सोने के तारों से कढ़ी हुई और हीरे मोती से सजी हुई एक बहुत ही खूबसूरत पोशाक अपनी खिड़की पर टॉग दी।

जब राजकुमारी ने अपनी खिड़की से उस पोशाक को माली के घर की खिड़की पर टॅगा देखा तो उससे रहा नहीं गया। माली से उसकी कीमत पूछने पर उसने कहा कि यह पोशाक तो बिल्कुल भी बिकाऊ नहीं थी।

पर काफी कुछ कहने सुनने के बाद माली ने कहा कि वह उसको भी बेचेगा तो कभी नहीं पर वह उसको राजकुमारी को भेंट दे सकता है अगर राजकुमारी उसको अपने महल के तीसरे कमरे में सोने की इजाज़त दे तो। तीसरा कमरा यानी राजकुमारी के सोने के कमरे के बिल्कुल बराबर वाला कमरा।

राजकुमारी ने सोचा "इसमें इतना डरना किस बात का? यह गरीब माली तो लगता है कि बस पागल है। इससे मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचने वाला।" सो पिछली रातों की तरह से इस रात भी उसको राजकुमारी के महल के तीसरे कमरे में नीचे फर्श पर सुला दिया गया।

जब वह वहाँ लेट गया तो उसने सोने का बहाना किया और उस समय का इन्तजार करने लगा जब महल में सब कोई सो जाने वाला था।

जब उसने पक्का कर लिया कि महल में सब लोग सो गये तो उसने ठंड से काँपना शुरू कर दिया। ठंड की वजह से उसके दाँत भी ज़ोर ज़ोर से बजने लगे।

इस कॉपने में वह राजकुमारी के सोने के कमरे से जा टकराया। उसके कॉपते हाथ पैर जब उसके दरवाजे को छूते थे तो ढोल के से बजने की आवाज आती थी।

इस आवाज से राजकुमारी जाग गयी और फिर दोबारा सो भी नहीं पायी। उसने माली को चुप रहने को भी कहा पर वह कुछ कराहता हुआ सा बोला — "मुझे बहुत ठंड लग रही है राजकुमारी जी।" और यह कह कर वह और ज़ोर ज़ोर से कॉपने लगा।

जब वह माली को किसी तरह भी शान्त नहीं कर सकी तो उसको डर लगा कि महल में सोने वाले दूसरे लोग उसकी आवाज सुन लेंगे और माली के साथ किये गये सौदे के बारे में जान जायेंगे।

सो वह उठी और उसने यह सोचते हुए अपना दरवाजा खोला कि यह तो बहुत ही सीधा लड़का है यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता। अब वह सीधे दिमाग वाला था या नहीं, यह तो पता नहीं, पर उस रात के बाद से राजकुमारी को बच्चे की आशा हो गयी।

राजकुमारी के गुस्से और शर्म की कोई हद नहीं थी। इस बात की चिन्ता कर के कि अभी या देर से लोग उसके बच्चे के बारे में जान तो जायेंगे ही सो उसने माली से कहा — "अब तुम्हारे लिये यहाँ करने के लिये कुछ नहीं बचा सिवाय इसके कि तुम यहाँ से मेरे साथ भाग चलो।"

"तुम्हारे साथ? इससे तो मैं मर जाना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

"ठीक है तो फिर यहीं रहो जब तक सबको पता न चल जाये।"

पर फिर भी किसी तरह उसने माली को अपने साथ भाग जाने पर तैयार कर लिया। उसने अपने कुछ सामान की एक गठरी बाँधी, थोड़ा सा पैसा साथ में लिया और वे दोनों पैदल ही एक रात वहाँ से भाग निकले।

रास्ते में उनको गाय चराने वाले मिले, भेड़ चराने वाले मिले, वे खेतों से गुजरे, वे मैदानों से निकले। ये सब देख कर राजकुमारी ने पूछा — "ये सब जानवर किसके हैं?"

माली बोला — "ये सब जानवर राजा गारनर के हैं।"

"ओह बेचारी मैं।"

माली ने पूछा — "क्यों? तुम बेचारी क्यों? क्या बात है?"

राजकुमारी बोली — "बेचारी मैं इसलिये कि मैंने उसके बेटे से शादी करने से मना कर दिया।"

माली बोला — "यह तुमने बहुत बुरा किया।"

राजकुमारी ने फिर पूछा — "और यह जमीन किसकी है?"

"यह भी राजा गारनर की है।"

राजकुमारी फिर बोली — "ओह बेचारी मैं।"

अब तक चलते चलते राजकुमारी बहुत थक गयी थी। चलते चलते वे एक नौजवान के घर पहुँचे। उस नौजवान ने उनको बताया

कि वह राजा गारनर के नौकर का बेटा था। यह घर राजा के महल के पास ही था।

उसका सारा घर धुँए से काला हुआ पड़ा था। उसमें एक पुराना पलंग पड़ा था, एक स्टोव रखा था और एक घर को गर्म रखने वाली अंगीठी थी।

उस घर के बराबर में ही एक जानवर रखने का बाड़ा और एक मुर्गीखाना था। वह नौजवान रात को ही अपना मकान माली को दे कर चला गया।

माली ने वहाँ जाते ही राजकुमारी से कहा — "मुझे बहुत भूख लगी है। एक मुर्गा मारो और उसे मेरे लिये पका दो।"

राजकुमारी ने वैसा ही किया। वह रात उन्होंने वहाँ उस छोटे से मकान में ही गुजारी।

सुबह को माली वहाँ से यह कह कर चला गया कि वह शाम होने से पहले घर वापस आ जायेगा। अब राजकुमारी उस मकान में अकेली थी कि अचानक उसने दरवाजे पर दस्तक सुनी। उसने दरवाजा खोला तो वहाँ राजा गारनर का बेटा अपने शाही कपड़ों में सजा खड़ा था।

उसने राजकुमारी से पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ तुम क्या कर रही हो?"

बड़ी मुश्किल से राजकुमारी की आवाज निकली — "मैं आपके नौकर के बेटे के दोस्त की पत्नी हूँ।"

राजकुमार बोला — “हो सकता है पर तुम मुझे कोई ईमानदार स्त्री नहीं लगती। अगर तुम चोर हो तो? क्योंकि अक्सर ही यहाँ कोई न कोई मेरी मुर्गियाँ चुराने आता रहता है।”

फिर राजकुमार ने मुर्गियों को आवाज दी और उनको गिन कर बोला — “अरे इसमें तो एक मुर्गी कम है। कल तक तो यहाँ सब थीं।”

कह कर उसने वहाँ रखा सारा सामान छानना शुरू कर दिया। जब वह स्टोव के पास आया तो उसको मुर्गी के कुछ पंख पड़े मिल गये। ये उस मुर्गी के पंख थे जो कल रात राजकुमारी ने माली के लिये पकायी थी।

उन पंखों को देख कर राजकुमार ने कहा — “इसका मतलब यह है कि तुम चोर हो। तुमने मेरी एक मुर्गी चुरा कर खा ली है। भगवान को धन्यवाद दो कि मैंने तुमको पकड़ा है, अगर किसी और ने पकड़ा होता तो उसने तुमको कानून के हवाले कर दिया होता। पर चलो, मैं तुमको राजा के दरबार में नहीं ले जाता। अब आगे से कुछ मत चुराना।”

यह सब सुन कर राजकुमारी की आँखों से तो झर झर आँसू बह निकले। तभी रानी वहाँ आ गयी और उसने देखा कि वह बेचारी लड़की तो रोये जा रही है।

वह उसको धीरज बॅधाते हुए बोली — "तुम चिन्ता न करो बेटी। यह मेरा बेटा भी बस बड़ा ही अजीब आदमी है। चलो जब तक तुम यहॉ हो तुम मेरे पास काम कर लेना।

मेरे पोता होने वाला है तो मुझे उसके लिये कुछ कपड़े तैयार करवाने हैं। तुम उनकी सिलाई में मेरी सहायता कर देना।" यह कह कर रानी उसको बच्चे के लिये कुछ कपड़े सिलने के लिये दे कर चली गयी।

शाम को जब माली घर आया तो राजकुमारी बहुत रोयी और उसको दिन में हुई राजकुमार और रानी की घटना बतायी और बोली कि इस सबकी जिम्मेदार केवल वह खुद है।

माली ने किसी तरह उसे शान्त किया और उसे वहीं रहने के लिये मना लिया।

राजकुमारी ने पूछा — "लेकिन हम यहॉ रहेंगे कैसे। अभी हमारे बच्चा होगा तो हमारे पास तो इतना भी नहीं है कि हम उसको कुछ पहना सकें।"

माली बोला — "जब रानी यहॉ कल आयें और तुमको सिलाई का और काम दें तो तुम उनके कपड़ों में से एक पोशाक निकाल कर छिपा लेना।"

सो अगले दिन जब रानी उसको कपड़े दे कर वापस जा रही थी तो राजकुमारी ने उतनी देर इन्तजार किया जब तक रानी ने अपना मुॅह पूरी तरह से नहीं फेर लिया। फिर जैसे ही रानी का मुॅह पूरी

तरह से फिरा उसने उन पोशाकों में से एक पोशाक चुरा कर रख ली।

कुछ मिनट बाद ही वहॉ राजकुमार आ गया और अपनी मॉ से बोला — “मॉ, आपके साथ यहॉ कौन काम कर रहा है?”

और फिर राजकुमारी की तरफ देख कर बोला — “अरे क्या यह चोर फिर यहॉ? आपको मालूम है क्या कि यह कुछ भी चुराने की हिम्मत कर सकती है?”

यह कह कर उसने राजकुमारी की छिपायी हुई बच्चे की पोशाक बाहर निकाल कर उसको दिखा दी। फिर बोला — “यह तो फर्शों के अन्दर जाने तक की भी ताकत रखती है मॉ। आप कहॉ इसके चक्कर में पड़ीं।”

यह सुन कर राजकुमारी की ऑखों से फिर से ऑसू बहने लगे पर रानी उसकी तरफदारी करती हुई बोली — “ये मामले स्त्रियों के हैं तुम यहॉ उनके बीच में क्या कर रहे हो?”

राजकुमारी को रोता देख कर उसने उसको फिर तसल्ली दी और उसने राजकुमारी को अगले दिन महल में आने के लिये कहा ताकि वह अगले दिन वहॉ आ कर उसके लिये मोती की कुछ मालाऐं बना दे।

राजकुमारी अपने उस छोटे से मकान में वापस लौट आयी और रात को अपने पति को उस दिन की घटना के बारे में बताया।

माली बोला — "तुम उसके बारे में बिल्कुल भी न सोचो। यह राजा तो बहुत पुराना कंजूस और बहुत ही नीच खडूस आदमी है पर हॉ यह ध्यान रखना कि तुम कल एक मोती की माला वहॉ से अपने बच्चे के लिये जरूर लेती आना।"

अगले दिन राजकुमारी रानी के पास उसकी मोती की माला बनवाने के लिये फिर महल गयी। जब रानी नहीं देख रही थी तो राजकुमारी ने एक मोती की माला अपनी जेब में रख ली।

कुछ ही देर में राजकुमार भी घर आ गया तो उसने अपनी मॉ से कहा — "मॉ आपने इसे फिर अपने पास काम करने के लिये रख लिया। यह फिर कुछ चुरा कर ले जायेगी। आप मेरी बात मानती क्यों नहीं हैं।"

फिर इधर उधर देख कर बोला — "क्या आपने इसको मोती दिये मॉ? मैं शर्त लगा सकता हूँ कि कम से कम एक मोती की माला तो इसने जरूर ही चुरा ही ली होगी।"

और यह कह कर उसने राजकुमारी की जेब में हाथ डाल दिया और उसकी जेब से एक मोती की माला निकल आयी। यह देख कर तो राजकुमारी बेहोश हो गयी। रानी ने उसको नमक सुॅघाया और उसको होश में ला कर उसको फिर से धीरज बॅधाया।

अगले दिन जब वह रानी के यहॉ फिर काम कर रही थी तो उसको बच्चा होने वाला हो गया तो रानी ने उसको ले जा कर

राजकुमार के पलंग पर लिटा दिया। कुछ ही देर में उसको लड़का हो गया।

तभी राजकुमार आ गया और उसको अपने पलंग पर लेटा देख कर चीखा — "मॉ यह क्या? यह चोर मेरे बिस्तर में?"

अब रानी मुस्कुरा कर बोली — "बेटे, बस करो। अब तुम्हारी हॅसी बहुत हो गयी।"

फिर उसने राजकुमारी से कहा — "बेटी, यह मेरा बेटा ही तुम्हारा पति है जिससे तुमने शादी करने से इनकार कर दिया था। वही तुम्हारे यहॉ माली बन कर तुम्हारा दिल जीत कर तुमको यहॉ ले आया है।"

अब सारा भेद खुल गया था। राजकुमारी को जब सब कुछ पता चला तो वह अपने किये पर बहुत शर्मिन्दा हुई।

राजकुमारी के माता पिता को बुलवा लिया गया, साथ में पड़ोसी राजाओं को भी। पोते के जन्म की खुशी में तीन दिन तक दावत चलती रही और सारे राज्य में खूब खुशियॉ मनायीं गयीं।

16 जानवरों की बातें और उत्सुक पत्नी[98]

एक बार एक जवान किसान था जिसकी शादी हो गयी थी पर उसकी आमदनी इतनी कम थी कि वह बेचारा अपनी जरूरतें भी पूरी नहीं कर पाता था।

एक बार जब वह खेत में काम कर रहा था तो उसको एक बहुत बड़ा मशरूम[99] मिला। वह उसको अपने मालिक पादरी के पास ले गया।

पादरी ने उससे कहा — "तुम कल उसी जगह चले जाना जहाँ से यह मशरूम ले कर आये हो। वहाँ जा कर गड्ढा खोदना और उसमें से जो कुछ मिले उसे मुझे ला कर देना।"

अगले दिन वह जवान किसान फिर वहीं गया और गड्ढा खोदा तो उसको वहाँ दो ज़हरीले साँप मिले। उसने उनको मार दिया और अपने मालिक के पास ले गया और उन्हें पादरी को दे दिये।

उसी शाम को पादरी के पास कुछ ईल मछलियाँ[100] लायी गयी। तो उन्होंने अपनी नौकरानी से कहा — "ये ईल मछली उस नौजवान आदमी के खाने के लिये हैं। इनमें से दो पतली वाली ईल निकाल लो और उनको उसके लिये तल दो।"

---

[98] Animal Talk and the Nosy Wife. Tale No 177. A folktale from Italy from its Province of Agrigento.
[99] Mushroom – a kind of vegetable. See its picture above.
[100] Eel fish – a kind of snake-like fish. See its picture above.

नौकर ने गलती कर दी। उसने दो ईल मछली की बजाय इस किसान के लिये वे दो साँप तल दिये जो वह नौजवान ले कर आया था और उनको उस नौजवान किसान को खाने में परस दिये।

जब किसान का खाना खत्म हो गया तो उसकी निगाह नीचे गयी तो उसने देखा तो वहाँ एक बिल्ली और एक कुत्ता बैठे थे। उसने उनको बात करते सुना।

कुत्ता बिल्ली से कह रहा था — "मुझे जितनी बड़ी तुम हो उससे भी ज़्यादा माँस मिलने वाला है।"

बिल्ली बोली — "नहीं, मुझे सबसे ज़्यादा माँस मिलेगा।"

कुत्ता बोला — "नहीं, मुझे मिलेगा क्योंकि मैं मालिक के साथ बाहर जाता हूँ और तुम तो केवल घर में ही रहती हो इसलिये मुझे तुमसे ज़्यादा माँस मिलना चाहिये।"

बिल्ली बोली — "यह तो तुम्हारा काम है कि जहाँ मालिक जाये तुम उनके साथ साथ जाओ, जैसे कि मेरा यह काम है कि मैं घर में रहूँ। इसमें खास बात क्या है।"

आश्चर्य कि किसान उनकी ये सब बातें समझ रहा था। किसान को विश्वास हो गया कि वे साँप खा कर ही उसमें जानवरों की भाषा समझने की ताकत आ गयी है।

वहॉ से वह खच्चरों को जौ[101] खिलाने के लिये नीचे घुड़साल में चला गया तो वहॉ उसने उनको बात करते सुना।

उन खच्चरों में से एक खच्चर कह रहा था — "उसको मुझे तुमसे ज़्यादा जौ देना चाहिये था क्योंकि मैं उसको अपनी पीठ पर बिठा कर ले जाता हूॅ।"

दूसरा खच्चर बोला — "पर उसको मुझे भी काफी जौ खिलाना चाहिये क्योंकि मैं उसका इतना सारा बोझा उठाता हूॅ।"

ये बातें सुनने के बाद किसान ने जौ को दो बराबर हिस्सों में बॉटा और उनको दे दिया। दूसरा खच्चर बोला — "देखा न मैंने तुमसे क्या कहा था। यह किसान हमको खाना खिलाने में कितना न्यायपूर्ण है।"

किसान उन खच्चरों को खाना खिला कर फिर ऊपर गया तो उसको वहॉ बिल्ली मिली। वह उससे बोली — "सुनो, मुझे पता चल गया है कि जो कुछ हम लोग बात करते हैं वह तुम सब समझते हो।

मालिक ने जब उस नौकरानी से उन सॉपों को मॉगा तो उनकी नौकरानी ने उनको बताया कि वह उसने गलती से तुमको परस दिये थे। और अब मालिक यह जानना चाहते हैं कि तुमको जानवरों की भाषा समझने की ताकत आ गयी है या नहीं।

[101] Barley – a kind of grain. See its picture above.

उन्होंने ऐसी चीज़ें एक जादू की किताब में पढ़ी थीं और अब वह तुम पर दबाव डालेंगे कि तुम यह मान लो कि तुम हमारी भाषा समझते हो।

पर याद रखना तुम इस बात को बिल्कुल साफ मना कर देना क्योंकि अगर तुमने यह मान लिया कि तुम जानवरों की भाषा समझते हो तो तुम तुरन्त ही मर जाओगे और फिर वह ताकत तुम्हारे मालिक के पास पहुँच जायेगी।"

बिल्ली की चेतावनी के बाद उस किसान ने उस पादरी के कई सवाल पूछने के बाद भी यह मान कर नहीं दिया कि उसको जानवरों की भाषा आ गयी थी। आखिर पादरी ने उससे यह जानने की कोशिश छोड़ दी और उसको वापस घर भेज दिया।

जब वह किसान घर जा रहा था तो उसको भेड़ों का एक झुंड मिला। उन भेड़ों के मालिक को यह चिन्ता थी कि हर रात उसकी कुछ भेड़ें गायब हो जाती थीं। उस किसान ने उन भेड़ों के मालिक से पूछा — "तुम मुझे क्या दोगे अगर मैं कुछ ऐसा कर दूँ कि तुम्हारी भेड़ें फिर गायब न हों।"

भेड़ों के मालिक ने जवाब दिया — "जब मैं यह देखूँगा कि अब मेरी कोई भेड़ गायब नहीं हो रही है तो मैं तुमको एक नर और एक मादा खच्चर दे दूँगा।"

सो वह किसान उस रात उन भेड़ों के साथ रहा और बाहर भूसे पर सोया। आधी रात को उसने कुछ आवाजें सुनी। वे आवाजें भेड़ियों की थीं जो कुत्तों को बुला रहे थे।

एक भेड़िया चिल्लाया — "ओ भाई वाइटस[102]"

कुत्ते ने जवाब दिया — "हॉ भाई निक[103]।"

भेड़िया बोला — "चलो इन भेड़ों के पीछे चलते हैं।"

कुत्ता बोला — "नहीं, आज तुम इन भेड़ों के पास भी नहीं जा सकते क्योंकि आज वहॉ एक चरवाहा सो रहा है।"

इस तरह वह किसान वहॉ एक हफ्ते तक बाहर सोया। इससे वे भेड़िये उन भेड़ों के पास तक नहीं आ पाये। इस तरह उन भेड़ों के मालिक की भेड़ों में से एक भी भेड़ कम नहीं हुई।

नवें दिन उन भेड़ों के मालिक ने अपने बेवफा कुत्तों को मार डाला और दूसरे नये कुत्तों को ला कर रख लिया। उस रात भेड़िये फिर चिल्लाये — "ओ भाई वाइटस, क्या हम भेड़ों के पास आ जायें?"

नये कुत्तों ने जवाब दिया — "हॉ अब तुम लोग आ सकते हो। तुम्हारे दोस्तों को तो मार दिया गया है और अब हम तुमको पीस कर तुम्हारा मॉस खा लेंगे।"

---

[102] Vitus – the name of the dog

[103] Nick – the name of the wolf

अगली सुबह भेड़ों के मालिक ने किसान को एक नर और एक मादा खच्चर दे दिया। वह किसान उनको ले कर अपने घर चला गया।

जब वह उनको ले कर घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि वह किसके जानवर ले आया है। तो उसने जवाब दिया कि वे जानवर उसके अपने ही थे।"

"पर तुमको ये मिले कैसे?" इसके जवाब में किसान ने कुछ नहीं कहा और वह चुप ही रहा।

कुछ दिन बाद पड़ोस के शहर में एक मेला लगा तो किसान ने सोचा कि वह अपनी पत्नी को वह मेला दिखा कर लायेगा। सो उसने अपनी पत्नी कहा कि वह तैयार हो जाये और वे लोग मेला देखने जायेंगे।

पत्नी खुशी खुशी तैयार हो गयी और वे दोनों मादा खच्चर पर बैठ कर मेला देखने चले। उन्होंने नर खच्चर को भी साथ ले लिया था वह उनके साथ साथ चल रहा था।

नर खच्चर बोला — "माँ, ज़रा धीरे चलो, मेरा इन्तजार तो करो।"

मादा खच्चर बोली — "आओ, तुम ज़रा तेज़ तेज़ आओ। तुम्हारे ऊपर तो कोई बोझा भी नहीं है जब कि मेरे ऊपर तो दो दो आदमी बैठे हैं।"

उन दोनों माँ बेटे की बातें सुन कर किसान हँस पड़ा। किसान को हँसता सुन कर उसकी पत्नी चौंक गयी क्योंकि उस समय वहाँ कुछ ऐसा था ही नहीं जिस पर हँसा जाता तो फिर उसका पति क्यों हँसा।

सो उसने पूछ ही लिया — "आप किस बात पर हँसे जी?"

किसान ने बात को टाला — "कुछ नहीं। किसी बात पर नहीं। बस मुझे कुछ ऐसे ही हँसी आ गयी।"

पत्नी बोली — "ऐसे ही तो कोई नहीं हँसता। मुझे अभी अभी बताइये कि आप क्यों हँस रहे थे नहीं तो मैं इस खच्चर पर से अभी उतर जाऊँगी और वापस घर चली जाऊँगी।"

किसान बोला — "ठीक है मैं तुमको घर पहुँच कर बताऊँगा। अभी तो तुम मेला देखने चलो।"

वे मेला देखने सैन्टो शहर[104] पहुँचे पर उसकी पत्नी ने उससे फिर पूछना शुरू कर दिया — "अब बताइये मुझे कि आप वहाँ क्यों हँसे थे? ऐसा क्या था वहाँ हँसने वाला?"

किसान ने फिर कहा — "मैंने कहा न जब हम घर वापस जायेंगे तब बताऊँगा।"

इस पर पत्नी ने कहा — "मैं मेला तब तक नहीं घूमूँगी जब तक आप मुझे यह नहीं बतायेंगे कि आप वहाँ किस बात पर हँसे थे। नहीं तो पहले घर चलिये।"

---

[104] Cento city is in Italy

पति ने उसको बहुत समझाया पर वह अपनी जिद पर अड़ी रही सो उसको अपनी पत्नी को ले कर मेला छोड़ कर घर जाना ही पड़ा। घर पहुँचते ही वह फिर अपने पति के पीछे पड़ गयी। तब वह बोला — “अच्छा पहले पादरी के पास चलो फिर मैं तुम्हें बताऊँगा।”

जल्दी से पत्नी ने अपने चेहरे का परदा हटाया और दोनों पादरी के पास गये। जब पति पादरी का इन्तजार कर रहा था तो उसने

सोचा — “अब तो मुझे इसे बताना ही पड़ेगा और फिर मैं मर जाऊँगा। यह मेरी बदकिस्मती होगी पर क्या करूँ। पहले मैं अपने पाप स्वीकार कर लूँ और कम्यूनियन[105] ले लूँ तब मैं शान्ति से मर सकूँगा।

जब वह यह सोच रहा था तो उसने मुर्गियों को थोड़ा सा दाना फेंका। दाना फेंकते ही मुर्गियाँ उसके पास जमा हो गयीं पर उनसे पहले मुर्गा अपने पंख फड़फड़ाता वहाँ आ गया और उसने उन मुर्गियों को वहाँ से भगा दिया।

किसान ने मुर्गे से पूछा — “तुमने मुर्गियों को दाना क्यों नहीं खाने दिया?”

मुर्गे ने कहा — “मुर्गियों को वही करना चाहिये जो मैं कहता हूँ चाहे वे कितनी भी सारी क्यों न हों। मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ जिसकी

---

[105] First I should make confession and perform communion (see its picture above). Communion is a Christian ceremony in which bread is eaten and wine is drunk as a way of showing devotion to Jesus Christ.

केवल एक पत्नी है और वह भी उससे सँभलती नहीं है। वह तुम्हारे ऊपर राज करती है और तुम उसको केवल यह बताने के बाद ही मर जाओगे कि तुम हमारी भाषा समझते हो।"

किसान ने इसके ऊपर विचार किया और फिर मुर्गे से बोला — "तुम तो मुझसे ज़्यादा होशियार हो।"

कह कर उसने अपनी कमर से अपनी पेटी निकाल ली, उसको पानी लगा कर थोड़ा सा गीला किया ताकि वह थोड़ी से मुलायम और लचीली हो जाये और फिर अपनी पत्नी का इन्तजार करता बैठ गया।

उसकी पत्नी वापस आयी और बोली — "पादरी जी आ रहे हैं। अब बताइये कि आप क्यों हँस रहे थे।"

पति ने अपनी पेटी उठायी और उस पेटी से उसे तड़ातड़ मारना शुरू कर दिया। पत्नी ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगी।

इतने में पादरी जी आ गये और पूछा — "कौन कनफैशन[106] करना चाहता है?"

पति तुरन्त बोला — "मेरी पत्नी।"

पादरी को इशारा मिल गया सो वह वहाँ से लौट गया। पत्नी उस पादरी के पीछे पीछे चली गयी। थोड़ी देर बाद पत्नी वापस

[106] To confess – in Christianity people confess their sins at time to time before the priest. A confession is a statement made by a person or a group of persons acknowledging some personal fact that the person (or the group) would ostensibly prefer to keep hidden. Normally it is done in a Church before some priest but hidden from the confessor, so both do not see each other.

आयी तो उसके पति ने कहा — "तुमने सुना कि मैं तुमसे क्या कहना चाहता था?"

पत्नी रोते हुए बोली — "मुझे आपसे कुछ नहीं पूछना। मैं कुछ नहीं जानना चाहती।"

और उसके बाद से उसने फिर पति के कामों में बेकार ही बीच में बोलना छोड़ दिया। इस तरह मुर्गे ने उस किसान की जान बचायी।
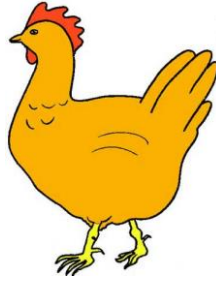
17 सुनहरों सींगों वाला बछड़ा[107]

एक बार एक पति पत्नी थे जिनके दो बच्चे थे – एक लड़का और एक लड़की। कुछ दिन बाद उस पति की पत्नी मर गयी थी तो उसने दूसरी शादी कर ली थी। उसकी दूसरी पत्नी की भी एक बेटी थी। उस बेटी को एक ऑख से दिखायी नहीं देता था।

पति एक किसान था और एक दूसरे शहर में खेत में काम करने जाता था। उसकी दूसरी पत्नी को अपने पति की पहली पत्नी के बच्चे फूटी ऑख नहीं भाते थे।

एक दिन उसने डबल रोटी बनायी और उसको पति की पहली पत्नी के बच्चों को दे कर पति के पास भेज दिया। पर उसने उनको अपने पति के शहर न भेज कर किसी दूसरे शहर भेज दिया जो उसके पति के काम करने वाले शहर की दूसरी दिशा में था ताकि वे हमेशा के लिये खो जायें।

बच्चे डबल रोटी ले कर चल दिये। चलते चलते वे एक पहाड़ के पास आये और अपने पिता को पुकारा पर उनको कोई जवाब नहीं मिला। उनको बस अपनी पुकार की गूॅज ही सुनायी दी। वे वाकई खो गये थे। वे काफी देर तक इधर उधर घूमते रहे।

[107] The Calf With the Golden Horns. Tale No 178. A folktale from Italy from its Province of Agrigento.

जल्दी ही छोटे भाई को प्यास लग आयी। उनको एक फव्वारा दिखायी दे गया तो वह उस फव्वारे से पानी पीना चाहता था।

पर वह लड़की होशियार थी उसको फव्वारे की छिपी ताकतों का पता था सो उसने फव्वारे से पूछा — "ओ प्यारे फव्वारे, जो यहाँ पानी पिये तो उसे किससे डरना चाहिये?"

फव्वारा बोला — "जो कोई भी मेरा पानी पियेगा, चाहे लड़का हो लड़की, वह यकीनन एक गधा बन जायेगा।"

सो उस लड़की ने अपने भाई को वहाँ पानी पीने से मना कर दिया और उसका छोटा भाई बेचारा प्यासा ही रह गया।

वे लोग और आगे बढ़े। कुछ दूर जाने पर उनको एक और फव्वारा मिला। छोटा भाई फिर उस फव्वारे का पानी पीने को तैयार था पर उसकी बहिन ने उस फव्वारे से भी पूछा — "ओ प्यारे फव्वारे, जो यहाँ पानी पिये तो उसे किससे डरना चाहिये?"

इस फव्वारे ने कहा — "जो कोई भी मेरा पानी पियेगा, चाहे लड़का हो लड़की, वह यकीनन ही एक भेड़िया बन जायेगा।"

सो उसकी बहिन ने फिर अपने छोटे भाई को वहाँ पानी पीने से मना कर दिया और उसका छोटा भाई बेचारा फिर प्यासा का प्यासा ही रह गया।

वे लोग और आगे बढ़े तो कुछ दूर जाने पर उनको एक और फव्वारा मिला। बहिन ने फिर उस फव्वारे से पूछा — “ओ प्यारे फव्वारे, जो यहाँ पानी पिये तो उसे किससे डरना चाहिये?”

इस फव्वारे ने कहा — “जो कोई भी मेरा पानी पियेगा, चाहे लड़का हो लड़की, वह यकीनन एक छोटा बछड़ा बन जायेगा।”

सो लड़की ने अपने भाई को उस फव्वारे का पानी पीने से भी मना कर दिया। पर अब तक भाई की प्यास बहुत बढ़ गयी थी। वह अब पानी पिये बिना नहीं रह सकता था।

वह बोला — “अगर मुझे प्यास से मरने और बछड़ा बनने के बीच किसी को चुनना पड़े तो मैं बछड़ा बन जाना ज़्यादा पसन्द करूँगा।” और उसने झुक कर उस फव्वारे का पानी पी लिया। पानी पीते ही वह एक सुनहरे सींगों वाला बछड़ा बन गया।

अब वह बहिन अपने बछड़े भाई के साथ आगे बढ़ी। चलते चलते वे समुद्र के पास पहुँच गये। वहीं समुद्र के किनारे पर एक बहुत सुन्दर मकान था जिसमें वहाँ के राजा और रानी अपनी छुट्टियाँ बिताने आया करते थे। इस समय भी वे वहाँ अपनी छुट्टियाँ ही मनाने आये हुए थे।

राजा का बेटा उस मकान की खिड़की पर खड़ा बाहर देख रहा था। उसने एक लड़की को एक सुनहरे सीगों वाले बछड़े के साथ जाते देखा तो उसको पुकारा — “यहाँ ऊपर आओ मेरे पास।”

लड़की बोली — "मैं आती हूँ अगर तुम मेरे साथ मेरे बछड़े को भी आने की इजाज़त दो तो।"

राजा के बेटे ने पूछा — "पर तुमको वह बछड़ा इतना प्यारा क्यों है?"

लड़की बोली — "क्योंकि इसको मैंने अपने हाथों से पाला है और मैं इसे अपनी ऑखों से एक मिनट को भी ओझल नहीं होने देना चाहती।"

राजकुमार को तो वह लड़की अच्छी लगने लगी थी सो उसने उसकी बात मान ली। वह लड़की ऊपर आ गयी और राजा के बेटे ने उससे शादी कर ली। वह सुनहरे सींगों वाला बछड़ा भी उनके साथ ही रहता रहा। वे तीनों अब एक साथ ही रहते थे।

इस बीच बच्चों का किसान पिता घर आया तो अपने बच्चों को घर में न देख कर बहुत दुखी हुआ।

एक दिन अपना दुख भुलाने के लिये वह सौंफ[108] इकट्ठा करने के लिये निकल पड़ा और चलते चलते समुद्र के किनारे उसी जगह पहुँच गया जहाँ उसको उसी राजा का मकान दिखायी दे गया जहाँ उसकी बेटी रहती थी।

वहाँ उस मकान की खिड़की पर उसकी बेटी खड़ी थी। बेटी ने अपने पिता को पहचान लिया और वहाँ से पुकारा — "अन्दर

[108] Translate for the word "Fennel Seed". See the picture of its plant above.

आइये जनाब।” सो उस लड़की का पिता उस मकान के अन्दर चला गया।

लड़की ने पूछा — “आपने मुझे पहचाना नहीं?”

पिता बोला — “सच कहूँ तो मुझे तुम जानी पहचानी लगती हो पर मैं तुम्हें पहचान नहीं पा रहा हूँ।”

लड़की बोली — “पिता जी मैं आपकी बेटी हूँ।”

और वे दोनों एक दूसरे से लिपट गये। फिर उसने अपने पिता को बताया कि किस तरह उसका भाई एक बछड़ा बन गया था और किस तरह उसने एक राजा के बेटे से शादी कर ली थी।

पिता अपनी बेटी के बारे में जान कर बहुत खुश हुआ क्योंकि उसने तो यह सोच ही लिया था कि उसकी बेटी मर गयी है पर वह तो ज़िन्दा थी और उसको तो इतना अच्छा दुलहा भी मिल गया था। उसको इस बात की भी खुशी थी कि उसका बेटा भी ज़िन्दा था चाहे वह एक छोटे बछड़े के रूप में ही था।

लड़की बोली — “पिता जी अब आप अपना सौंफ का थैला यहाँ खाली कर दीजिये मैं इसको पैसों से भर देती हूँ।”

पिता बोला — “भगवान जानता है कि तुम्हारी सौतेली माँ इसको देख कर कितनी खुश होगी।”

बेटी ने कहा — “पिता जी उनसे कहना कि वह भी अपनी बेटी के साथ यहीं आ कर रहें।”

पिता ने कहा “ठीक है” और पैसा ले कर घर लौट आया।

उसकी पत्नी ने वह थैला खोलते हुए आश्चर्य से पूछा — “अरे तुमको यह थैला किसने दिया?”

पिता ने कहा — “क्या तुम विश्वास करोगी कि मुझे अपनी बेटी मिल गयी। उसकी शादी एक राजकुमार से हो गयी है। वह चाहती है कि हम सब भी वहीं जा कर रहें – मैं, तुम और तुम्हारी बेटी।”

यह सुन कर कि उसकी सौतेली बेटी अभी भी ज़िन्दा थी उस स्त्री को बहुत गुस्सा आया पर अपने गुस्से को छिपाते हुए वह बोली — “यह तो बहुत ही अच्छी खबर है। मैं उससे जल्दी से जल्दी मिलना चाहती हूँ।”

सो पिता तो वहाँ का हिसाब किताब देखने के लिये रुक गया और वह सौतेली माँ और उसकी बेटी दोनों राजकुमार के घर चल दीं। पति की पहली पत्नी की बेटी ने उन दोनों का स्वागत किया और उनको वहाँ आराम से ठहराया।

एक दिन जब राजकुमार बाहर गया हुआ था और जब उसकी सौतेली बेटी अकेली थी तो उसने उसको खिड़की के बाहर फेंक दिया। उस खिड़की के नीचे समुद्र था।

फिर उस सौतेली माँ ने अपनी बेटी को अपनी सौतेली बेटी के कपड़े पहना कर तैयार किया और उससे कहा — “जब राजकुमार आये तो तुम रोना शुरू कर देना और कहना कि सुनहरे सींगों वाले

बछड़े ने मेरी एक ऑख में अपना सींग मार दिया और इस वजह से मैं अब एक ऑख से देख नहीं सकती।"

यह सब उसको समझा कर वह अपने घर वापस चली गयी और अपनी बेटी को उसी के हाल पर छोड़ गयी।

राजकुमार जब घर वापस आया तो उसने अपनी पत्नी को बिस्तर पर लेटे रोते पाया तो उसने उससे पूछा — "अरे तुम रो क्यों रही हो?"

"ऊॅ ऊॅ ऊॅ ऊॅ। उस सुनहरे सींगों वाले बछड़े ने अपने सींग से मेरी एक ऑख फोड़ दी है।"

राजकुमार तुरन्त चिल्लाया — "किसी कसाई को बुलवाओ और उससे कहो कि वह उस बछड़े को काट डाले।"

यह सुन कर वह छोटा बछड़ा उस खिड़की की तरफ भागा जो समुद्र की तरफ खुलती थी और बोला —

जीजी ओ जीजी। वे चाकू तेज़ कर रहे हैं मुझे मारने के लिये
वे कटोरा भी तैयार कर रहे हैं जैसे कि मेरा खून पीना ही उनका उद्देश्य है

समुद्र से जवाब आया —

तुम बेकार ही रो रहे हो भैया मैं तो एक व्हेल के अन्दर हूॅ

यह कसाई ने भी सुना तो वह तो डर गया। उसने पहले कभी किसी बछड़े को इस तरह बोलते नहीं सुना था। उससे उस बछड़े को

नहीं काटा गया। उसने राजकुमार से कहा — "मैजेस्टी, ज़रा यहाँ आइये और सुनिये यह बछड़ा क्या कह रहा है।"

राजकुमार वहाँ आया और उसने भी सुना —

जीजी ओ जीजी। वे चाकू तेज़ कर रहे हैं मुझे मारने के लिये
वे कटोरा भी तैयार कर रहे हैं जैसे कि मेरा खून पीना ही उनका उद्देश्य है

समुद्र से फिर वही जवाब आया —

तुम बेकार ही रो रहे हो भैया मैं तो एक व्हेल के अन्दर हूँ

राजकुमार ने तुरन्त ही अपने दो नाविकों को बुलाया और समुद में व्हेल ढूँढने के लिये भेजा। उनको व्हेल मिल गया तो उन्होंने उसका पेट फाड़ कर उस लड़की को सुरक्षित निकाल लिया।

राजकुमारी की सौतेली माँ और सौतेली बहिन को जेल में डाल दिया गया। बछड़े के लिये उन्होंने एक परी को बुलाया जिसने उसको एक सुन्दर नौजवान में बदल दिया।

क्योंकि इस बीच तो वह बड़ा भी हो चुका था तो वह एक सुन्दर नौजवान बन गया था। फिर सब एक साथ खुशी खुशी रहने लगे।

18 कप्तान और जनरल[109]

एक बार की बात है कि इटली के सिसिली टापू पर एक राजा रहता था जिसके एक ही बेटा था। इस राजकुमार की शादी राजकुमारी टैरेसीना[110] से हुई थी।

जब उनकी शादी का जश्न खत्म हो गया तो राजकुमार एक कमरे में बहुत दुखी और चिन्ता में बैठ गया। उसकी पत्नी ने पूछा — "क्या बात है आप इतने दुखी और चिन्तित क्यों हैं?"

राजकुमार बोला — "प्रिय टैरेसीना, मैं सोच रहा था कि हम लोगों को एक कसम खानी चाहिये कि हममें से जो कोई भी पहले मरे दूसरा उसको उसकी कब्र में तीन दिन और तीन रात तक उसे जगाये।"

टैरेसीना बोली — "अरे बस इतनी सी बात है जो आपको परेशान कर रही है?"

उसने तुरन्त राजकुमार की तलवार उठायी और दोनों ने उसकी मूठ पर बने क्रास को चूम कर यह कसम खायी — "हममें से जो कोई भी पहले मरे दूसरा उसको उसकी कब्र में तीन दिन और तीन रात तक उसे जगाये।"

[109] The Captain and the General. Tale No 179. A folktale from Italy from its Province of Agrigento.
[110] Princess Teresina

एक साल बाद राजकुमारी टैरेसीना बीमार पड़ गयी और मर गयी। राजकुमार ने उसको बड़ी शानो शौकत के साथ दफनाया।

उस रात उसने अपनी तलवार उठायी, दो पिस्तौल लीं और सोने चाँदी के सिक्कों से भरा एक थैला ले कर चर्च चला गया। वहाँ उसने चर्च के रखवाले को कहा कि वह उसको राजकुमारी की कब्र में उतार दे।

उसने चर्च के रखवाले से यह भी कहा — "आज से तीन दिन बाद तुम यहाँ आना और कब्र में से कोई आवाज सुनना। अगर मैं खटखटाऊँ तो तुम कब्र खोल देना और अगर रात होने तक मैं न खटखटाऊँ तो समझ लेना कि मैं फिर कभी वापस नहीं आऊँगा।"

फिर उसने उस चर्च के रखवाले को उसके इस काम के लिये सौ क्राउन[111] दिये और कब्र में अन्दर चला गया। चर्च के रखवाले ने कब्र ऊपर से बन्द कर दी।

जब वह कब्र में बन्द हो गया तो उसने ताबूत खोला तो अपनी पत्नी की लाश देख कर रो पड़ा। वह वहाँ रात भर रोता रहा। उसकी पहली रात वहाँ इस तरह गुजरी।

दूसरी रात को उसे उस कब्र के पीछे की तरफ एक साँप के फुंकार मारने की आवाज सुनायी दी और एक बड़ा और भयानक साँप वहाँ निकल आया। उसके पीछे उसके कुछ बच्चे साँप भी थे।

[111] The then currency in Italy.

उस साँप ने मुँह खोल कर उसकी पत्नी को काटने की कोशिश की पर राजकुमार ने अपनी पिस्तौल उसकी तरफ कर के उसके ऊपर गोली चला दी।

पिस्तौल की गोली से बड़ा साँप तो मर गया पर उसकी गोली चलने की आवाज सुन कर बच्चे साँप भाग गये। राजकुमार बड़े मरे हुए साँप के साथ वहीं कब्र में ही रहा।

कुछ देर में ही वे बच्चे साँप अपने अपने मुँहों में कुछ घास की पत्तियाँ ले कर वापस आ गये। वे सब उस मरे हुए साँप को चारों तरफ से घेर कर उसके घावों पर वह घास की पत्तियाँ फेरने लगे। उन्होंने घास की कुछ पत्तियाँ उसके मुँह में रखीं, कुछ उसकी आँखों पर रखीं और कुछ उसके शरीर पर मलीं।

कुछ ही पल में उस मरे हुए साँप ने आँखें खोल दीं। वह कुछ हिला डुला और फिर से वैसा ही हो गया जैसा मरने से पहले था। वह तो एक बार फिर से जी गया था। ज़िन्दा हो कर वह साँप और उसके बच्चे वहाँ से भाग गये।

अपनी लायी हुई घास वे बच्चे वहीं छोड़ गये थे। राजकुमार ने तुरन्त ही वह घास उठा ली और उसने भी उसमें से कुछ घास अपनी पत्नी के मुँह में रखी और कुछ उसके शरीर पर बिखेर दी।

लो, उसकी तो साँस वापस आने लगी। उसके चेहरे का रंग भी वापस आ गया। वह उठ बैठी और बोली — "ओह, मैं इतनी देर तक कैसे सोती रही।"

खुशी के मारे राजकुमार ने उसको गले लगा लिया और फिर तुरन्त ही उन्होंने उस छेद को ढूँढना शुरू किया जिसमें वे सॉप गायब हो गये थे। वह छेद इतना बड़ा था कि वे दोनों उसके अन्दर जा सकते थे सो दोनों उस छेद के अन्दर घुस गये।

दूसरी तरफ वे उस सॉप घास वाले मैदान में निकल आये जिसमें वे सॉप गायब हुए थे। राजकुमार ने उस मैदान में से बहुत सारी घास तोड़ ली और उसको ले कर वे दोनों घर वापस आ गये। फिर वे पेरिस[112] चले गये और वहॉ नदी के किनारे एक महल किराये पर ले कर रहने लगे।

कुछ समय बाद राजकुमार ने एक सौदागर बनने का निश्चय किया। उसने अपनी पत्नी को एक अच्छे आचार विचार वाली स्त्री के पास छोड़ा जो उसकी उसके घर के कामों में सहायता कर सके। फिर उसने एक जहाज़ खरीदा और व्यापार के लिये चल दिया।

उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह एक महीने में लौट आयेगा और अपने आने की सूचना देने के लिये वह तीन खाली तोप छोड़ेगा।

जैसे ही राजकुमार वहॉ से गया नैपिल्स[113] की सेना का एक कप्तान सड़क पर जा रहा था कि उसने टैरसीना को खिड़की पर

[112] Paris is the capital of France, a European country.
[113] Naples is a historical port city on the South-Western coast of Italy

खड़े देखा। उसने टैरेसीना से बात करनी चाही पर टैरेसीना वहाँ से चली गयी।

यह देख कर कप्तान ने एक बुढ़िया को बुलाया और उससे कहा — “मैम, अगर आप मुझे उस प्यारी सी लड़की से मिलवा दें जो इस महल में रहती है तो मैं आपको दो सौ क्राउन दूँगा।”

वह बुढ़िया टैरेसीना के महल में गयी और उससे सहायता माँगी कि कुछ लोग उसका सामान छीनना चाहते थे।

उसने कहा — “मेरे पास सामान से भरी एक आलमारी है और वे उसको ले लेना चाहते हैं। क्या आप मेरे ऊपर इतनी दया करेंगी कि आप उसको अपने पास रख लें?”

टैरेसीना राजी हो गयी। बुढ़िया तीन आलमारियाँ उसके पास ले आयी और टैरेसीना ने उनको अपने महल में रख लिया।

रात को उन आलमारियों में से एक आलमारी में से कप्तान निकला, टैरेसीना को पकड़ा और अपने जहाज़ पर ले गया। वे नैपिल्स चले गये जहाँ टैरेसीना अपने पति को भूल कर कप्तान के साथ उसकी पत्नी की तरह से रहने लगी।

एक महीने बाद राजकुमार का जहाज़ नदी में वापस आया तो उसने अपने आने की खबर देने के लिये तीन खाली तोपें चलायीं। पर उसको अपने महल के छज्जे पर अपनी पत्नी दिखायी नहीं दी। उसका घर भी खाली पड़ा था और वहाँ उसका कोई निशान भी नहीं था।

राजकुमार ने अपना सब कुछ बेच दिया और दुनियाँ भर में घूमता फिरा। आखीर में वह नैपिल्स आया और वहाँ एक सिपाही की नौकरी करने लगा।

एक दिन वहाँ के राजा ने सेना की एक बहुत ही शानदार परेड का इन्तजाम किया जिसमें सब सिपाहियों को हिस्सा लेना था। उसी में वह कप्तान भी अपनी पत्नी साथ चल रहा था जो टैरैसीना को ले कर आया था।

सिपाही बने राजकुमार ने टैरैसीना को पहचान लिया और टैरैसीना ने सिपाही बने राजकुमार को पहचान लिया। टैरैसीना ने कप्तान से कहा — "देखो, उन सिपाहियों में वह मेरे पति हैं। अब मैं क्या करूँ।"

कप्तान ने उस सिपाही की तरफ इशारा करते हुए अपनी पत्नी से कहा — "हाँ यह सिपाही मेरे साथ था और अभी अभी उसकी तरक्की हुई है।"

कप्तान ने उसको और कई और लोगों को अपने घर खाने के लिये बुलाया जिसमें टैरैसीना नहीं आयी। जब वे खाना खा रहे थे तो कप्तान ने एक चाँदी का चाकू और काँटा राजकुमार की जेब में रख दिया।

कुछ देर बाद एक चाकू और काँटा कम पाया गया तो उसकी खोज शुरू हुई। खोज करने पर वह उस सिपाही की जेब में पाया

गया। उसका कोर्ट मार्शल हो गया और उसको बन्दूक से गोली मार कर मारने की सजा सुना दी गयी।

जो सिपाही उसको मारने वाले थे उनमें से एक सिपाही उसका दोस्त था। उसने अपने उस दोस्त को थोड़ी सी घास दी और कहा — जब तुम मुझ पर गोली चलाओ तो बहुत सारा धुँआ बनाने की कोशिश करना। जब दूसरे सिपाही अपने कन्धे पर बन्दूक रख कर जा रहे हों तो तुम यह थोड़ी सी घास मेरे मुँह में और मेरे घावों पर रख देना और मुझे छोड़ कर चले जाना।"

समय पर उस पर गोली चलायी गयी। उसके दोस्त ने काफी सारा धुँआ छोड़ा और उस धुँए की आड़ में उसने अपने दोस्त सिपाही के मुँह में और घावों पर थोड़ी थोड़ी घास रख दी। कुछ ही देर में राजकुमार ज़िन्दा हो गया और वहाँ से उठ कर भाग गया।

इधर नैपिल्स के राजा की बेटी कुछ दिनों से इतनी बीमार थी कि बस मरने वाली थी। कोई भी डाक्टर उसके लिये कुछ भी नहीं कर पा रहा था।

राजा ने अपने पूरे राज्य में यह घोषणा करवा दी थी कि "जो कोई भी मेरी बेटी को ठीक करेगा अगर वह कुआँरा होगा तो मैं अपनी बेटी की शादी उससे कर दूँगा और अगर वह शादीशुदा होगा तो फिर मैं उसको राजकुमार बना दूँगा।"

यह घोषणा सुन कर राजकुमार ने एक डाक्टर का वेश रखा, अपनी थोड़ी सी घास उठायी और शाही महल चल दिया। वहाँ

उसने एक बहुत बड़ा कमरा जिसमें बहुत सारे डाक्टर बैठे थे पार किया और राजा की बीमार बेटी के पास पहुँच गया। तभी तभी उसने अपने आखिरी साँस ली थी।

राजकुमार ने राजा से कहा — "मैजेस्टी, आपकी बेटी तो अब मर ही गयी है पर मेरे पास इसको जिलाने का अभी भी एक तरीका है अगर आप मुझे इसके साथ अकेला छोड़ दें तो।"

उसको वहाँ अकेला छोड़ दिया गया। उसने थोड़ी सी घास उस राजकुमारी के मुँह और नाक में रखी तो उसने फिर से साँस लेना शुरू कर दिया और कुछ ही पल में वह बिल्कुल ठीक हो गयी।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ और बोला — "डाक्टर अब तुम मेरे दामाद[114] हो।"

राजकुमार बोला — "मुझे अफसोस है राजा साहब कि मैं आपका दामाद नहीं बन सकता मैं पहले से ही शादीशुदा हूँ।"

"तो फिर तुम्हें क्या चाहिये?"

"मैं आपकी सारी सेना का जनरल कमान्डर बनना चाहता हूँ।"

"ठीक है।" और राजा ने दो शानदार मौके मनाने का हुक्म दे दिया। पहला तो अपनी बेटी के ज़िन्दा होने का और दूसरा नये जनरल की नियुक्ति का।

इस मौके पर उसने अपने सब कप्तानों को बुलाया तो वह कप्तान भी आया जिसने उस राजकुमार की पत्नी को भगा लिया

114 Translated for the word "Son-in-Law".

था। अब यह जनरल भी सोने के चाकू और काँटे कप्तान की जेब में रखना नहीं भूला और इस चोरी की वजह से कप्तान को जेल में डाल दिया गया।

जनरल उस कप्तान से पूछने गया — "तुम अकेले हो या शादीशुदा?"

कप्तान बोला — "जनरल साहब, अगर मैं सच कहूं तो मैं शादीशुदा नहीं हूँ। मैं तो अकेला ही हूँ।"

"फिर वह स्त्री कौन है जो उस दिन तुम्हारे साथ थी?"

उसी पल दो सिपाही उस स्त्री को भी हथकड़ी पहना कर वहाँ ले आये जो उस कप्तान के साथ रह रही थी। वह आते ही चिल्लायी — "नहीं नहीं इस कप्तान ने तो मुझे मेरे महल से भगा लिया था। मैं तो आपको कभी भूली ही नहीं थी।"

पर उसकी ये सब बातें बेकार गयीं। जनरल ने उन दोनों को कीचड़ में लपेटने और फिर जला कर मार डालने का हुकुम दे दिया। कई बार अदालत में पेश होने के बाद वह पूरी सेना का जनरल कमान्डर घोषित कर दिया गया।

List of Stories of “Folktales of Italy-1”

1. Dauntless Little John
2. The Ship With Three Decks
3. The Man Who Came Out Only at Night
4. And Seven
5. Body Without Soul
6. Money Can Do Everything
7. The Little Shepherd
8. The Little Girl Sold With the Pears
9. The Snake
10. Three Castles
11. The Prince Who Married a Frog
12. The Parrot
13. Twelve Bulls
14. Crack and Crook
15. The Canary Prince
16. King Krin
17. Those Stubborn Souls
18. The Pot of Marjoram
19. The Billiard's Player
20. Animal Speech

List of Stories of “Folktales of Italy-2”

1. The Three Cottages
2. The Peasant Astrologer
3. The Wolf and the Three Girls
4. The Land Where One Never Dies
5. The Devotee of St Joseph
6. Three Crones
7. The Crab Prince
8. Silent For Seven Years
9. Pome and Peel
10. Cloven Youth
11. The Happy Man's Shirt
12. One Night in Paradise
13. Jesus and Saint Peterin Friuli
14. The Magic Ring
15. The King's Daughter Who Could Never Get Figs
16. The Three Dogs
17. Uncle Wolf

18. The King of Animals
19. Dear As Salt
20. The Queen of the Three Mountains of Gold

List of Stories of “Folktales of Italy-3”

1. The Dragon With Seven Heads
2. The Sleeping Queen
3. The Son of the Merchant from Milan
4. Salmanna Grapes
5. Enchanted Castle
6. The Old Woman's Hide
7. Olive
8. Catherine Sly Country Lass
9. The Daughter of the Sun
10. The Golden Ball
11. The Milkmaid Queen

List of Stories of “Folktales of Italy-4”

1. The North Wind's Gifts
2. The Sorceror's Head
3. Apple Girl
4. The Palace of the Doomed Queen
5. Fourteen
6. Crystal Rooster
7. A Boat For Land and Water
8. Louse Hide
9. The Love of the Three Pomegranates
10. The Mangy One
11. Three Blind Queens
12. One Eye
13. False Grandmother
14. Shining Fish
15. Miss North Wind and Mr Zephir
16. The Palace Mouse and the Field Mouse
17. Crack, Crook and Hook
18. First Sword and the Last Broom
19. Mrs Fox and Mr Wolf
20. The Five Scapegraces
21. The Tale of the Cats
22. Chick

List of Stories of “Folktales of Italy-5”

1. The Princesses Wed to the First Passer By
2. The Thirteen Bandits
3. Three Orphans
4. Sleeping Beauty and Her Children
5. Three Chicory Gatherers
6. Beauty With the Seven Dresses
7. Serpent King
8. The Crab With the Golden Eggs
9. Nick Fish
10. Misfortune
11. Pippina Serpent
12. Catherine the Wise
13. Ismailian merchant
14. The Dove
15. Dealer in Peas and Beans
16. The Sultan With the Itch

List of Stories of “Folktales of Italy-6”

1. The Wife Who Lived on Wind
2. Wormwood
3. The King of Spain and the Engkish Milird
4. The Bejeweled Boot
5. Lame Devil
6. Three Tales by Three Sons of Three Merchants
7. The Dove Girl
8. Jesus and St Peter in Sicily
9. The Barber's Timepiece
10. The Marriage of a Queen and a Bandit
11. The Seven Lamb Heads
12. The Two Sea Merchants
13. A Boat Loded With…
14. The King's Son in Henhouse
15. The Mincing Princess
16. Animal Talk and the Nosy Wife
17. The Calf With the Golden Horns
18. The Captain and The General

List of Stories of “Folktales of Italy-7”

1. The Peacock Feather
2. The Garden Witch
3. The Mouse With the Long Tail
4. The Two Cousins
5. The Two Muleteers
6. Giovannuza Fox
7. The Child Who Fed the Crucifix
8. The Princess With Horns
9. Giufa
10. Fra Ignazio
11. Solomon's Advice
12. The Man Who Robbed the Robbers
13. The Lion's Grass
14. The Convent of Nuns and the Monastery of Monks
15. St Anthony's Gift
16. March and the Shepherd
17. John Balento
18. Jump into My Sack

Some Other Books of Italian Folktales in Hindi

1353 **Il Decamerone.** By Giovanni Boccaccio. 3 vols
1550 **Nights of Straparola** By Giovanni Francesco Straparola. 2 vols.
1634 **Il Pentamerone.** By Giambattista Basile. 50 tales. 3 vols
1885 **Italian Popular Tales.** By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 vols

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022